Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बच्चों के रोग और उनका इलाज

1871

कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय

A... Dr. Gaur ... Collection, Noida

बच्चों के रोग और उनका इलाज

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लेखक

कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय

आयुर्वेद विशारद, आयुर्वेद वाचस्पति M. Sc. (A)

साहित्य महोपाध्याय (आयुर्वेद)

प्रकाशक

महेन्द्र रसायनशाला

२५, नया ममफोर्ड गंज

इलाहाबाद—२

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दो शब्द

बच्चे राष्ट्र के आधार-स्तम्भ होते हैं। जो आज बच्चे हैं कल उन्हीं के कन्धे पर राष्ट्र सँभालने की जिम्मेदारियाँ आती हैं। किसी राष्ट्र का उत्थान उसकी सन्तानों पर निर्भर करता है। अतः बच्चों के पालन-पोषण और उनकी स्वास्थ्य रक्षा की जिम्मेदारी बहुत बड़ी चीज समझी जाती है। समुचित रीति से उनका पालन-पोषण करना जितना आवश्यक है उससे कहीं अधिक आवश्यक है उनके अस्वस्थ होने पर उनकी सँभाल करना, उनकी परिचर्या और चिकित्सा करना। हमारे देश के माता-पिता इस दिशा में बहुत अनभिज्ञ हैं। एक तो यहाँ अभी समुचित रूप से शिक्षा का प्रचार नहीं है दूसरे उस कला या विद्या के प्रचार का साधन भी नहीं है। इस विषय पर हिन्दी में अच्छी पुस्तकों का नितान्त अभाव है। दूसरी बात है गलत ढंग के इलाज की। शहरों के बच्चों की चिकित्सा अधिकांशतः एलोपैथी पद्धति से होती है। एलोपैथी पद्धति से रोग प्रायः दबाये जाते हैं, लक्षण दबाये जाते हैं, शरीर से दोष और विकार बाहर नहीं निकाले जाते। दूसरे एलोपैथी की औषधियाँ प्रायः विषैली होती हैं इस प्रकार बचपन से ही बच्चों का शरीर दोष-पूर्ण—विकार से भरा—बनाया जाता है और बच्चों को अस्वस्थ, कमजोर, जीवनी शक्ति से हीन बनाया जाता है। आगे चलकर इनमें अनेक भयानक रोग उत्पन्न होते हैं। सन्तान कमजोर होती है और मृत्यु-संख्या भी अधिक होती है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा बच्चों के रोग दूर करने का सरल मार्ग बताया गया है। इस विधि से रोग दबाया नहीं जाता बल्कि जीवनी शक्ति बढ़ती है और सब विकार शरीर से बाहर निकल जाते हैं और रोग की जड़ कट जाती है और रोग-निवारक शक्ति सबल होती है। इसको आयुर्वेद की भाषा में पथ्य-पालन कहते हैं। यही चिकित्सा का मूलमंत्र है। इस पुस्तक में कुछ आयुर्वेदीय औषधियाँ भी दी गई हैं जो सम्पूर्ण रूप से

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

निर्दोष और लाभदायक हैं। यत्र-तत्र एलोपैथी चिकित्सा का भी संकेत है जिसमें विषय का ज्ञान समुचित रूप से हो सके। बच्चों की जीवन-रक्षा में यह पुस्तक बड़ी लाभदायक सिद्ध होगी ऐसा हमारा विश्वास है।

प्रस्तुत पुस्तक अपने विषय की हिन्दी में पहली ही है। हमें आशा है इस पुस्तक का भी आदर जनता में उसी प्रकार होगा जिस प्रकार हमारी अन्य पुस्तकों का हुआ है।

इस पुस्तक का वर्तमान संस्करण पूर्ण रूप से संशोधित करके छापा गया है और इसमें चिकित्सा बढ़ा दी गई है। प्राकृतिक चिकित्सा का सहारा लेकर थोड़ी मात्रा में औषधि देने से रोग जल्द निर्मूल होता है यह हमने अपनी ४५ वर्ष की चिकित्सा की अवधि में ठीक-ठीक जाँचा है।

जो लोग इस पुस्तक की सहायता से चिकित्सा करना चाहें उन्हें पुस्तक कई बार आदि से अन्त तक अच्छी तरह पढ़ लेना चाहिए। जब विषय अच्छी तरह समझ में आ जाय तब इलाज करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर अच्छे चिकित्सक से परामर्श लेना अच्छा है। क्योंकि कोई भी पुस्तक अच्छे चिकित्सक का स्थान नहीं प्राप्त कर सकती।

यह पुस्तक यों तो पूर्ण रूप से स्वतंत्र है और विषय भी सम्पूर्ण सा है। परन्तु यह पुस्तक "अपूर्व चिकित्सा विधान" का बाल-चिकित्सा खण्ड है।

महेन्द्रनाथ पाण्डेय

महेन्द्र रसायनशाला,
२५, नया ममफोर्ड गंज
इलाहाबाद—२

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

विषय सूची

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१—विषय-प्रवेश		७-१५
	माता की जानकारी १२, रोगी बच्चों की पहचान १२, न बोलनेवाले बालकों के रोगों को पहचानने की तरकीबें १२, बच्चों के लिए पथ्यव्यवस्था १४, बच्चों के लिए औषधि की मात्रा १५	
२—ज्वर-चिकित्सा		१६-५८
	ज्वर वर्णन १६, ज्वर के भेद १७, ज्वर-चिकित्सा का संक्षिप्त सारांश १७, वात-ज्वर १८, पित्त-ज्वर, १८, कफ-ज्वर २१, वात-पित्त ज्वर २१, वात-कफ ज्वर २२, पित्त-कफ ज्वर २३, सन्निपात ज्वर २३, अष्टांगावलेह २६, उपवास २७, रस-प्रयोग २७, आगन्तुक ज्वर २८, विषम ज्वर २९, निम्बादि चूर्ण ३१, आन्त्रिक ज्वर—टाइफाइड फीवर ३२, मसूरिका ३५, चेचक ३८, चिकेन पाक्स ३९, स्माल पाक्स ३९, मीजिल्स ४०, डिफथीरिया ४५, स्कारलेट फीवर ५२, मम्प्स ५४, रियुमेटिक फीवर ५७	
३—आमाशय और आँतों के रोग		५९-७१
	अजीर्ण ५९, पेट का दर्द ६०, कब्ज ६१, अतीसार ६४, छूतदार अतीसार ६५, कोलाइटिस ६५, पेचिश ६८, वमन ६९	
४—हृदय-फेफड़े और गले के रोग		७२-८९
	ब्रोंकाइटिस ७२, सर्दी-जुकाम ७४, क्रूप ७६, टानसिल ७७, एडिन्वायड ७८, हृदय के रोग ८२, प्लूरिसी ८३, निमोनिया ८४, हूपिंग कफ—कुकुर खाँसी ८६	
५—त्वचा के रोग		९०-९४
	एकजीमा—उकवत ९०, दाद (रिंगवर्म) ९२ विसर्प ९३	

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय	विषय	पृष्ठ
६—वात-नाड़ी सम्बन्धी रोग		९५-१०३
	कनवलशन (ऐंठन) ९५, इनफैन्टाइल परालिसिस (बच्चों का लकवा) ९७, मेनिन जाइटिस १००, ट्यूवर कुलर मेनिन जाइटिस १०१, विट्सडांस १०२	
७—अपूर्ण पोषण के रोग		१०४-११५
	रिकेट्स—अस्थि दौर्बल्य १०४, फक्करोग १०७, स्कर्वी ११२	
८—विभिन्न प्रकार के रोग		११६-१३५
	सोते समय पेशाव करना ११६, क्रिमिरोग ११७, दाँत निकलते समय के रोग १२१, दूध डालना १२५, यकृत (लिवर) १२५, दाँत किटकिटाना १२९, नाभिपाक १२९, गुदापाक १३०, तुण्डी १३१, मुखस्राव और मुखपाक १३१, सूखा रोग (मराजमस) १३२	
९—आयुर्वेदीय मत से बच्चों के रोग		१३६-१५९
	दूध विकृति १३६, तालुकण्टक १३८, तालुपात १३९, महापद्म विसर्प १३९, पारिगर्भिक १४० कुकूणक १४१, अजगल्लिका १४३, अहिपूतना १४३, व्रण पश्चातक १४४, गुदभ्रंश—काँच निकलना १४४, आँख उठना १४७, पोथकी १४८, मूत्राघात १४८, वालकों का रात को रोना और डरना १४८, तालुपाक १४९, ग्रहजुष्ट १४९, कौआ लटकना १५२, तृष्णा १५३, कानकी खूंट १५४, कर्णशूल १५५, कान बहना १५६, कान के वाहर घाव १५८, खाज १५८, अँधौरी १५९	
१०—बच्चों के चन्द रोगों की औषधियाँ		१६०-१६२

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बच्चों के रोग और उनका इलाज

अध्याय १

विषय-प्रवेश

आधुनिक सभ्य संसार अपने देश के बच्चों और नवयुवकों को स्वस्थ और सबल बनाने में अत्यधिक संलग्न है। यह स्वाभाविक ही है। स्वतन्त्र होने के बाद हमारे देश में भी स्वास्थ्य-चर्चा हो रही है इस सम्बन्ध में कुछ कार्य भी हुआ है। राष्ट्रोत्थान में बच्चों का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। वे ही हमारे भविष्य के महल की नींव हैं। यदि नींव कमजोर हो तो उस पर टिकाऊ महल नहीं खड़ा हो सकता। उसी प्रकार सन्तान के निर्बल होने पर, अन्य सब बातों में समृद्ध होने पर भी, कोई राष्ट्र न तो सबल हो सकता है और न उन्नत ही। अतः शक्तिशाली नींव का निर्माण करना ही बुद्धिमानी है। बच्चों को सबल, सशक्त, दीर्घजीवी, एवं नीरोग बनाना सर्वप्रथम आवश्यक है।

इस दिशा में सबसे अधिक जिम्मेदारी माता-पिता की होती है। पिता से भी अधिक माता की। छोटे बच्चे तो बिलकुल ही नीरोग रह सकते हैं यदि माता सावधानी से पालन-पोषण करे। रोग ईश्वर की देन नहीं है, स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों के तोड़ने का निश्चित परिणाम है। बच्चों की तीन अवस्थाएँ होती हैं, एक केवल दूध पीकर रहनेवाले, यह अवस्था ९ मास तक की होती है। दूसरे दूध पीनेवाले और थोड़ा-बहुत अन्न खानेवाले, यह अवस्था २-३ साल तक रहती है; उसके बाद केवल अन्न खानेवाले बच्चे होते हैं। उनको जो दूध दिया जाता है वह लाभ अवश्य करता है परन्तु वह उनके जीवन धारण का मुख्य साधन नहीं होता। यों तो १४-१५ वर्ष की अवस्था तक—कुमारावस्था तक—के बालक बच्चे ही माने जाते हैं और उस अवस्था तक उनकी पूर्ण रूप से देख-रेख रखने की आवश्यकता होती है इस अवस्था तक रिकेट, स्कर्वी, रियुमेटिक फीवर, वातनाड़ी दौर्बल्य सम्बन्धी रोग होते हैं और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उनका सम्बन्ध वचपन से ही होता है तथा उनकी चिकित्सा भी बच्चों के समान ही करनी पड़ती है। यदि औषधि देने की व्यवस्था की जाती है तो उसकी मात्रा भी युवकों से कम रखी जाती है।

वस्तुतः रोग क्या है और नीरोगता क्या है यदि यह बात समझ ली जाय तथा इनका मुख्य कारण क्या है यह बात ठीक-ठीक समझ में आ जाय तो सारा मसला आसानी से समझ में आ सकता है। आयुर्वेद ने रोग की परिभाषा एक शब्द में यह बताई है कि दोषों का कुपित होना ही रोग है और दोषों का सम होना स्वास्थ्य है। अनेक प्रकार का अहित सेवन करने से दोष कुपित होते हैं। इस एक मात्र सिद्धान्त को आज तक एलोपैथी चिकित्सा ने स्वीकार नहीं किया। रोगों का कारण ढूँढ़ते-ढूँढ़ते अनेक प्रकार के कीटाणुओं का आविष्कार किया गया और मनुष्य को उसकी सारी जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया गया। सारी बुराइयों की जड़ इसी गलत सिद्धान्त पर निर्भर हो गई। आजकल का अधिकांश शिक्षित समुदाय इसी भ्रान्त धारणा को अपनाये हुए दुख शोक और चिन्ता मग्न हो रहा है और सारी जिम्मेदारियाँ रोगाणुओं के मत्थे मढ़कर अपनी कुछ भी जिम्मेदारी नहीं महसूस कर रहा है।

रोग के कारणों को जरा विस्तार से समझने की आवश्यकता है। हम जो कुछ खाते हैं उसका सार अंश रक्त वन जाता है और शेष फुजला मल वनकर वाहर निकल जाता है। यदि वह मल अन्दर रुक जाय तो सड़ता है और विषैला अंश शरीर में छोड़ता है। दूसरे हमारे शरीर में हर समय दहन-क्रिया होती है और इस क्रिया में कार्वन डाइ आक्साइड बनता है। इस विष को भी शरीर से निकालने का प्रबन्ध है। साँस के द्वारा हम आक्सीजन ग्रहण करते हैं और जब वाहर साँस फेंकते हैं तब कार्बन डाइ आक्साइड वाहर निकालते हैं और पसीना तथा मल द्वारा भी वहुत सा विष शरीर से वाहर निकलता है। पेशाव द्वारा भी यूरिक एसिड नामक विष शरीर से बाहर होता है इस मल निकालने वाली प्रणाली को मल-वहिष्करण प्रणाली कहते हैं।

हमारे रक्त का निर्माण हमारे भोजन पर अवलम्बित है। यदि हमारा भोजन सवल हो तो उससे वननेवाला रक्त भी सवल होगा और यदि भोजन निर्वल हो तो उससे वननेवाला रक्त भी निर्वल वनेगा। सवल रक्त वह

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कहलाता है जिसमें ८० प्रतिशत क्षार की मात्रा हो और २० प्रतिशत अम्ल की मात्रा हो। निर्बल रक्त वह कहलाता है जिसमें २० प्रतिशत से अधिक अम्लता हो और ८० प्रतिशत से कम क्षारता हो। यह क्षारता जितनी ही कम होती जायगी और अम्लता जितनी बढ़ती जायगी उतना ही रक्त अधिक निर्बल होता जायगा। उतने ही अधिक शरीर में रोग होंगे, शरीर की रोग-निवारक-शक्ति उतनी ही न्यून होगी।

संक्षेप में रोग के कारण ये हैं—(१) ऐसा भोजन जिसमें २० प्रतिशत से अधिक अम्लता बनानेवाले पदार्थ हों और अस्सी फीसदी से कम क्षार बनाने वाले पदार्थ हों, (२) शरीर की मल-बहिष्करण प्रणाली ठीक न हो और शरीर में विषैला अंश जमा होता जाय। ये ही दो मुख्य कारण हैं जो शरीर में रोग पैदा करते हैं।

इसी को आयुर्वेद में दोषों का बिगड़ना कहते हैं। मल-बहिष्करण प्रणाली के बिगड़ने से शरीर की सारी प्रणाली दूषित हो जाती है। शरीर के भीतरी यंत्र निर्बल, कमजोर और दूषित बन जाते हैं और शारीरिक क्रिया को सुचारु रूप से चलाने में रुकावट पड़ती है अथवा यह क्रिया सर्वथा बन्द सी हो जाती है।

हमारे देश में बच्चों का भोजन बहुत ही अव्यवस्थित है। माताएँ अशिक्षित और लापरवाह हैं। बच्चों के समुचित भोजन की ओर कम ध्यान दिया जाता है। यही कारण है कि बच्चे कमजोर, रोगी और अस्वस्थ होते हैं। वस्तुतः बच्चे अपने जन्म से पहले से ही अर्थात् माता के पेट में से ही दूषित और कमजोर भोजन पाते हैं यही कारण है कि जन्म के पहले से ही बच्चे का रक्त कमजोर और निर्बल हो जाता है।

माता का भोजन ऐसा होना चाहिए जो माता की स्वास्थ्य-रक्षा तो करे ही बच्चे को भी सम्पूर्ण तत्व पहुँचाने में समर्थ हो। जिन बच्चों को किसी कारण माता का दूध न मिल सके उन्हें गाय या बकरी का दूध उचित पानी एवं दूध की चीनी मिलाकर देना चाहिए। माता का दूध पीने वाले बच्चे को भी संतरे का रस ऊपर से अवश्य देना चाहिए और प्रत्येक चार घंटे पर दूध देना चाहिए। और दस बजे रात से ४ बजे सुबह तक बच्चे को दूध न पिलाया

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
जाय। जव भी मा का दूध पिलाना हो माता का स्तन धोकर पिलाना चाहिए। जो वच्चे गाय या वकरी के दूध पर पाले जायँ उनको भी संतरे का रस प्रति दिन अवश्य दिया जाय जिसमें उचित खनिज लवण और विटामिन प्राप्त होते रहें। हमारी राय में २ मास की अवस्था के वाद संतरे का रस अवश्य दिया जाना चाहिए। इससे कैलशियम एवं विटामिन वी और सी की प्राप्ति होती है।

एलोपैथ चिकित्सक भोजन देने में वड़ी गलती करते हैं। वे विलायती वने दूध जो डिब्बे में वन्द होकर आते हैं तथा कारखानों में तैयार अन्य वच्चों को दिये जानेवाले भोजनों की शिफारिश करते हैं। और अन्य दूसरे प्रकार के भोजन देने की व्यवस्था करते हैं। इसका फल यह होता है कि वच्चों को खनिज लवण और विटामिनों की प्राप्ति उचित रूप में नहीं होती और स्टार्च चीनी, प्रोटीन आदि वहुत अधिक मात्रा में मिलते हैं। इस गलत भोजन का परिणाम यह होता है कि वच्चा देखने में मोटा-ताजा होते हुए भी रोग-निवारक शक्ति से सर्वथा रहित होता है। ऐसे गलत भोजन पर पले वच्चे दाँत के निकलते समय के रोग, रिकेट, स्कर्वी, कोरिया, मीज़िल्स आदि अनेक भयानक रोगों से ग्रसित हो जाते हैं। इस समय अपने देश में भी वच्चों को दिये जाने वाले भोजन एवं दूध तैयार करने वाले कारखाने वन गये हैं।

अव एलोपैथ चिकित्सक भी मानने लगे हैं कि रिकेट या अस्थि-दौर्वल्य उन्हीं वच्चों को होता है जिनके भोजन में कैलशियम की कमी होती है। कैलशियम एक खनिज पदार्थ ही तो है जिसकी पूर्ति भोजन द्वारा हो जानी चाहिए। लेकिन अभी तक वे यह नहीं समझ पाये हैं कि केवल रिकेट ही नहीं सभी रोग ही खनिज लवणों और विटामिनों की कमी से होते हैं और इसके लिए एक मात्र उपाय यही है कि वच्चों को ऐसे भोजन की व्यवस्था की जाय जो प्राकृतिक हो, जिसमें खनिज लवण और सभी विटामिन मौजूद हों, भोजन वासी न हो, ताजा हो और समय पर ही भोजन दिया जाय।

हमारी राय में सभी रोग चाहे उनका नाम कुछ भी रखा जाय भोजन में मैदा, चीनी, चावल, धुली दाल, मांस, जलेवी, मिठाई, गुड़, चटनी, अचार, मुरव्वे, विसकुट, घी, मक्खन, वसा आदि के अत्यधिक व्यवहार के कारण
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
होते हैं। क्योंकि इनमें खनिज लवण और विटामिनों का अभाव होता है। ये भोजन एक ओर तो बहुत ही पौष्टिक होते हैं और दूसरी ओर हद दर्जे के दरिद्र। दरिद्र इस अर्थ में कि इनमें खनिज लवण और विटामिनों का प्रायः अभाव सा रहता है। इसे यों भी कह सकते हैं कि स्टार्च घी आदि की दृष्टि से पौष्टिक और खनिज लवण और विटामिनों की दृष्टि से दरिद्र।

प्रस्तुत पुस्तक का विषय भोजन नहीं है। इस विषय को हमने अपनी पुस्तक "हमारा भोजन" में विस्तार से लिखा है। बच्चों के भोजन के सम्बन्ध में हमने अपनी पुस्तक "हमारे बच्चे" में लिखा है। इन विषयों को वहीं देखना चाहिए। यहाँ तो हमने प्रसंग वश थोड़ी सी भोजन सम्बन्धी चर्चा, विषय को स्पष्ट करने के अभिप्राय से की है।

जब बच्चों को बार-बार दूध या भोजन दिया जाता है चाहे वह भोजन या दूध प्राकृतिक ही क्यों न हो उससे अपच होता है क्योंकि यहाँ अध्यशन है। अपच के कारण ही कब्ज, दस्त, अतीसार आदि रोग होते हैं। ये रोग अधिक और अनियमित खिलाने के रोग हैं। माता को अपनी परेशानी बचाने के लिए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चा नियमित समय पर ही खिलाया जाय। घर के सभी लोगों के साथ बैठकर खाने की आदत बच्चों के लिए बहुत ही हानिकारी है। माता-पिता बच्चों को अपनी थाली में खिलाने की आदत न डालें तो उनकी बहुत कुछ कठिनाइयाँ हल हो जायँ।

वस्तुतः जन्म के पहले ही जब वे गर्भ में रहते हैं तभी से उनके शरीर पर माता के भोजन का प्रभाव पड़ता है और दूषित और अपूर्ण भोजन के कारण उनका शरीर ठीक-ठीक बढ़ता नहीं तथा अस्थियाँ दुर्बल और कमजोर हो जाती हैं और उनकी बढ़वार रुक जाती है। गर्भावस्था में और दूध पिलाने की अवस्था तक माताओं का भोजन प्रायः सदोष ही रहता है। वे अचार, चटनी, खटाई, मिर्चा, मसाला, गुड़, चीनी, मैदा, मशीन का छँटा चावल, मांस, मछली, घी और धोई दाल आदि बहुत खातीं हैं। यही चीजें उन्हें पसंद भी हैं। ये सब चीजें रक्त में अम्लता पैदा करतीं हैं, इनमें खनिज लवणों और विटामिनों का अभाव रहता है। इस प्रकार का भोजन एक ओर तो खनिज लवणों से रहित होता है दूसरी ओर इनमें रक्त की अम्लता बढ़ानेवाली चीजें
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अधिक मात्रा में रहती हैं। ऐसे भोजन से बना दूध, पूर्णरूप से स्वास्थ्यकर नहीं होता, रोग उत्पन्न कर देनेवाला होता है।

माता की जानकारी

रोगी होने पर बच्चा अकसर रोता है। यदि रात को उसे नींद न आवे तो समझना चाहिए कि किसी न किसी प्रकार बच्चा अस्वस्थ है। लेकिन रोग के अतिरिक्त अन्य कारणों से भी बच्चा रो सकता है। सावधान माता को बच्चे के रोने के कारण का पता लगाना चाहिए। कभी-कभी बच्चा भूख के कारण रोता है। जब बच्चा चाहता है कि वह अपनी असुविधा की ओर माँ का ध्यान आकर्षित करे तब भी रोता है। कभी-कभी एक करवट पड़े रहने में उसे कष्ट होने लगता है और करवट बदलने के लिए वह रोने लगता है। यदि बच्चा बिस्तरे पर पेशाब कर दे तो उससे उसे कष्ट होता है और वह रोता है कि उसे वहाँ से हटा दिया जाय। कभी-कभी छोटे बच्चे अपनी माँ का प्यार पाने के लिए रोने लगते हैं। इन सब लक्षणों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए और बच्चे की आवश्यकता पूरी करना चाहिए। रोग या पीड़ा के कारण जो रुलाई बच्चा रोता है उसमें और सामान्य रुलाई में अन्तर होता है। कभी-कभी बच्चा सिसकी लेता है परन्तु रोग और दर्द के कारण जब रोता है तब उसकी रुलाई में दर्द का अनुभव होता है। वह जोर से कष्ट के साथ चिल्ला कर रोता है।

रोगी बच्चों की पहचान

जब बच्चा रोगी हो जाता है तब उसके स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है। उसे बेचैनी बहुत रहती है उसमें जिद्द हो जाती है, स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। भूख मर जाती है, शक्ति क्षीण हो जाती है, उठना-बैठना, हँसना-खेलना धीमा पड़ जाता है। चेहरा सुस्त और मलिन हो जाता है, उसके चेहरे से चिन्ता अथवा पीड़ा का भाव प्रगट होता है। इस परिवर्तन को माता को सावधानी से जाँचना चाहिए और उचित उपाय करना चाहिए।

न बोलने वाले बालकों के रोगों के पहचानने की तरकीबें

छोटे बच्चे अनबोलता होने के कारण अपने कष्टों को बता नहीं सकते अतः उनके रोगों को पहचानने में बड़ी कठिनाई होती है। बच्चों को यदि ज्वर हो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तो सदैव ही थरमामीटर लगाकर देखना अच्छा होता है। क्योंकि बच्चों की नब्ज़ स्वस्थावस्था में भी तेज़ चलती है अतः नब्ज़ देखकर ज्वर निश्चय करने में गलती हो जाने की आशंका रहती है। बालक की तकलीफ की कमी और ज्यादती उसके रोने से प्रगट होती है। यदि बालक कम रोवे या धीरे-धीरे रोवे तो समझना चाहिए कि तकलीफ और पीड़ा कम है। यदि बालक बहुत रोवे और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर रोवे तो समझना चाहिए कि पीड़ा अधिक है।

यदि बालक के सिर में दर्द होता है तो वह अपनी आँखें नहीं खोलता, बन्द रखता है, अपनी गर्दन को गिराये रखता है, सिर खड़ा नहीं रखता। बालक बार-बार अपना हाथ सिर पर लगाता है।

यदि बालक के किसी अंग में पीड़ा होती है तो उसे बार-बार अपने हाथ से छूता है यदि कोई दूसरा उस स्थान पर हाथ रखता है तो रोता है।

यदि स्वस्थ बालक रह-रह कर रो उठे तो उसके पेट में दर्द समझना चाहिए। यदि रात को बालक सोवे नहीं, रोता रहे तो उसके अंग प्रत्यंग की जाँच करनी चाहिए। सम्भव है कहीं कोई चींटी आदि काटती हो, कोई फोड़ा वगैरह निकलता हो; यदि ऐसी कोई चीज न हो तो पेट में दर्द होना सम्भव है। कान में दर्द होने पर भी बच्चा रोता है। कान छूता है। सावधानी से इसकी जाँच करनी चाहिए।

यदि पाखाना-पेशाब दोनों रुक गये हों, आँतें बोलती हों, पेट में अफरा हो तो समझना चाहिए कि बच्चे के पेट में दर्द है। यदि बालक को प्यास बहुत लगे, मूर्च्छा हो, और पेशाब न होता हो तो समझना चाहिए कि उसके पेडू में दर्द है।

यदि बालक बोलता न हो और बार-बार मुख खोले और जीभ बाहर निकाले तो समझना चाहिए कि उसे प्यास लगी है। ज्वर की हालत में प्यास बहुत लगती है और बच्चा बार-बार मुँह खोलकर पानी माँगता है। ज्वर की दशा में सावधानी से देख-भाल करनी चाहिए।

जुकाम हो जाने पर नाक बन्द हो जाने से बच्चा नाक से साँस नहीं ले पाता मुँह से साँस लेता है, स्तन पीते समय बार-बार स्तन छोड़कर साँस लेता है।

यदि बालक के हृदय में पीड़ा हो तो वह अपने होठ चबाता है और मुट्ठियाँ

Arya Vedit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

को जोर के बाँधकर भींचता है।

बच्चों के लिए पथ्य-व्यवस्था

ज्वर होने पर बड़ों के लिए उपवास की व्यवस्था करनी पड़ती है। परन्तु छोटे बच्चों को ज्वर होने पर उपवास करने या निराहार रहने की व्यवस्था भूल कर भी नहीं करनी चाहिए। यदि बच्चा केवल माँ का दूध पीता हो तो माँ को उपवास करने से दूध कम बनेगा और दूध का दोष दूर हो जायगा। इतने से ही बच्चे का उपवास का कार्य हो जायगा। टाइफाइड आदि रोग में दूध फाड़कर उसका पानी दिया जाय और सन्तरे आदि पतले रसवाले फलों का रस दिया जाना चाहिए। माता का दूध भी बच्चे को देना चाहिए किन्तु दूध पिलाने का समय बढ़ा देना चाहिए। बच्चों को निराहार रखने से वे क्षीण हो जाते हैं और उनका रोग असाध्य सा हो जाता है। ३-४ वर्ष की अवस्था के बच्चों को किशमिश मुनक्का आदि का रस और पतले रसवाले फलों का रस अथवा तरकारियों का रस दिया जा सकता है। रोग दूर होने पर चबाकर खाये जाने वाले पथ्य फल जो अच्छी तरह पके हों देने की व्यवस्था की जानी चाहिए। रोटी-चावल-दाल आदि अन्न बन्द कर देने से रोग जल्द दूर होता है इसे न भूलना चाहिए। ज्वर आदि रोगों में प्यास लगने पर उबला हुआ जल देना चाहिए। रोगी बच्चे को चारपाई पर ही पड़े रहने देना अच्छा होता है उसे उठने, गिरने, चलने आदि से बचाना चाहिए।

यदि बच्चे को औषधि देना उचित हो तो उसे शहद आदि के साथ औषधि दी जानी चाहिए। हमारी राय में जहाँ तक सम्भव हो छोटे बच्चों को औषधि न देना ही अच्छा है। आयुर्वेद की राय यह है कि जो बच्चे माता का दूध पीते हैं उनको औषधि न देकर दूध पिलानेवाली माता को ही औषधि दी जाय। इससे प्रगट होता है कि प्राचीन चिकित्सक छोटे बच्चों को औषधि देना उचित नहीं समझते थे। सौम्य गुण वाली औषधियाँ उचित मात्रा में बच्चों को दी जा सकती हैं। परन्तु औषधि देने में अन्धाधुंध नहीं मचाना चाहिए। बच्चों की प्रकृति बड़ी कोमल होती है, वात-नाड़ियाँ कोमल होती हैं, तेज औषधियों से उन्हें अधिक हानि की सम्भावना रहती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बच्चों के लिए औषधि की मात्रा

बच्चों की औषधि के विषय में सब से आवश्यक बात मात्रा का ज्ञान है। जितनी दवा बड़ों को दी जाती है, उतनी ही बच्चों को नहीं दी जा सकती, और न तो उतनी तेज दवा दी जा सकती है जितनी तेज बड़े बर्दाश्त करते हैं। बच्चे कोमल होते हैं, उनका स्वभाव कोमल होता है इस कारण उनके लिए औषधि की मात्रा थोड़ी होती हैं साथ ही प्रायः सभी तरह की दवा मिश्री, माँ का दूध, शहद या आवश्यकतानुसार ऐसी ही मीठी चीजों में दी जाती है। जैसे-जैसे बच्चे की अवस्था बढ़ती जाती है वैसे-वैसे उनकी औषधि की मात्रा भी बढ़ती जाती है। पहले महीने में बच्चे को आधी रत्ती काष्ठ औषधि देनी चाहिए। इसी प्रकार प्रति मास आधी-आधी रत्ती मात्रा बढ़ाता जाय। १ वर्ष के बालक को ६ रत्ती औषधि देनी चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक वर्ष ६-६ रत्ती की वृद्धि करनी चाहिए। सोलह वर्ष के बाद मात्रा निश्चित हो जाती है। फिर कोई परिवर्तन नहीं होता। यह औषधि की मात्रा एक अन्दाज से शास्त्रानुकूल लिखी गई है। यह अधिक से अधिक मात्रा है। औषधि का प्रयोग देश, काल, वय, स्वास्थ्य, शक्ति आदि का विचार करके उतना ही करना चाहिए जितना उचित है। काढ़े की मात्रा चूर्ण से चौगुनी रखी जा सकती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय २

ज्वर-चिकित्सा

ज्वर के अनेक भेद हैं उन सब का वर्णन इस छोटी सी पुस्तक में सम्भव नहीं है। वे रोग बड़ों को भी होते है और बच्चों को भी, यह पुस्तक केवल बच्चों के रोग के विषय में है अतः बहुत थोड़े से ज्वरों का संग्रह इस अध्याय में किया गया है। निमोनिया ज्वर या श्वसनक ज्वर का वर्णन हमने इस पुस्तक में अन्यत्र किया है क्योंकि ज्वर होते हुए भी उस रोग का सम्बन्ध फेफड़े और श्वास नलिका से है और उन अंगों में प्रदाह होने कारण ज्वर होता है। प्रधान कारण उन अंगों का प्रदाह है ज्वर नहीं। ज्वर के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने की इच्छा रखनेवालों को हमारी पुस्तक अपूर्व चिकित्सा-विधान देखना चाहिए।

ज्वर वर्णन

अनेक प्रकार के अपथ्य सेवन करने से, ऋतुओं की विषमता से शरीर के वात पित्त आदि दोष विगड़ जाते हैं और ज्वर उत्पन्न कर देते हैं। ज्वर में प्रायः किसी अंग में प्रदाह रहता है ऐसा कुछ चिकित्सकों का विचार है। कुछ ज्वर कीटाणुओं के कारण भी उत्पन्न हो जाते हैं।

ज्वर का पूर्वरूप

जब ज्वर उत्पन्न होने को होता है तब नीचे लिखे लक्षण प्रकट होते हैं— थकावट, चित्त का स्थिर न होना, कहीं चैन न मिलना, शरीर की कान्ति मलिन हो जाना, मुख का विरस होना, आँखों में बार-बार पानी आना, शीत वात और धूप की बार-बार इच्छा और द्वेष होना अर्थात् धूप में रहने पर ठंडक की चाह होना और ठंडे में रहने पर धूप की इच्छा होना इस प्रकार बार-बार इच्छा बदलती रहना, जम्हाई आना, शरीर में दर्द होना, शरीर का भारी

Adve Vedit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

होना, रोंगटे बार-बार खड़े होना, भोजन से अरुचि हो जाना, आँखों के सामने अन्धकार सा प्रतीत होना, प्रसन्नता का अभाव, बच्चों के खेल आदि में अरुचि हो जाना, बार-बार ठंढ लगना आदि ये लक्षण ज्वर के पूर्वरूप हैं।

ज्वर के भेद

ज्वर ८ प्रकार का होता है, वात ज्वर, पित्त ज्वर, कफ ज्वर, वात-पित्त ज्वर, वात-कफ ज्वर, पित्त-कफ ज्वर, सन्निपात ज्वर और आगन्तुक ज्वर। नीचे हम इनके विषय में क्रमशः लिखने का प्रयत्न करेंगे।

ज्वर-चिकित्सा का संक्षिप्त सारांश

ज्वर होते ही।

(१) रोगी को विश्राम दीजिए।

(२) निर्वात स्थान में जहाँ हवा का झोंका न जाता हो परन्तु सर्वदा स्वच्छ वायु का संचार होता हो रखिए।

(३) रोगी को गरम वस्त्र उढ़ा रखिए।

(४) यदि पंखे की आवश्यकता हो तो ताड़ के पंखे या मोर के पर के पंखे की हवा करें।

(५) पीने के लिए गरम जल दें।

(६) रोगी को कुछ भी भोजन न दें। यदि कुछ भोजन देने की आवश्यकता हो तो फलों का रस, तरकारियों का रस, दूध का पानी दें। किसी विशेष अवस्था में दूध देने की व्यवस्था की जा सकती है।

(७) रोगी को भाप देकर दोष निकाल दें जिसमें त्वचा के मार्ग खुल जायें। अथवा आग पर जवाइन आदि डाल कर भी धुआँ लेने से पसीना होकर दर्द दूर हो जाता है।

(८) यदि आवश्यकता हो तो वमन करा दें।

(९) यदि आवश्यकता हो तो दस्त करा दें या एनिमा दे दें। हमारी राय में एनिमा दे देना अधिक अच्छा है। परन्तु जैसी व्यवस्था उचित हो वैसी ही करें।

ऊपर का क्रम पालन करने से बिना किसी विघ्न और उपद्रव के २-३ दिनों में सामान्य ज्वर ठीक हो जाता है। यदि अधिक समय तक चलने वाला

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ज्वर रहता है तो वह भी विना उपद्रव के ही धीमा होने लगता है। यहाँ तक कि मलेरिया, टाइफाइड आदि ज्वर भी सामान्य ही रहते हैं। उनमें भी कोई उपद्रव नहीं होता और न ज्वर विगड़ता ही है।

नीचे ज्वरों के लक्षण और चिकित्सा संक्षेप में दिये जा रहे हैं।

वात ज्वर

वात ज्वर का लक्षण यह है कि शरीर काँपता है, गला और ओठ सूखते हैं, ज्वर कभी तेज हो जाता है, कभी धीमा हो जाता है, नींद नहीं आती, या तो मल सूख जाता है या कब्ज हो जाता है। शिर में पीड़ा होती है और सारे शरीर में दर्द होता है। मुँह का स्वाद खराव रहता है।

चिकित्सा

इस ज्वर में ७ दिन का उपवास कराइए। गरम जल, निर्वात सेवन आदि आवश्यक है। इस ज्वर में सिर दर्द और वदन आदि में दर्द रहता है अतः स्वेदन करने की आवश्यकता रहती है। पसीना देने से शरीर के स्रोत कोमल हो जाते हैं, अग्नि स्वस्थान—आमाशय—में चली जाती है।

वात ज्वर में वायु दोष के जल्द शान्त हो जाने के कारण लम्वा उपवास प्रायः नहीं कराया जाता। जव दोष पच जाय तव उचित भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए।

यदि औषधि देने की आवश्यकता पड़े तो दसमूल का काढ़ा, वृहत् पञ्च-मूल का काढ़ा, दशमूलादि क्वाथ आदि दिये जाते हैं। वात ज्वर इन्द्रजव के काढ़े से पचता है। कल्पतरु रस, त्रिपुर भैरव रस, हिंगुलेश्वर रस एवं मृत्यु-ञ्जय रस आदि इस ज्वर में अच्छा काम करते हैं। इनमें से किसी भी औषधि की १-१ मात्रा दिन में ४-४ घंटे पर देना चाहिए। इनकी मात्रा वच्चों के लिए आधी रत्ती या इससे भी कम रखनी चाहिए।

पित्त ज्वर

पित्तज्वर में ज्वर का वेग तीव्र रहता है, १०३-१०४ डिग्री (३९. डि० सें० ग्रे० से ४० डिग्री सें० ग्रे०) रहता है, अतीसार भी हो जाता है, नींद कम आती है, वमन हो जाती है, कंठ मुख नासिका आदि पक जाते हैं, पसीना आने पर भी ज्वर नहीं उतरता, रोगी प्रलाप करता है, मूर्च्छा या वेहोशी आ जाती है, दाह होता

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है, मुँह का स्वाद कड़वा रहता है, प्यास बहुत लगती है, चक्कर आता है, पेशाव पाखाना और आँखें पीली हो जाती हैं। यह पित्त ज्वर का लक्षण है हाइपर पाइरेक्सिया के लक्षण इसी ज्वर में मिलते हैं।

चिकित्सा

सामान्य ज्वर की भाँति यह ज्वर भी आम दोष से ही होता है और आमाशय की अग्नि नष्ट हो जाती है। अतः इस रोग में भी उपवास की आवश्यकता पड़ती है। कुछ आचार्यों का मत है कि सभी ज्वरों की तरह इसमें तव तक उपवास या लंघन कराना चाहिए जव तक ज्वर उतर कर नार्मल न हो जाय। परन्तु सुश्रुत आदि चिकित्सकों का विचार है कि १० दिन उपवास कराना चाहिए।

उसके वाद आवश्यकता हो तो दोष के पाचन के लिए औषधि प्रयोग किया जा सकता है।

इस ज्वर में पाचन के लिए कुटकी, नागर मोथा, इन्द्रयव, पाठा, कायफल सव औषधियाँ समान भाग लेकर जवकुट कर डाले और मिलित औषधियों में से २ तोले लेकर पाव भर पानी में काढ़ा वनावे और जव एक छटाँक शेष रहे तव उतार कर शीतल कर मिश्री मिलाकर पिलावे। इससे पित्त ज्वर का पाचन होता है। वच्चों के लिए काढ़े की मात्रा १ तोला या इससे भी कम दी जानी चाहिए।

पित्तज्वर में ज्वर बहुत तेज रहता है। १०३ से (३९.५ डि० से० ग्रे०) लेकर १०६-१०७ (४१.१ सें० ग्रे० से लेकर ४१.७ सें०ग्रे०) तक हो सकता है, रोगी ज्वर से वेचैन हो जाता है। इस ज्वर में ज्वर के वेग को कम करने के लिए कुछ ऊपरी उपचार करना पड़ता है, इसी ज्वर में जब ज्वर १०४ डिग्री (४० डि० सें० ग्रे०) हो जाता है तव डाक्टर लोग रवर की थैली में वरफ डाल कर सिर पर रखवाते हैं।

इस तरह की वरफ की पट्टी प्राचीन काल में सिर पर नहीं रखी जाती थी। सिर को ठंडा रखने से कोई विशेष लाभ नहीं होता। वस्तुतः नाभि को ठंडा करने से सिर भी ठंडा हो जाता है। इसीलिए नाभि को शीतल करने का प्रयत्न करना चाहिए। रोगी को उतान सुलाकर उसकी नाभी पर ताँवे का या काँसे का वर्तन रख देना चाहिए और उसमें शीतल जल की पतली

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

धारा गिरानी चाहिए और थोड़ी देर रहने देना चाहिए। जब पानी किंचित गरम हो जाय तब उस पानी को हटा देना चाहिए और दूसरा पानी गिराना चाहिए इस प्रकार बहुत अधिक शीतल धारा गिराने से ज्वर का वेग कम हो जाता है। पेड़ू और सिर पर गीला कपड़ा रखने से भी ज्वर कम होता है।

पेड़ू पर मिट्टी की पट्टी या शीतल जल की पट्टी रखने से भी गरमी कम होती है और ज्वर कम हो जाता है। पट्टी गरम हो जाने पर बदलते जाना चाहिए।

ऐसे रोगी को ऊँचे स्वच्छ पुते हुए कोठे पर जिसमें रात को चाँद की चन्द्रिका पड़ती हो एवं दिन को चन्दन मिले हुए जल से ठंडा किया गया हो, रखना चाहिए। खस की टट्टी लगे घर में भी सुलाया जा सकता है।

इस रोग में द्राक्षादि क्वाथ, पटोलादि क्वाथ, महाद्राक्षादि क्वाथ, पर्पटादि क्वाथ आदि अच्छा लाभ करते हैं।

लाल चन्दन, खस, सोंठ, पित्तपापड़ा इनका काढ़ा पित्त ज्वर को शान्त करता है। सभी तरह के तेज ज्वरों में ऐसे उपाय किये जा सकते हैं।

यदि रोगी दाह से युक्त हो, कम्प हो, दुर्बल हो गया हो और तर्पण का समय हो तो धान का लावा पानी में भिगोकर मलकर छान ले और उसमें मिश्री और शहद मिलाकर पिलाया जा सकता है। इस ज्वर में मुनक्के और फालसे का पानी देना चाहिए। इस ज्वर में गरम करके ठंडा किया हुआ जल देना लाभदायक है।

यदि प्यास बहुत लगे तो रात को मिट्टी के बर्तन में दली हुई धनिया भिगो देना चाहिए और प्रातः थोड़ी मिश्री मिलाकर मल छान कर देना चाहिए।

(१) गोदन्ती भस्म १ रत्ती की मात्रा में शहद से ४-४ घंटे पर देना चाहिए।

(२) मोती के सीप की भस्मं १-१ रत्ती की मात्रा में ४-४ घंटे पर शहद के साथ देना चाहिए।

(३) बसन्त मालती रस देने से अच्छा लाभ होता है। मात्रा आधी रत्ती शहद के साथ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कफ ज्वर

कफ ज्वर में शरीर गीले वस्त्र से ढँके हुए के समान किंचित नम रहता है, ज्वर का वेग हलका होता है, सुस्ती और आलस्य बहुत आता है, शरीर जकड़ा हुआ या भारी रहता है, पेशाब का रंग और पाखाने का रंग सफेद रहता है, अन्न की अभिलाषा नहीं रहती, मानों अभी भोजन किया है। जुकाम खाँसी आदि भी उत्पन्न हो जाते हैं और आँखें श्वेत रहती हैं।

चिकित्सा

इस रोग में तब तक लंघन कराना चाहिए जब तक ज्वर उतर न जाय यह तो सामान्य नियम है। परन्तु १२ दिन के लंघन से आम दोष प्रायः शान्त हो जाता है अतः १२ दिनों के बाद पाचन औषधि देनी चाहिए।

कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, जवाइन, मंगरैल, सोंठ, पीपरि और मिर्च इन को सम भाग लेकर चूर्ण कर ले और अदरक के रस के साथ उचित मात्रा में चटाने से ज्वर, श्वास, खाँसी, सर्दी, हिचकी आदि रोग दूर होते हैं। इसको अष्टांगावलेह कहते हैं। बच्चों की मात्रा ३-४ रत्ती।

कल्पतरु रस, कफकेतु रस, त्रिभुवनकीर्ति, कफ चिन्तामणि आदि रस कफ ज्वर में अच्छा काम करते हैं। इन रसों की मात्रा बच्चों के लिए ½ रत्ती या और भी कम।

मृत्युंजय रस १ गोली, शृंभस्म १ रत्ती, अभ्रक भस्म १ रत्ती, शंख भस्म १ रत्ती, प्रवाल भस्म १ रत्ती मश्रित करके ऐसी ३-४ मात्रा रोज देने से कफ ज्वर, निमोनिया आदि रोग नष्ट होते हैं। मात्रा अवस्थानुसार।

वात-पित्त ज्वर

वात-पित्त ज्वर में दोनों दोषों के लक्षण दिखाई देते हैं, ज्वर तेज रहता है, प्यास बहुत लगती है, मूर्च्छा, भ्रम, दाह और निद्रानाश, सिर दर्द आदि लक्षण प्रगट होते हैं इसमें भी हाइपर पाइरेक्सिया के लक्षण होते हैं।

चिकित्सा

(१) गुडूची, पित्तपापड़ा, नागर मोथा, चिरायता और सोंठ का काढ़ा विधि पूर्वक बनाकर देने से वात-पित्त ज्वर शान्त होता है। इसे पञ्चभद्र क्वाथ कहते हैं। बच्चों की मात्रा १ या २ चाय के चम्मच भर क्वाथ एक बार में।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(२) चिरायता, कुटकी, गुडूची, मुनक्का, आमला और कचूर का विधि पूर्वक काढ़ा बनाकर गुड़ मिलाकर वात-पित्त ज्वर में देना चाहिए। इसे किरातादि क्वाथ कहते हैं।

इस रोग में मूँग और आमले का जूस हितकर होता है, अथवा अनार, मूँग और आमले का जूस देना चाहिए। यदि दाह बहुत अधिक हो तो चने का जूस दिया जा सकता है।

यदि ज्वर तेज हो तो सारे शरीर की गीली पट्टी, सिर पर बरफ की पट्टी आदि की व्यवस्था करनी चाहिए। पेडू पर मिट्टी की पट्टी भी रखी जा सकती है। इस ज्वर में ज्वर का वेग बहुत तीव्र होता है और रोगी अकबक भी बकता है।

वात-कफ ज्वर

वात-कफ ज्वर में इन्हीं दोनों दोषों के लक्षण प्रगट होते हैं, इसमें ज्वर कम रहता है जुकाम, खाँसी, सिर दर्द आदि रहता है ज्वर का वेग मध्यम रहता है। इस ज्वर में शीत पसीना बहुत निकलता है।

चिकित्सा

इस ज्वर में उपवास तो कराना ही पड़ेगा। इस ज्वर में यदि औषधि देने की आवश्यकता पड़े तो ९वें दिन के बाद देना उचित होगा। इस ज्वर में पिप्पल्यादि क्वाथ बहुत लाभदायक होता है। इससे बढ़कर कोई औषधि इस ज्वर की नहीं है।

(१) पीपरि, पिपरामूल, मरिच, गजपीपरि, सोंठ, चित्रक, चव्य, सिंधुवार के बीज, इलायची, अजमोदा, सर्षप, हींग, भार्ङ्गी, पाठा, इन्द्रजव, जीरा, बकाइन, मुर्रा, अतिविषा, कुटकी, और वायविडंग। यह पिप्पल्यादि गण है। इन्हीं औषधियों का काढ़ा वात-कफ ज्वर में देना चाहिए। यही काढ़ा कफ ज्वर में भी दिया जाता है।

(२) दशमूल का काढ़ा वात-कफ ज्वर में लाभ करता है। सूत शेखर रस इस रोग में दिया जाता है।

कफ केतु या कल्पतरु रस की व्यवस्था करनी चाहिए।

मृत्युंजय रस, अभ्रक भस्म, स्वर्णभस्म, प्रवाल भस्म, एवं शंख भस्म का
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
मिश्रण उचित मात्रा में शहद से देने से लाभ होता है।

बालू को पोटली में बाँध कर तवा पर गरम करके उससे स्वेदन करने से पसीना रुकता है।

पुराना गाय का गोबर और नमक का मिट्टी का वर्तन पीस कर धुर्रा करने से पसीना बन्द होता है।

पित्त-कफ ज्वर

पित्त-श्लेष्म ज्वर में खाँसी और अरुचि होती है, मुँह कड़वा हो जाता है, तन्द्रा (नींद का सा भाव परन्तु वास्तविक निद्रा नहीं आती), मोह या मूर्च्छा होती हैं, कभी सर्दी लगती है और कभी गर्मी लगती है।

चिकित्सा

इस ज्वर में उपवास नियमानुसार ही करना चाहिए जैसा पहले लिखा जा चुका है। यदि औषधि देने की आवश्यकता हो तो १०वें दिन औषधि दी जानी चाहिए।

(१) इस ज्वर में गुडुच, नीम की अन्तर छाल, धनिया, चन्दन और कुटकी का विधि अनुसार बनाया काढ़ा पिलाना चाहिए। इसे गुडुच्यादि क्वाथ कहते हैं। इससे पित्त-कफ ज्वर, प्यास, दाह, अरुचि और वमन दूर हो जाते हैं।

(२) गुडूची, कुटकी, नीम की अन्तर छाल, परवल के पत्ते, नागरमोथा, लाल चन्दन, सोंठ, इन्द्रजव इनका काढ़ा बनाकर पित्त-कफ ज्वर में देना चाहिए इसे अमृताष्टक क्वाथ कहते हैं। इस काढ़े में पीपरि का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए। इससे दाह, प्यास, वमन, अरुचि आदि रोग नष्ट होते हैं।

सन्निपात ज्वर

सन्निपात ज्वर में नीचे लिखे लक्षण होते हैं—क्षण भर में दाह होता है और क्षण भर में ही ठंडक लगने लगती है, हड्डियों, सन्धियों और शिर में पीड़ा होती है। आँखों में आँसू आता है, आँखें गन्दी रहती हैं। आँख टेढ़ी, संकुचित या फटी हुई सी होती है। कानों में पीड़ा होती है (क्योंकि कानों के मध्य में प्रदाह हो जाता है), कानों में अनेक प्रकार के शब्द सुनाई देते हैं। कण्ठ में काँटे से पड़े रहते हैं जो चुभते हैं। तन्द्रा, मोह, प्रलाप, भ्रम (चक्कर) खाँसी, श्वास और अरुचि होती है। जीभ जली हुई सी काले रंग की हो जाती
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
है, स्पर्श करने में जीभ खुरदरी लगती है, और अवस्था अत्यन्त असहाय की सी हो जाती है। थूक में रक्त या पित्त आता है अथवा (रक्त के कुल्ले बार-बार निकलते हैं) अथवा कफ में मिलकर रक्त निकलता है। रोगी शिर को इधर-उधर चलाता रहता है (क्योंकि मस्तिष्क में पीड़ा और विकृति रहती है), प्यास रहती है, नींद नहीं आती, हृदय में पीड़ा होती है; पसीना, मूत्र और मल काफी विलम्ब से और अल्प मात्रा में निकलते हैं। शरीर इस ज्वर में अधिक दुर्बल नहीं होता। गले से कबूतर के गुटर गूँ की तरह की कुछ आवाज आती है। शरीर पर काले या लाल रंग के चकत्ते या मण्डल निकल आते हैं। मूकता या गूँगापन हो जाता है, अथवा रोगी बहुत कम बोलता है, नाक मुँह, कान, गुदा, लिंग आदि पक जाते हैं। पेट भारी हो जाता है, और दोषों का पाक बड़ी देर से होता हैं १०-१२ दिन या और अधिक दिन लग जाते हैं।

वाग्भट्ट ने लिखा है कि शीत लगती है, दिन को नींद आती है, रात को रोगी जागता है या सदैव ही सोया करता है अथवा बिलकुल ही नींद नहीं आती, या तो बहुत अधिक पसीना आता है अथवा बिलकुल ही नहीं आता। रोगी गाता है, हँसता है, नाचता है, कुश्ती के लिए ललकारता है इस प्रकार चेष्टा बदलती रहती है। ये लक्षण भी सन्निपात में दिखाई पड़ते हैं। सन्निपात ज्वर बड़ा घोर ज्वर है और प्रायः असाध्य है।

सन्निपात ज्वर के अनेक भेद हैं। किसी के मत से यह ५२ प्रकार का होता है किसी के मत से १३ प्रकार का होता है।

यदि सन्निपात में ऊपर कहे हुए समस्त लक्षण प्रगट हो जायँ तो रोग असाध्य समझना चाहिए। यदि कम लक्षण प्रगट हों तो कष्टसाध्य है।

सातवें दिन, दसवें दिन या बारहवें दिन या इसके दुगने दिनों में या तो यह ज्वर स्वयं ही उतर जाता है या फिर कठोर होकर मार देता है। ज्वर बढ़कर १०५ या १०६ डिग्री तक (४०.६ सें० ग्रे० से लेकर ४१.१ सें० ग्रेड तक) हो जाता है। इसी में कुछ रोगी मर जाते हैं। कभी-कभी तेज होकर ज्वर हलके-हलके कम होकर उतरता है। उतरने के इस क्रम को एलोपैथ लाइसिस कहते हैं। कभी-कभी ज्वर एकदम उतर कर ९५-९६ डिग्री तक (३५.१ डि० सें० ग्रे० से लेकर ३५.६ डि० सें० ग्रे० तक) आ जाता है। इस एकाएक ज्वर
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
उतर जाने को अंगरेजी में क्राइसिस कहते हैं।

सातवें दिन, दसवें दिन या बारहवें दिन, अथवा १४वें दिन, २०वें दिन या २४वें दिन या तो ज्वर उतर जाता है या रोगी को मार देता है। सन्निपात ज्वर की यही सीमा है।

ज्वर से पीड़ित रोगी के हृदय और नाभि देश में अंगुली से दवाने से दर्द हो या कष्ट हो तो धातु-पाक समझना चाहिए और यदि पीड़ा न हो तो मल-पाक। इस परीक्षा के लिए हृदय के नीचे और नाभि के ऊपर पेट में दवा कर एवं अंगुली से ठोंक कर परीक्षा की जाती है। यदि दर्द होता है तो धातु-पाक समझा जाता है अन्यथा दोष-पाक।

यदि हृदय तथा नाभि देश में अत्यन्त पीड़ा हो, अत्यधिक पतले दस्त आवें ज्वर का वेग तीव्र हो, तृषा, मद (वेहोशी) और श्वास की अधिकता हो, अरुचि हो, रोगी को बेचैनी अधिक हो तो समझना चाहिए कि धातु-पाक है। धातु-पाक का रोगी शायद ही आराम हो। दोष-पाक का रोगी आराम हो जाता है।

सन्निपात ज्वर-चिकित्सा

यदि दोषों की अंशांश कल्पना न की जा सके, यदि चिकित्सक यह न समझ सके कि कौन सा दोष मध्य, कौन सा हीन और कौन सा प्रवल है तो ऐसी अवस्था में सन्निपात ज्वर की सामान्य चिकित्सा करनी पड़ती है जो प्रायः हर तरह के सन्निपात में लाभदायक होती है।

सन्निपात ज्वर का इलाज करना वड़ा कठिन है क्योंकि इसकी चिकित्सा मृत्यु के साथ युद्ध करना है। जो इस ज्वर की चिकित्सा कर सकता है वही चिकित्सक है और वह संपूर्ण रोगों को जीत सकता है। सन्निपात रूपी महा समुद्र में डूवते हुए रोगी का जो चिकित्सक उद्धार कर सकता है वह वड़ा पुण्यात्मा है, उसने सम्पूर्ण धर्मों को किया है और सभी तरह की पूजाओं के योग्य है।

आरम्भ में कफ को ही निग्रह करने का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि वढ़ा हुआ कफ मृत्यु का कारण होता है। यदि दो दोषों का संसर्ग हो तो जो दोष बलवान हो उसकी चिकित्सा पहले करनी चाहिए। इस ज्वर में पहले ज्वर
CC-0. Agamnigam Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
शान्त करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए क्योंकि ज्वर शान्त करने से पित्त शान्त हो जाता है और कफ बढ़ जाता है तथा अग्नि भी मन्द हो जाती है और यह अवस्था मृत्यु-कारक होती है। इस ज्वर में दोषों को पचाने और कफ को ही नियंत्रित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

इस ज्वर में सर्व प्रथम कर्तव्य यह है कि रोगी को लंघन कराया जाय, वालू से सेंका जाय, नस्य दिया जाय जिस से सिर हलका हो, कफ निकाला जाय, आँखों की तन्द्रा दूर करने के लिए आँखों में अञ्जन लगाया जाय, एवं अदरक शहद पान का रस आदि के साथ कुछ औषधि रूप में चटाया जाय।

सन्निपात ज्वर में उपवास के समय एवं अन्य समय भी गरम-गरम जल देना चाहिए। निमोनिया और कफ की अधिकता वाले रोगों में गरम जल ही देना चाहिए। जो चिकित्सक उस रोगी को जिसके पसली में दर्द है और तालू सूखता है, शीतल जल पिलाता है वह रोग को विगाड़ देता है और रोगी को मार डालता है। इस रोग में सम्यक लंघन कराना चाहिए और जब दोष-पाक के लक्षण प्रगट हो जायें तब समझना चाहिए कि रोगी अब आराम हो जायगा। लंघन करने से दोष देर में पचते हैं अतः दोष पचने में सहायता देने के लिए कुछ औषधि का प्रयोग करना भी आवश्यक होता है।

अष्टांगावलेह

कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, पीपरि, मिर्च, मँगरैल और जवाइन इन आठों औषधियों को सम भाग लेकर चूर्ण करले। इसे शहद के साथ चटावे। इससे दारुण सन्निपात रोग आराम होता है। एवं हिचकी, श्वास, खाँसी और कण्ठ-रोग दूर होते हैं। सन्निपात ज्वर में इस चूर्ण को अदरक के रस के साथ देना चाहिए। सन्निपात ज्वर में शहद हानि करता है। मात्रा बच्चों की अवस्था के अनुसार।

सन्निपात ज्वर की सामान्य चिकित्सा के लिए दशमूल का काढ़ा, चतुर्दशांग क्वाथ, अष्टादशांग क्वाथ आदि अत्यन्त प्रसिद्ध औषधियाँ हैं।

बेल की जड़ की छाल, अग्निमन्थ, सोना पाठा, काश्मरी, पाढरि, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और गोखरू इन दस औषधियों को
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मिलाकर दशमूल कहते हैं। इनका काढ़ा बनाकर और उसमें २ माशे पीपरि का चूर्ण मिलाकर पीने से सन्निपात ज्वर दूर होता है एवं हृदय और कण्ठ की पीड़ा, तन्द्रा एवं वात-कफ के रोग, श्वास, खाँसी आदि भी दूर होते हैं।

त्रिनेत्र रस, पञ्चवक्त्र रस, उन्मत्त रस, मृत संजीवनी बटी आदि सन्निपात पर अच्छा काम करती हैं। मकरध्वज, कस्तूरी भैरव, वृहत कस्तूरी भैरव, कल्पतरु रस आदि का उपयोग भी बड़ी सफलता से किया जाता है। वैताल रस का भी प्रयोग होता है एवं अन्य अनेक रस हैं जिनका प्रयोग किया जाता है।

उपवास

उपवास में दूध भी मत दीजिए। दूध फाड़ कर उसका पानी दे सकते हैं, जब दोष पच जायं तभी पथ्य फलों का रस दीजिए। अथवा २०-२१ दिन जब तक आवश्यकता हो तब तक केवल गरम जल पर रखिए। जब रोगी नीरोग होने लगेगा तो स्वयं उसे भूख लगेगी तभी उसे पथ्य फलों का रस दीजिए। आवश्यकता हो तो फलों का रस भी गरम कर सकते हैं। दशमूल का काढ़ा अष्टादशांग काढ़ा या अन्य सन्निपात नाशक काढ़ा दीजिए। दशमूल का नुसखा पहले लिखा जा चुका है। अष्टादशांग का नुसखा नीचे दिया जा रहा है।

अष्टदशांग क्वाथ

दशमूल (दस औषधियाँ), कचूर, काकड़ासिंगी, पुष्कर मूल, धमासा, भारंगी, इन्द्रजौ, परवल के पत्ते और कुटकी, इन १८ औषधियों के योग को अष्टादशांग क्वाथ कहते हैं। यह सन्निपात ज्वर को दूर करता है और कास, हृद्ग्रह, पार्श्व पीड़ा, श्वास, हिचकी और वमन को दूर करता है।

रस प्रयोग

मकर ध्वज का प्रयोग सन्निपात में खूब होता है। षड्गुण बलिजारित मकरध्वज में कल्पतरु रस मिलाकर देने से घोर सन्निपात भी आराम होता है। अनूपान अदरक का रस और पान के रस के साथ।

प्रलाप, विकृत दृष्टि, सिर दर्द, अधिक भय, एक ही वस्तु दो दिखाई पड़ना,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
बेचैनी अधिक हो, रोगी उठ-उठ कर भागे, आँख मुंह बैठ जाय, पसीना बहुत हो, शरीर शीतल हो तो कस्तूरी भैरव, वृहत कस्तूरी, अगर कस्तूरी, कस्तूरी भूषण, इनमें से कोई औषधि दे सकते हैं। अथवा कोई तीन प्रर्याय क्रम से सुबह दोपहर शाम दे सकते हैं। अनुपान अदरक का रस और पान का रस।

महा लक्ष्मीविलास रस, सन्निपात भैरव रस, वृहत कस्तूरी भैरव रस पर्याय क्रम से सभी सन्निपात में ४ वार दे सकते हैं। अनुपान अदरक का रस, या दशमूल का काढ़ा। बीच-बीच में मकरध्वज देते रहिए।

यदि आँखें लाल हों, मस्तष्क में रक्त अधिक हो, सिर इधर उधर चलावे, प्रलाप हो तो ऐसी अवस्था में सिर पर वरफ की थैली रखिए। त्रिदोष काला नल, सूतिका भरण रस और अघोर नृसिंह रस तीनों पर्याय क्रम से ६-६ घंटे पर दीजिए। मात्रा बच्चों के लिए बुद्धि से निर्धारित कर लीजिए। अधिक से अधिक मात्रा रसों की आधी रत्ती रखिए।

आगन्तुक ज्वर

भय और शोक ज्वर में रोगी प्रलाप करता है, क्रोध ज्वर में शरीर काँपता है, ज्वर भी तेज रहता है, अभिचार और अभिसाप ज्वर में मोह और तृष्णा होती है। भूत ज्वर में रोगी हँसता है, गाता है और काँपता है। काम ज्वर में चित्त-विभ्रम होता है तन्द्रा और आलस्य रहता है तथा भोजन में रुचि नहीं रह जाती। कुछ औषधियां विषैली होती हैं और उनके विष के प्रभाव से भी ज्वर हो जाता है और इस ज्वर में मुँह काला पड़ जाता है तथा दस्त होते हैं, भोजन में अरुचि और प्यास होती है। शरीर में सूई चुभने की सी पीड़ा और मूर्च्छा होती है। औषधियों के गंध से उत्पन्न ज्वर में मूर्च्छा होती है, शिर में पीड़ा होती है वमन होती है और छींक आती है। ये सब आगन्तुक ज्वर हैं।

वाहरी कारण से उत्पन्न ज्वर को आगन्तुक ज्वर कहते हैं। इसमें दोष बाद को कुपित होते हैं।

चिकित्सा

कारण का त्याग करना ही वास्तविक उपचार है। शोक में प्रसन्नता, क्रोध में शोक, शोक में क्रोध उत्पन्न कर देने से वे शान्त हो जाते हैं। भय में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आश्वासन देने की आवश्यकता रहती है। काम ज्वर में प्रियालिंगन करना चाहिए। आगन्तुक ज्वर में उपवास करने की शास्त्राज्ञा नहीं है। वात ज्वर, क्षय ज्वर, जीर्ण ज्वर, इनमें भी लंघन नहीं कराना चाहिए। ये ज्वर प्रायः बच्चों को नहीं होते।

विषम ज्वर

ज्वर छोड़ देने के बाद थोड़े से शेष रहे दोष अहित-आहार-विहार से बढ़कर अन्य धातुओं में प्राप्त होकर विषम ज्वर उत्पन्न करते हैं। अथवा पहले से ही विषम ज्वर उत्पन्न हो सकता है। जिस ज्वर के आने तथा शीत और गर्मी का तथा वेग का कोई नियत समय और नियत नियम न हो, कभी वेग बढ़ जाय, कभी घट जाय, कभी सर्दी लगे, कभी गर्मी लगे, उसे विषम ज्वर कहते हैं। विषम का अर्थ होता है ना-बराबर या ऊंचा नीचा। यही ज्वर एलोपैथी का मलेरिया है। यह ज्वर कीटाणुओं से उत्पन्न होता है इसे प्राचीन चिकित्सक भी मानते थे। लिखा है "केचित् भूताभिषंगोत्थं ब्रुवते विषम ज्वरम्।" अर्थात् कुछ आचार्य विषम ज्वर को कीटाणुओं से उत्पन्न मानते हैं। भूत शब्द का अर्थ कीटाणु भी होता है। यह वैदिक शब्द है।

इसके पाँच भेद हैं (१) संतत—यह ज्वर ७-१० या १२ दिनों तक चढ़ा रहता है, नार्मल नहीं होता। यह एलोपैथी का रिमिटेंट फीवर है। यह रस और रक्त धातु के आश्रित रहता है। एलोपैथ लोग रिमिटेंट या संतत ज्वर को मलेरिया नहीं मानते। विषम ज्वर के शेष चार ज्वर मलेरिया के अन्दर आते हैं।

(२) सतत—यह ज्वर एक दिन में दो बार आता है और प्रति बार थोड़ी बहुत सरदी लगकर आता है। किसी-किसी को प्रत्यक्ष सरदी नहीं लगती परन्तु पाँव या हाथ या कुछ अंगुलियाँ ठंडी हो जाती हैं। यह एलोपैथी का डबल कोटिडियन फीवर है। यह ज्वर रक्ताश्रित है।

(३) अन्येद्यु :—यह ज्वर प्रतिदिन एक बार आता है। ज्वर का क्रम यह रहता है कि पहले सर्दी लगना, फिर ज्वर तेज होना। इसमें प्यास बहुत लगती है। और उसके बाद पसीना देकर ज्वर उतर जाता है। यह ज्वर मांसाश्रित

www.Chekhamba.collection, Varanasi

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। इसे डाक्टर लोग कोटिडियन फीवर कहते हैं।

(४) तृतीयक—यह ज्वर एक दिन अन्तर देकर आता है। यह मेदगत ज्वर है। ज्वर का वेग अन्येद्यु: ज्वर के समान ही होता है। देशी भाषा में इसे तिजारी कहते हैं। इसे एलोपैथी में टार्शियन फीवर कहते हैं।

(५) चातुर्थिक—यह ज्वर दो दिन का अन्तर देकर आता है, यह अस्थि और मज्जागत होता है। यह बड़ा घोर होता है। अल्प दोष होने के कारण यह अवल होता है और कुछ काल विश्राम के बाद जब पुनः बलवान होता है तब ज्वर उत्पन्न करता है। और जब बलवान होता है तब नित्य ही ज्वर आता है। चातुर्थिक ज्वर बड़ी कठिनाई से जाता है। अच्छे-अच्छे चिकित्सकों के दाँत खट्टे कर देता है। इसमें भी पहले जाड़ा देकर ही ज्वर चढ़ता है। एलोपैथी में इसे क्वार्टन फीवर कहते हैं।

आयुर्वेद के मत से समस्त विषम ज्वरों में तीनों दोषों में विकार आता है। वायु के कारण ही ज्वर में कँपकँपी होती है, और कफ के कारण सर्दी मालूम होती है तथा पित्त के कारण ज्वर तीव्र होता है।

चातुर्थिक विपर्यय ज्वर में दोष अस्थि और मज्जागत होता है और एक दिन ज्वर नहीं आता फिर दो दिन लगातार आता है और चौथे दिन फिर नहीं आता।

चिकित्सा

सभी विषम ज्वर त्रिदोष से ही उत्पन्न होते हैं, कम्प वायु से, शीत कफ से और दाह प्यास पित्त से उत्पन्न होते हैं। जिस दोष की उल्वणता हो उसी के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिए। विषम ज्वर की चिकित्सा में सर्वप्रथम वमन और विरेचन देना चाहिए। वमन और विरेचन करा देने से दोष निकल जाते हैं और चिकित्सा करने में आसानी हो जाती है।

इस ज्वर में केवल एनिमा देने से उतना अच्छा काम नहीं होता। (१) निसोथ का चूर्ण ६ माशे लेकर शहद से चटा देने से दस्त हो जाता है।

(२) हरड, पीपरि, सौंफ, सनाय और मुनक्का सब को सम भाग लेकर चूर्ण कर डाले और ३ माशे से १ तोले तक की मात्रा में गरम जल से दें। इससे दस्त हो जाता है और प्रायः विषम ज्वर भी चला जाता है। यदि एक दिन में काम न चले तो २-३ दिन इस चूर्ण को खिलाना चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(३) वमन कराने के लिए गरम जल में नमक मिलाकर भर पेट पिला कर गले में अँगुली डालकर कै करा देनी चाहिए।

कै दस्त करा देने के बाद सामान्य औषधि से भी काम चल जाता है।

(१) करञ्ज के बीज का चूर्ण १५ रत्ती की मात्रा में शहद से चटाने से विषम ज्वर दूर होता है। कुनीन के समान गुणकारी औषधि है। बच्चों के लिए मात्रा ३-४ रत्ती।

(२) तुलसी की पत्ती का रस और मिर्च का चूर्ण एक साथ लेने से विषम ज्वर नष्ट हो जाता है। ज्वर आने के ४-५ घण्टे पहले से ही प्रत्येक घंटे औषधि देनी चाहिए।

(३) गुम का रस और मिर्च का चूर्ण एक साथ देने से विषम ज्वर दूर होता है। ज्वर चढ़ने के ३-४ घण्टे पहले से ही प्रत्येक घंटे औषधि देनी चाहिए।

(४) महावला या कंघी जड़ी की जड़ और सोंठ का काढ़ा पीने से ३-४ दिनों में विषम ज्वर चला जाता है।

(५) बड़े चकवड़ की पत्ती पीस कर वायें हाथ की कलाई पर बाँधने से ज्वर चला जाता है।

निम्बादि चूर्ण

छाया में सूखी नीम की पत्ती	१० तोला
हर्रे, वहेरा, आँवला प्रत्येक	२-२ तोला
सोंठ, मिर्च, पीपरि प्रत्येक	१-१ तोला
जवाइन	५ तोला
सेंधा, काला, विड नमक प्रत्येक	१-१ तोला
जवाखार	२॥ तोला

चूर्ण करके ४-५ माशे शीतल जल से दिन में ३ बार दें। पथ्य दूध, अनार, मुनक्का, परवल का भर्ता साबूदाना आदि। विषम ज्वरों में लाभदायक है। सभी तरह के विषम ज्वर, घोर चातुर्थिक, तिजारी आदि और सन्निपात से उत्पन्न ज्वर दूर होते हैं साथ ही रतौंधी भी चली जाती है।

सुदर्शन चूर्ण ४ रत्ती गोदन्ती भस्म १ रत्ती मिलाकर देने से सब तरह का ज्वर उतर जाता है। डाक्टर कुनीन खिलाते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आन्त्रिक ज्वर-टाइफाइड फीवर

टाइफाइड ज्वर एक प्रकार के कीटाणु से उत्पन्न होता है। इस ज्वर में बड़ी आँत और छोटी आँत की कुछ ग्रन्थियों में प्रदाह हो जाता है, घाव हो जाता है और आँत की त्वचा घिसती-घिसती चलनी की तरह छेददार भी हो जाती है, इसी कारण गुदा से अधिक मात्रा में रक्त-स्राव भी होता है। आँतों में विकार आने से ज्वर होने के कारण इसे आन्त्रिक (आँत से सम्बन्ध रखनेवाला) ज्वर भी कहते हैं। टाइफाइड ज्वर का एक भेद और है उसे पैरा टाइफाइड कहते हैं। यह अकसर टाइफाइड ज्वर से हलका होता है और जल्द उतरता भी है। पैरा टाइफाइड भी कई तरह का है उसके मुख्य तीन भेद हैं। और पैरा टाइफाइड के आगे ए० बी० सी० लगाकर उनका नाम-करण किया जाता है। ये सभी ज्वर एक दूसरे से लक्षण और कारणों में इतने अधिक मिलते हैं कि निश्चय पूर्वक इनका लक्षण अलग कर सकना बड़ा कठिन होता है। जब तक रक्त निकालकर कीटाणुओं की परीक्षा न की जाय रोग का सही-सही नाम रख सकना सम्भव नहीं है।

ज्वर आने के समय ही यह ज्वर पहचाना नहीं जा सकता, जब ज्वर का इलाज करने पर भी ९-१० दिन तक ज्वर नहीं उतरता तब टाइफाइड का सन्देह हो जाता है। और इसी समय से टाइफाइड समझा जाने लगता है। कुछ लोगों में आरम्भ से ही कुछ ऐसे लक्षण प्रगट होते हैं जिससे इस रोग का सन्देह हो जाता है। ज्वर प्रातःकाल कम रहता है और दोपहर के बाद बढ़ता है। प्रातः और सायंकाल के ज्वर में प्रायः दो डिग्री का अन्तर रहता है, जीभ सफेद रहती है, कभी-कभी कुछ पीलापन भी दिखाई पड़ता है परन्तु किनारे पर और नोक पर काफी लाल रहती है। सफेद बीच में और पीछे की ओर रहती है।

दूसरे सप्ताह में ज्वर सबसे ऊँचा रहता है, ज्वर १०३-१०४ डिग्री (३९.५ सें० ग्रे० लेकर ४०.१ सें० ग्रे० तक) पर रहता है प्रातः काल बहुत थोड़ी देर के लिए एक-दो डिग्री कम होता है। इस सप्ताह में सिर-दर्द नहीं रहता परन्तु सुस्ती रहती है, छोटी आँतों में कष्ट बढ़ जाता है। रोगी कमजोर हो जाता है, मल में बदबू आ जाती है, पेट में छोटी आँत के अंत में दर्द होता है,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अकसर अतीसार आरम्भ हो जाता है, कान के भीतर प्रदाह हो जाता है, और दर्द हो जाता है।

तीसरा सप्ताह—तीसरे सप्ताह में ज्वर कम होने लगता है और प्रातःकाल यह काफी कम रहता है—२-३ डिग्री कम रहने लगता है। इस सप्ताह में भी दस्त और कान का दर्द होता रह सकता है। कमजोरी अधिक हो जाती है। यह बहुत ही खतरनाक समय होता है, रोग इसी अवस्था में बढ़ता है, भय-जनक स्थिति पैदा हो जाती है, यदि अवस्था बिगड़ती है तो जीभ सूखती है, और भूरी हो जाती है, प्रलाप बढ़ जाता है। हृदय कमजोर हो जाता है। चेहरा किंचित लाल हो जाता है, ओठ सूखते हैं और काले पड़ जाते हैं आँतों में घाव या छेद हो जाने के लक्षण प्रगट हो जाते हैं। शाम के समय भी ज्वर उतना ऊँचा नहीं जाता जितना पहले जाया करता था। इसी समय रोगी को निमोनिया भी हो सकता है। रोगी के भाग्य के अनुसार इसी सप्ताह में रोग के लक्षण प्रगट हो जाते हैं। अच्छे होने वाले रोगी के सब रोग के लक्षण गायब होने लगते हैं और कष्ट भोगने वाले या न अच्छे होने वाले रोगियों के लक्षण और उपद्रव भी इसी समय प्रगट हो जाते हैं।

चौथे सप्ताह में रोगी बहुत कमजोर हो जाता है, उसका करवट बदलना भी कठिन होता है, उसके बदन में बिस्तर की रगड़ के कारण घाव हो जाते हैं, इस समय बड़ी सावधानी से सुश्रूषा करने की आवश्यकता पड़ती है। यदि रोगी आराम होने वाला होता है और रोग की अवस्था अनुकूल रहती है, तो धीरे-धीरे नीरोगिता के लक्षण प्रगट हो जाते हैं, ज्वर प्रायः उतर जाता है, भूख लगनी आरम्भ हो जाती है, जीभ साफ हो जाती है। गोकि रोगी कमजोर रहता है तो भी उसकी तबीयत हलकी रहती है इसी। समय रोगी की खास तौर से निगरानी रखनी पड़ती है जिसमें वह अपथ्य चीजें न खा पी ले।

इसी समय दुबारा ज्वर आने की या रिलैप्स होने की आशङ्का रहती है। ज्वर किसी भी दिन दुबारा आ सकता है।

चिकित्सा

रोगी को पूर्ण विश्राम करना चाहिए। रोगी चित्त लेटा रहे तो अधिक अच्छा है परन्तु बीच-बीच में उसके करवट बदलते रहना चाहिए जिसमें उसे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विशेष कष्ट न हो। इस रोग को दूर करने के लिए कोई ऐसी औषधि नहीं बनी है जो ज्वर को तुरंत उतार दे। इसलिए सामान्य ढंग का ही इलाज किया जाता है। रोगी की ताकत न घटे इसके लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता रहती है परन्तु जबतक दोष शान्त नहीं हो जाते तब तक भूख नहीं लगती।

इस रोग की चिकित्सा है उपवास। यदि कुछ भोजन के नाम पर देना हो तो दूध फाड़ कर उसका पानी दिया जा सकता है। सन्तरे या मोसम्बी का रस दिया जा सकता है। दूध इस रोग में अच्छा पथ्य नहीं है।

आयुर्वेदीय चिकित्सा

आयुर्वेदीय मत से प्रवाल, भस्म देने से आँतों की हालत ठीक रहती है। लक्ष्मीविलास रस देते रहने से ज्वर जल्द उतरता है और कोई उपद्रव नहीं होता। प्रवाल १ रत्ती, गुडूच का सत्त १ रत्ती और स्वर्ण माक्षिक भस्म आधी रत्ती एक मात्रा में तीसरे सप्ताह से देने से ज्वर निरुपद्रव उतर जाता है ऐसी ३-४ मात्रा रोज दी जा सकती है। बच्चों को इसकी आधी मात्रा दी जानी चाहिए। यदि रक्त-स्राव होने लगे तो उसे रोकने का प्रयत्न करना चाहिए। १०-१५ ग्रेन की मात्रा में कैलशिम लैकटेट देने से रक्त जम जाता है और गिरना बन्द हो जा सकता है। प्रवाल भस्म से यही काम हो सकता है। पेठे का रस देने से रक्त-स्राव बन्द हो सकता है। अतीसार के समान इलाज करना चाहिए। कर्पूर बटी से दस्त रुक जाते हैं।

यदि ज्वर अधिक तेज हो रहा हो तो गर्दन के पीछे जहाँ रीढ़ की हड्डी जुड़ी है उस स्थान पर बरफ की पट्टी रखनी चाहिए या सिर पर बरफ की पट्टी रखनी चाहिए। अथवा ठंडे जल से अङ्ग पोंछी करवा देनी चाहिए अथवा सारे शरीर की गीली पट्टी (होल बाडी कोल्ड पैक) देना चाहिए। यदि रोगी प्रलाप करता हो तो अवस्थानुसार मकरध्वज या कस्तूरी भैरव आदि दिया जा सकता है। यदि सन्निपातिक दशा हो तो उसी के अनुसार चिकित्सा होनी चाहिए। मकरध्वज का प्रयोग लाभदायक होता है।

रोगी को प्रायः प्रतिदिन ठंडे जल से एनिमा दे देना चाहिए। एनिमा ऐसा Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida देना चाहिए जिसमें पानी बहुत तेज न जाय, क्योंकि तेजी से गया हुआ पानी

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आँतों के घाव को हानिकर हो सकता है। प्रतिदिन गरम जल से अङ्ग पोंछी करा देनी चाहिए। रोगी का सिर भी ठंडे पानी से धुलवा दिया जा सकता है। ठंडे पानी से अंग पोंछी कर देने से ज्वर का वेग कम हो जा सकता है और रोगी को नींद आ जाती है। प्रलाप की दशा में पोटैशियम ब्रोमाइड देना डाक्टर लोग अच्छा समझते हैं। नींद लाने के लिए छोटा चन्द्रा दिया जा सकता है।

एलोपैथ डाक्टर आजकल क्लोरोमाइसे टिन का प्रयोग करते हैं और प्रायः ३-४ दिन में ज्वर उतर जाता है। वच्चों के लिए इसकी खुराक अलग आती है। मात्रा १ टेवलेट में चार खुराक। या पेदियाट्रिक ड्राप्स दे सकते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा

प्राकृतिक चिकित्सा की विधि से इलाज उसी विधि से होना चाहिए जिस तरह सव ज्वरों का इलाज होता है। उपवास, फलों का रस, एनिमा, स्पांजिग और गरम जल पीने के लिए वस। नीले वोतल का धूप में पकाया पानी आधी छटाँक हर दो घण्टे पर देते रहने से ज्वर दस्त आदि सभी उपद्रव ठीक रहते हैं। दोषों के पचने पर प्रलाप आदि भी स्वयं ठीक हो जाते हैं। रोगी का मुँह कुल्ले द्वारा या रुई गरम जल में भिगोकर रोज पोंछ देना चाहिए।

कच्चे नारियल का पानी टाइफाइड के लिए उत्तम पेय है। इसमें विटा-मिन भी रहते हैं और थोड़ी मिठास भी। इससे रोगी को थोड़ी शक्ति मिलती है और विटामिनों की प्राप्ति से स्वास्थ्य-लाभ जल्द होता है।

मसूरिका

चेचक को संस्कृत में मसूरिका कहते हैं। मसूरिका रोग का वर्णन सुश्रुत और चरक में भी मिलता है। सुश्रुत ने क्षुद्र रोगाधिकार में इसका वर्णन किया है और चरक ने शोथ रोग में; क्योंकि इस रोग में भी किंचित शोथ हो जाता है। चरक ने लिखा है—

या सर्व गात्रेषु मसूरमात्रा मसूरिका पित्त कफ प्रदिष्ठा।

(चरक चि० १२ अ०)

अर्थात् पित्तकफ के विकार से सारे शरीर में मसूर के आकार की मासूरिका निकलती है। सुश्रुत ने लिखा है—

Vinay Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दाह ज्वर रुजावन्तस्ताम्राः स्फोटाः सपीतकः ।
गात्रेषु वदने चान्तेविज्ञेयास्ता मसूरिका ।। (सु० नि० १३ अ०)

अर्थात् दाह, ज्वर और पीड़ा से युक्त लाल या पीले स्फोट सारे शरीर में मुँह पर और अन्दर निकलते हैं इनको मसूरिका कहते हैं ।

चरक और सुश्रुत के समय में यह रोग क्षुद्र समझा जाता था । यह रोग इतना कम होता था कि इसको कोई प्रधानता नहीं दी जाती थी । आज वही रोग घोर रूप धारण किये हुए है और प्रति वर्ष वसन्त और गरमी के दिनों में इस रोग का जितना प्रकोप रहता है उतना किसी रोग का नहीं रहता । यह रोग अब बच्चों और बड़ों दोनों को होता है और बड़ा गम्भीर होता है । इस रोग से मृत्यु भी बहुत होती है । किसी अन्य ऋषि ने इसके विषय में लिखा है—

पित्तं शोणित संसृष्टं यदा दूषयतित्वचम् ।
तदा करोति पिडिका सर्व गात्रेषु, देहिनाम् ।।
मसूर मुद्‌ग माषाणां तुल्या कोलोपमा अपि ।
मसूरिकास्तु ताज्ञेया पित्त रक्ताधिका बुधैः ।।

अर्थात् पित्त और रक्त मिलकर त्वचा में विकार उत्पन्न करके शरीर में पिड़िका उत्पन्न करते हैं । वह पिड़िका मूँग, मसूर, उड़द और बेर के आकार की हो सकती है । विद्वान् लोग उसे पित्त रक्त से उत्पन्न मसूरिका कहते हैं ।

मासूरिका के कारण

कट्वम्ल लवण क्षार विरुद्धाध्यशनाशनैः ।
दुष्ट निष्पाव शाकाद्यैः प्रदुष्टपवनोदकैः ।।१।।
क्रूर ग्रहेक्षणाच्चापि देशे दोषः समुद्धताः ।
जनयन्ति शरीरेऽस्मिन दुष्ट रक्तेन संगताः ।।२।।
मसूराकृति संस्थानः पिडिका स्युर्मसूरिकाः ।

अर्थात् कटु, अम्ल, लवण, क्षार, विरुद्ध भोजन, अध्यशन आदि कारणों से, सेम, दुष्ट शाक आदि के अधिक खाने से वात पित्त कफ आदि दोष कुपित होते हैं, तथा देश के ऊपर ग्रह शनिश्चर आदि की दृष्टि पड़ने से भी दोष कुपित हो जाते हैं और दुष्ट रक्त से मिलकर शरीर में मसूर के आकार की पिड़िका उत्पन्न करते हैं उसी को मसूरिका कहते हैं । भोजन के ऊपर फिर भोजन करने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

को अध्यशन कहते हैं ।

कटु, अम्ल, लवण, क्षार, विरुद्ध भोजन और अध्यशन से रक्त की अम्लता बढ़ती है, क्षारता घटती है, साथ ही रोग निवारक शक्ति भी घट जाती है, रक्त में अम्लता बढ़ने से रोग निवारक शक्ति क्षीण होती है और दोष विषम हो जाते हैं। अम्ल शब्द रख कर अम्ल विपाक वाले भोजनों की ओर भी संकेत किया गया है । मैदा, चीनी, गुड़ खनिज लवणों से हीन भोजन, विटामिनों से हीन भोजन ये सब अम्ल विपाकी होते हैं । और रक्त में अम्लता बढ़ाते हैं । इसी को पित्त की वृद्धि कहते हैं ।

मसूरिका का पूर्वरूप

तासां पूर्वं ज्वरः कण्डूर्गात्र भङ्गोऽरतिभ्रंमः ।
त्वचि शोथः सवैवर्ण्यो नेत्र रागश्च जायते ॥

जब यह रोग होने वाला होता है तब पहले ज्वर होता है । किसी-किसी को ज्वर बहुत तीव्र हो जाता है, रोगी प्रलाप आदि भी करता है, सन्निपात की सी दशा हो जाती है । दो-तीन दिनों में ज्वर उतर जाता है और दाने निकल आते हैं । शरीर में तोड़ने की सी पीड़ा होती है, बेचैनी होती है, भ्रम होता है, चक्कर आता है, त्वचा में किंचित शोथ हो जाता है, रङ्ग कुछ विशिष्टता लिये हुए हो जाता है और आँखें लाल हो जाती हैं । किसी-किसी में कण्डू, शोथ और विवर्णता बिलकुल ही नहीं प्रगट होते ।

वात,पित्त, कफ, रक्त और सन्निपात इन कारणों से पाँच प्रकार की मसूरिका होती है । इन सब के अलग-अलग लक्षण शास्त्र में लिखे हैं । रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र स्थानों में होने से ७ प्रकार की मसूरिका और होती है और सब के अलग-अलग लक्षण होते हैं । इन सब लक्षणों के लिखने से विस्तार बहुत बढ़ जायगा ।

मोटे तोर से माता दो प्रकार की होती हैं छोटी माता और बड़ी माता । छोटी माता के दाने छोटे होते हैं, दाने कम निकलते हैं, ज्वर भी इसमें कम रहता है । रोग की शान्ति भी जल्दी हो जाती है । बड़ी माता या स्माल पाक्स में दाने बड़े-बड़े निकलते हैं और बहुत घने निकलते हैं । ज्वर का वेग बहुत तीव्र होता है । दाह प्रलाप आदि अधिक होते हैं, रोग देर में जाता है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रोमान्तिका नामक एक माता और निकलती है एलोपैथी मैं उसे मीजिल्स कहते हैं—

रोमकूपोन्नतिं समा रागिण्यः कफ पित्तजाः।
कासारोचक संयुक्ता रोमान्त्यो ज्वर पूर्विका ॥

कफ पित्त से उत्पन्न रोम कूपों के आकर की लाल रङ्ग की रोमान्तिका निकलती है। इसमें खाँसी, अरुचि, उपद्रव स्वरूप उत्पन्न हो जाते हैं। प्रायः तीन दिनों में यह रोग शान्त हो जाता है। इसमें भी पहले ज्वर होता है।

साध्यासाध्य लक्षण

वायु से उत्पन्न, वात पित्त से उत्पन्न तथा कफ से उत्पन्न मासूरिका कष्ट-साध्य है । सन्निपात से उत्पन्न असाध्य होती है। सन्निपात से उत्पन्न कोई मसूरिका प्रवाल के सदृश लाल रङ्ग की और वड़ी होती है, कोई जामुन के फल के समान वड़ी और काली होती है, कोई लोह जाल के समान, लोहे की गोली के समान, काली होती है कोई अलसी के फूल के समान नीली होती है। दोष भेद से यह अनेक प्रकार की होती है और असाध्य है।

कासो हिक्का प्रमोहश्चज वरस्तीव्रः सुदारुणः।
प्रलापश्चारति मूर्च्छा तृष्णा दाहोऽतिघूर्णता ॥
मुखेन प्रस्त्रवेद्रक्त तथा घ्राणेन चक्षुषा।
कंठे घुघु रकं कृत्वा श्वसित्यत्यर्थं वेदनम् ॥
मसूरिकाभिभूस्य यस्मैंतानि भिषग्वरैः।
लक्षणानि च दृष्यन्ते न दद्यात् तत्र भेषजम् ॥

अर्थात् खाँसी, हिचकी, प्रमोह, ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान नाश, एवं ज्वर तीव्र हो, दारुण प्रलाप हो, वेचैनी हो, मूर्च्छा हो, प्यास हो, दाह हो, मुख से, आँख से तथा नाक से रक्त गिरे, कण्ठ घरघराते हुए कष्ट के साथ साँस ले। मसूरिका से पीड़ित रोगी यदि इन लक्षणों से युक्त हो तो चिकित्सा नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह असाध्य लक्षण है।

एलोपैथी मत से चेचक

चेचक दो प्रकार की होती है छोटी माता और वड़ी माता। छोटी माता को अंगरेजी में चिकेन पाक्स और वड़ी माता को स्माल पाक्स कहते हैं। दोनों

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
प्रकार की माता प्रायः एक ही प्रकार की होती है। छोटी माता कम सांघातिक है एवं बड़ी माता अधिक। दोनों भेदों को हम नीचे दे रहे हैं। एक माता और होती हैं उन्हें खसरा या मीजिल्स कहते हैं। इसे देशी भाषा में दुलारमती कहते हैं।

चिकेन पाक्स

यह छूतदार रोग है और एक प्रकार के कीटाणु से इसकी उत्पत्ति मानी जाती है। इस रोग की छूत कपड़ों से या हवा से लग जाती है। जब यह रोग होने को होता है तब ज्वर होता है, सिर में दर्द होता है पीठ में दर्द होता है और किसी-किसी को कै या वमन होती है। आँखों में पानी भर-भर आता है। दाने पहले हाथ पर निकलते हैं या मुँह या छाती अथवा पीठ पर निकलते हैं। कभी-कभी इन स्थानों पर केवल ललाई ही दृष्टि-गोचर होती है। फिर दाने निकलते हैं फिर सारे शरीर में दाने निकल आते हैं। ये दाने पकते हैं और मवाद या पानी भर जाता है दाने फफोले का रूप धारण कर लेते हैं। दाने जब पूरे निकल आते हैं तब ज्वर बढ़ जाता है क्योंकि पीड़ा बढ़ जाती है। फिर दाने मुरझाने लगते हैं, पानी सूखने लगता है। जिस क्रम से दाने निकलते हैं उसी क्रम से उनमें नीर भरता है। फिर मवाद सूख जाती है और पपड़ी पड़ जाती है और एक सप्ताह के बाद पपड़ी छूट कर निकल जाती है। फिर एक पपड़ी या खुरंट और छूटती है। उसके बाद एक पतली पपड़ी और छूट जाती है और शरीर पर बदसूरत दाग रह जाते हैं। जब पपड़ी या खुरंट छूटती है तभी उसके साथ रोग के कीटाणु हवा में फैलते हैं और संक्रमण करते हैं। उसी समय यह रोग घर वालों में भी स्थान जमाता है। बहुत से बच्चे नीर भरने के समय और कुछ बच्चे दाने निकलने के समय में ही चल बसते हैं। यही छोटी माता कहलाती हैं। शरीर में रोगाणु प्रवेश करने तथा रोग के प्रगट होने में १२ दिन से १६ दिनों का समय लगता है।

स्माल पाक्स

यह रोग चिकेन पाक्स का ही भेद है। कीटाणुओं से इसकी भी उत्पत्ति मानी जाती है, छूत लगने पर रोग होने में लगभग १२ दिन लग जाते हैं। सिहरन, सिर दर्द और जोरों के ज्वर के साथ ही रोग का आरम्भ होता है।
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
ज्वर के एक दो दिन बाद मुंह पर और हाथ में चमड़े के अन्दर छोटी-छोटी लाल गोटियाँ ज्ञात होती हैं फिर सारे शरीर में फैल जाती हैं। इस समय किसी-किसी का ज्वर गायब हो जाता है। परन्तु आठ दिनों बाद गोटियाँ बड़ी हो जाती हैं और उनमें नीर या मवाद भर आता है उस समय दर्द बढ़ जाने के कारण फिर ज्वर तेज हो जाता है। यदि रोगी बचने वाला होता है तो दाने सूखने लगते हैं और पपड़ी पड़ जाती है और यह पपड़ी सूख जाती है। इस रोग में एक प्रकार की वदबू बदन से निकलती है। वह मवाद के कारण होती है। जब माता अच्छी हो जाती है तब इसका दाग शरीर पर पड़ जाता है। प्रायः बारह दिनों में दाने सूखते हैं, १५ दिनों में पपड़ी छूटती है और ३ सप्ताह में रोग दूर होता है। यदि गम्भीर रूप होता है तो कई दाने आपस में सट जाते हैं और दानों का आकार बहुत बड़ा होता है। इसी रोग से मृत्यु-संख्या अधिक होती है। इस माता के दाग जीवन भर रह जाते हैं।

मीजिल्स

यह रोग गर्म देश में अधिक होता है। यही कारण है कि हमारे देश में यह बहुत होता है। जाड़े के दिनों में इसका प्रकोप नहीं होता परन्तु गर्मी के दिनों में खूब होता है यही कारण है कि फाल्गुन से ही इस रोग का उभाड़ शुरू हो जाता है।

इस रोग की उत्पत्ति भी कीटाणुओं से होती है। यह भयानक छूत का रोग है। छोटे बच्चों को यह रोग बहुत होता है और बहुत से बच्चों की मृत्यु का कारण यही रोग होता है। छूत लगने के १४ दिनों बाद यह रोग उभड़ता है। सिर का जुकाम, सूखी खाँसी और हलके ज्वर के साथ रोग उत्पन्न होता है। आँखों में आँसू बहुत आते हैं और नाक बहती है। इसके बाद मुँह लाल पड़ जाता है और गर्दन भी लाल हो जाती है। लाल ज्वर में भी बदन का रङ्ग लाल हो जाता है। यह ललाई इसलिए रहती है कि त्वचा के नीचे छोटे-छोटे दाने रहते हैं। यह दाने ऊपर हो जाते हैं। किसी-किसी में यह दाने बाहर से नहीं दिखाई पड़ते हैं। गर्दन के बाद पीठ-पेट और पैरों में लालिमा होती है और सबसे अन्त में हाथों में होती है। दाने निकल आने के बाद भी थोड़ा ज्वर बना रहता है। इस रोग में निमोनिया, ब्रोंकाइटिस और सूखी
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
खाँसी अकसर हो जाती है। इस रोग में माता के दानों में मवाद नहीं पड़ता, दाने यों ही मुरझा जाते हैं और दव जाते हैं। अन्त में चमड़े पर से भूसी सी छूट जाती है।

जर्मन मीजिल्स नाम से एक प्रकार की मीजिल्स और होती है उसमें भी प्रायः वैसे ही लक्षण होते हैं। जो ऊपर लिखे गये हैं किन्तु इस जर्मन मीज़िल्स में दाने किंचित वड़े होते हैं। और साधारण मीज़िल्स में वहुत छोटे होते हैं। वस्तुतः मीज़िल्स और जर्मन मीज़िल्स में भेद करना वहुत ही कठिन है। एक प्रकार की मीज़िल्स और होती है उसमें दाने काले निकलते हैं। यह काले दाने वाली मीज़िल्स वहुत कम लोगों को होती है परन्तु बड़ी भयानक होती है। मीज़िल्स को साधारण बोल-चाल की भाषा में दुलारमती माता कहते हैं। यदि इसके दाने नहीं निकल पाते तो वच्चे मूर्ख से प्रतीत होते हैं उनमें चैतन्यता रह ही नहीं जाती, वे सुस्त रहते हैं और अक्सर मर भी जाते हैं। मीज़िल्स में आँखें कमजोर हो जाती हैं क्योंकि वाहरी नसों पर रोग के कारण दवाव पड़ता है। इसलिए इस रोग के इलाज में आँखों की रक्षा का प्रवन्ध करना चाहिए।

चिकित्सा

चेचक का इलाज उसी प्रकार होना चाहिए जिस प्रकार ज्वर का होता है। इस रोग में उपवास करना चाहिए और सुवह-शाम दोनों समय गरम जल का एनिमा देना चाहिए। खाने-पीने के नाम पर केवल संतरे का रस देना चाहिए। यदि सन्देह हो कि दाने ठीक तरह नहीं निकले हैं तो स्टीम वाथ देना चाहिए। रुके हुए सव दाने भाप स्नान से वाहर आ जाते हैं। पीने के लिए गरम पानी देना चाहिए। शुरू में जीभ पर मैल वहुत जमती है जव जीभ पर मैल न जमे तव उसे केवल फल खाने को देना चाहिए। फलों में सेव, अंगूर, अनार आदि अथवा वे मौसमी फल जो पथ्य हों दिये जा सकते हैं। जव रोग निर्मूल हो जाय तव क्रमशः रोटी सब्जी देना आरम्भ करना चाहिए और धीरे-धीरे मात्रा वढ़ानी चाहिए फिर वच्चों के लिए उचित भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए जिसमें शरीर में जहर दुवारा न इकट्ठा होने पावे।

वड़ी माता और छोटी माता में खुजली वहुत होती है इसलिए सदैव इस बात
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चा खुजलाने न पावे। खुजला देने से घाव बड़े हो जाते हैं और बहुत विलम्ब से अच्छे होते हैं। स्माल पाक्स में तो दाने आँख के भीतर तक निकल आते हैं और अगर असावधानी हो जाय तो आँख भी फूट जाती है। आँख में मक्खन लगाना अच्छा होता है। नीम के पानी से धोकर आँख पोंछ कर साफ करके मक्खन लगाने से घाव जल्द अच्छे होते हैं। चिकेन पाक्स में आँख के लिए ऐसा कोई भय नहीं रहता। माता के दाने केवल शरीर के बाहर ही नहीं निकलते, गला, छाती और आँतों तक में निकलते हैं। इसलिए बड़ी सावधानी के साथ इलाज करने की आवश्यकता रहती है। यदि बच्चा बहुत तंग करे और बिना खाये न माने तो उस हालत में थोड़ा दूध या फटे दूध का पानी दिया जा सकता है।

इस रोग में रोगी जो कुछ माँगता है औरतें प्रायः दे देती हैं। यह चलन हानिकारी है। तरकारी छौंकना और तेल घी लगाना जो इस रोग में मना है इसका कारण यही है कि इनके द्वारा रोग का संक्रमण न हो। यदि रोग के आरम्भ में खाँसी का जोर बहुत रहे तो चेष्ट पैक (छाती पर गीले कपड़े की पट्टी) रखनी चाहिए।

दाने जब सूखने लगें तब खुजली से बचाने के लिए उस पर मक्खन या दूब का रस, हल्दी और तिल का तेल का लगाया जा सकता है।

मीज़िल्स और जर्मन मीज़िल्स की भी वही चिकित्सा है जो ऊपर लिखी है। रोगी के पास भीड़ नहीं लगने देना चाहिए उसका कमरा स्वच्छ और हवादार होना चाहिए। खिड़की पर लाल वस्त्र टाँगने से उससे छन कर सूर्य की किरणें आती हैं और आल्ट्रावायलेट किरणें पहुँचती हैं जिससे रोगी को बड़ा आराम मिलता है। जिन लोगों की तन्दुरुस्ती खराब हो और छूत लगने का डर हो उन्हें रोगी के पास नहीं जाने देना चाहिए।

यह रोग बच्चों को पूड़ी, पराठे, हलुआ, जलेबी. बिसकुट, टाफी आदि अधिक खिलाने से ही होता है। क्योंकि ये पदार्थ शरीर में विजातीय पदार्थ पैदा करते हैं। ये कफकारी पदार्थ हैं और विष पैदा करते हैं वह विष ही इस रोग का कारण है। मीजिल्स आदि तो इसलिए होते ही हैं कि शरीर से विष निकल जाय।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आयुर्वेदीय चिकित्सा

मसूरिका रोग में पहले वमन कराना चाहिए। वमन कराने के लिए परवल के पत्र, नीम की छाल और अड़ूसा इन के काढ़े में वच, इन्द्र जौ, मुलहठी और मैनफल का चूर्ण उचित मात्रा में मिला कर पिला कर वमन कराना चाहिए। वमन कराने पर दूसरे दिन विरेचन देना चाहिए इस प्रकार विष निकल जाने से मसूरिका स्वयं शान्त हो जाती है। जो लोग दुर्बल हों उनको शमन औषधि देनी चाहिए। यथा—

सर्वासां वमनं पूर्व पटोलारिष्ट वासकैः।
कषायश्च वचा वत्स यष्ट्याह्व फल कल्कितै॥
वान्तस्य रेचनं देयं शमन त्ववले नरः।
उभाभ्यां हृत दोषस्य विशुध्यन्ति मसूरिका॥

वमन कराने के लिए ब्राह्मी का रस भी शहद से दिया जाता है। प्राचीन चिकित्सक दोषों को निकालने के लिए कितने प्रयत्नशील रहते थे, ध्यान में रखने की यही बात है। कमजोर रोगियों को विरेचन के बदले एनिमा दिया जा सकता है। तथा अन्य सरल उपाय द्वारा चिकित्सक दोषों को बाहर निकाल सकता है। गरम जल में नमक मिला कर पिलाने से भी वमन हो जाती है।

जिस दोष की प्रबलता हो उसी दोष के अनुसार चिकित्सा करने की आवश्यकता रहती है। बहुत से प्राचीन चिकित्सक इस रोग में तथा शीतला रोग में चिकित्सा करना उचित नहीं समझते थे। कुछ चिकित्सक चिकित्सा करने की सलाह देते हैं। रोगी को शुद्ध रखना, रोगी के पास अशुद्ध व्यक्तियों को न जाने देना, तथा रोगी के पास जूता आदि न जाने देना आवश्यक है। रोगी को नीम के पत्तों के पंखे से हवा देना चाहिए। रोगी को अपथ्य भोजन नहीं देना चाहिए। शुद्ध जल आदि की व्यवस्था रखनी चाहिए। यदि जल की शुद्धि में सन्देह हो तो गरम करके ठण्डा करके वही जल देना चाहिए। इस रोग में गरम जल मना है। मुनक्के का पानी दिया जा सकता है। मिट्टी के बर्तन में मुनक्का या किशमिश भिगो देना चाहिए और मसल कर छान कर वही पानी देना चाहिए।

अनन्त मूल, चावल के धोवन के साथ पीस कर चटाना चाहिए। इससे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
रक्त शुद्ध होता है और मसूरिका शान्त होती है।

क्वाथ

परवल के पत्र, गुडुच, नागरमोथा, अडूसा, धमासा, चिरायता, नीम की अन्तर छाल, कुटकी, पित्तपापड़ा इन सबको समान भाग लेकर दो तोला लेना चाहिए और आध सेर पानी में काढ़ा बनावे और आध पाव पानी रहने पर उतार करके ठण्डा करके रोगी को पिलाना चाहिए। इससे मसूरिका में बहुत उपकार होता है। इससे बिना पकी मसूरिका शान्त हो जाती है और पकी हुई शुद्ध हो जाती है। यह औषधि रात को भिगोकर सुबह छान कर भी दी जा सकती है। बच्चों के लिए मात्रा अल्प होनी चाहिए।

चन्दन, अडूसा, नागर मोथा, गुडुच और मुनक्का इनको सम भाग लेकर पानी में भिगो कर और छान कर पिलाने से शीतला ज्वर शान्त हो जाता है।

इस रोग में प्राकृतिक चिकित्सा से विशेष काम लेना चाहिए। सामान्य औषधियों का ही उपयोग करना चाहिए। हमने अधिक औषधियाँ इस रोग में इसलिए नहीं लिखीं कि प्रायः इस रोग में औषधियाँ नहीं दी जाती हैं।

कोई शीतला बिना कष्ट के सुख से शान्त हो जाती है। कुछ शीतला बड़ी भयानक होती हैं और कष्ट से जाती हैं और कुछ ऐसी होती हैं कि वह अच्छी हो जायँ अथवा न भी अच्छी हो। कुछ ऐसी होती हैं कि लाख प्रयत्न करने पर भी आराम नहीं होती हैं।

पथ्यापथ्य

मसूरिका रोग में भारी अन्न, तैल मालिश, परिश्रम करना, पसीना दिलाना, और वायु, क्रोध, धूप, अम्ल और कड़वे रसवाली चीज तथा पाखाना पेशाब आदि वेगों का रोकना अपथ्य है। केला, द्राक्षा, दाडिम, दूध, शीतल जल, कपूर मिला जल आदि पथ्य हैं। जब अन्न देने की अवस्था आवे तब मूँग की दाल का पानी, केले की उबली तरकारी आदि दी जा सकती है। फिर गेहूँ की रोटी, पुराना चावल आदि की व्यवस्था करनी चाहिए। मसूर, मूँग, चना आदि का जूस भी दिया जा सकता है। जो शीतला फूट जाय उस पर जङ्गली कण्डे की राख छिड़कनी चाहिए। आँखों में यदि विकार हो तो आँखों को हलका सेंकना चाहिए। मक्खन का लेप भी आराम देता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

डिफ्थीरिया

आयुर्वेद में रोहिणी नामक एक रोग का वर्णन है। वह गले में होता है, उसका समावेश डिफ्थीरिया में हो जाता है। उसकी सम्प्राप्ति में लिखा है—

गलेऽनिलः पित्त कफौ च मूर्च्छितौ प्रदूष्यमांसं च तथैव शोणितम्।
गलोपसंरोध करैस्तथांकुरै निहत्यसून व्याधिरियंतु रोहिणी॥

अर्थात् गले में पित्त वायु और कफ मूर्च्छित हो करके रक्त और मांस को दूषित करके गले को घेर लेने वाले या रोक देने वाले अंकुर या झिल्ली उत्पन्न कर देते हैं यह रोहिणी रोग है और शीघ्र ही प्राणों का नाश करने वाला है। यह त्रिदोष—वात पित्त और कफ के बिगड़ने से उत्पन्न होता है। इसी कारण शीघ्र मारक है। त्रिदोषात्मक होने पर भी जिस दोष की विशेषता होती है उसी दोष के नाम से रोग माना जाता है। एलोपैथी के जितने लक्षण हैं सब ऊपर के एक श्लोक में ही आ गये हैं। यह रोहिणी, रोग पाँच तरह का होता है वातज रोहिणी, पित्तज रोहिणी, कफज रोहिणी, सन्निपातज रोहिणी और रक्तज रोहिणी।

वातज रोहिणी

इसमें जीभ में चारों ओर वेदना होती है कण्ठ को रोक देने वाले मांसांकुर या भिल्ली उत्पन्न हो जाती है और वायु सम्बन्धी अनेक उपद्रव हो जाते हैं, आक्षेप (कनवलशन) आदि वात के उपद्रव हैं।

पित्तज रोहिणी

यह बड़ी जल्दी बढ़ती है, जल्दी ही पकती है इसमें ज्वर बहुत तेज हो जाता है, इसी रोग में ज्वर १०४-५·६ डिग्री तक जाता है।

कफज रोहिणी

यह धीरे-धीरे बढ़ती है, देर में पकती है एवं ज्वर बहुत हल्का रहता है।

सन्निपातज रोहिणी

इसमें तीनों दोषों के लक्षण उपस्थित रहते हैं अर्थात् ज्वर तेज, विक्षेप, जुकाम, अरुचि आदि होते हैं। यह रोग वेग से बढ़ता है और रोके नहीं रुकता। यह रोग बड़ा गम्भीर है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रक्तज रोहिणी

इसमें पित्त के से लक्षण होते हैं, यह असाध्य है और इसमें स्फोट या फफोले निकल आते हैं।

इस रोग के साध्य-असाध्य के सम्बन्ध में यह ऋषियों का निर्देश है—

सद्यः त्रिदोपजा हन्ति, त्र्यहात्कफ समुद्भवा।
पंचाहात् पित्त सम्भूता सप्ताहात् पवनोत्थिता ।।

आरम्भ में ही अच्छी चिकित्सा से वातज, पितज और कफज रोहिणी अच्छी हो सकती हैं। यदि देर की जाय और उचित चिकित्सा की व्यवस्था न हो सके तो कफज तीन दिनों में, पित्तज ५ दिनों में, और वातज ७ दिनों में असाध्य हो कर मारक हो जाती है। परन्तु सन्निपातज रोहिणी आरम्भ से ही असाध्य है। अतः इसकी चिकित्सा ही नहीं है, यह सद्यः मारक है। फिर भी पथ्य की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। सम्भव है भाग्य से रोगी वच जाय।

डिफथीरिया—एलोपैथीमत

डिफथीरिया गले का रोग है बच्चों को यह बहुत अधिक होता है परन्तु बड़ों को भी हो सकता है। आरम्भ में इस रोग का पता नहीं लगता। क्योंकि अकसर ऐसा होता है कि डिफथीरिया के आरम्भ में टांसिल में भी कुछ विकार आ जाता है और चिकित्सक आरम्भ में यही समझने लगता है कि टांसिल बढ़ रहे हैं।

इस रोग का प्रादुर्भाव कभी तो बहुत हलका होता है और कभी बड़ा सांघातिक होता है। इस रोग में अकसर हलका ज्वर आता है। गले में खराश रहती है और शक्ति क्षीणता के साथ-साथ कमजोरी रहती है। गले में टांसिल में प्रदाह रहता है और वह लाल रहता है। अकसर एक ही टांसिल में प्रदाह रहता है, दोनों में प्रदाह हो ऐसा बहुत कम देखने में आता है। एक टांसिल पर एक झिल्ली दिखाई पड़ती है। इसका रङ्ग भूरा राख के रङ्ग का या ब्राउन किंचित लाल रङ्ग का होता है। यह झिल्ली किसी में मोटी होती है किसी में पतली होती है। इसका आकार छोटा ही होता है परन्तु यह बढ़ती है। ऐसा भी सम्भव हैं कि यह झिल्ली बहुत न बढ़े और यह भी सम्भव है कि झिल्ली बढ़ कर पूरे गले को ढक ले। यह बढ़कर नाक के छेद में प्रवेश कर सकती है और सांस

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लेने के लिए हवा न मिलने के कारण प्राण निकल जाना सम्भव है। ऐसा भी सम्भव है कि झिल्ली बढ़कर गले के नीचे लेरिंग्स में भी चली जाय। यह भी सम्भव है कि झिल्ली एक टांसिल पर ही रह जाय और बढ़े नहीं।

डिफथीरिया का एक रूप और होता है। उसमें यह झिल्ली नहीं उत्पन्न होती, परन्तु टांसिल में प्रदाह हो जाता है, ज्वर रहता है और गले में डिफथीरिया के कीटाणु मिलते हैं। रोगी में कमजोरी रहती है। नाक में जब रोग का संक्रमण हो जाता है तब गले की ग्रंथियाँ विशेष रूप से बढ़ जाती हैं। रोगी में रक्त की कमी के लक्षण दिखाई पड़ने लगते हैं, दुर्बलता बढ़ जाती है रक्त की कमी से शरीर पीला पड़ जाता है। दुर्बलता इतनी अधिक बढ़ती है कि हृदय भी कमजोर हो जाता है और हृदय की गति रुक जाने से भी मृत्यु होने का डर रहता है।

गले की तालु में इस रोग का संक्रमण होता है ऐसी दशा में उस पर सफेद, पीला या हरा धब्बा पड़ जाता है।

जब लेरिंग्स में विकार चला जाता है तब उसे लेरिंजियल डिफथीरिया कहते हैं और जब नाक में चला जाता है तब नाक का डिफथीरिया या नाज़ल डिफथीरिया। इस रोग का प्रारम्भ हल्के जुकाम, गले में खराश, हल्की खाँसी के साथ होता है और ज्वर बहुत थोड़ा रहता है। नब्ज काफी तेज और कमजोर रहती है, उसे देखते हुए ज्वर कहीं कम होता है। इस रोग की उत्पत्ति क्लेब्स लोएफ़लर नामक कीटाणु से मानी जाती है। रोग का संक्रमण होने के दो दिनों से लेकर १० दिनों के भीतर रोग उत्पन्न हो जाता है परन्तु अकसर चौथे दिन ही रोग उत्पन्न हो जाता है।

रोग के मुख कीटाणु चूमने, बात करने, हँसने, खाँसने और छींकने आदि कारणों से एक से दूसरे को लगते हैं। वायु के द्वारा भी रोग के कीटाणु एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँच जाते हैं और दूध आदि के द्वारा भी कीटाणुओं का संक्रमण होता है। दूसरे की रुमाल आदि इस्तेमाल करने से भी यह रोग संक्रमण कर सकता है। आरम्भ में इस रोग में जुकाम या खाँसी नहीं होते बल्कि ज्वर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

एलोपैथ चिकित्सक रोगों की उत्पत्ति कीटाणु से ही मानते हैं। परन्तु जब

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तक उन कीटाणु को पनपने देने के लिए पहले से शरीर में विकार नहीं रहता ये कीटाणु शरीर में जा कर भी रोग नहीं उत्पन्न कर पाते। बहुत से बच्चों में और बड़े लोगों में भी डिफथीरिया के कीटाणु काफी मात्रा में मिलते हैं परन्तु सब को डिफथीरिया का रोग नहीं होता है। रोग केवल उन्हीं को होता है जिनके अन्दर गलत तरीके के भोजन के कारण विकार भरा है, खनिज लवण और विटा-मिनों से रहित भोजन करने के कारण जिनके रक्त की अम्लता बढ़ गई है, जिनके शरीर में जीवनी शक्ति का ह्रास हो गया रहता है वे ही कीटाणुओं से रोगी होते हैं। अतः किसी भी रोग से बचने के लिए यह आवश्यक है कि शरीर की जीवनी शक्ति बढ़ाई जाय, उचित आहार विहार द्वारा शरीर निर्विष रखा जाय, रक्त में अम्लता न आने दी जाय।

जो कृत्रिम झिल्ली बनती है उसमें मवाद, रक्त कणिका, दैहिक सूत्र और मरे हुए कीटाणु प्रभृति रहते हैं। आरम्भ में यह झिल्ली नरम रहती है फिर कड़ी हो जाती है और पीली पड़ जाती है रोग यदि भयङ्कर हो तो यह झिल्ली श्याम वर्ण भी हो जाती है। बीमारी यदि बहुत अधिक बढ़ जाय तो रोगी प्रलाप करता है, ज्वर १०५ से १०७ डिग्री (४१.१ सें० ग्रे० से लेकर ४१.७ सें० ग्रे०) तक बढ़ जाता है।

रोग के अन्त में कभी-कभी लकवा मार जाता है। कुछ दिनों तक गले के नीचे कष्ट रहता है, नाड़ी की गति घट जाती है। ४० या ५० प्रति मिनट रह जाती है। मूत्राघात और मूत्र कृच्छ्र भी हो जाता है। कभी-कभी दृष्टि में विकार आ जाता है और एक ही चीज दो दिखाई पड़ती है।

भयानक लक्षण

मुंह और नाक से मांस के धोवन जैसा पानी निकलने लगता है, कमजोरी बहुत बढ़ जाती है। नाड़ी की गति क्षीण हो जाती है परन्तु चाल जल्दी-जल्दी हो जाती है, बालक का होश हवास ठीक नहीं रहता, ज्वर का वेग तेज़ होता हैं बच्चे को बेहोशी रहती है। श्वास रुक कर चलती है यदि बच्चा रोना चाहे तो रो नहीं सकता परन्तु मुख स्याह पड़ जाता है। ऐसे लक्षण वाले बालकों के बचने की कम आशा रहती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चिकित्सा

डिफथीरिया के इलाज के लिए डिफथीरिया का एक प्रतिविष आविष्कृत हुआ है। उसके इन्जेकशन से कहीं-कहीं आश्चर्य-जनका लाभ होता है।

यदि रोग बढ़ने के पहले ही यह इन्जेक्शन लग जाय तो रोगी प्राय ठीक हो जाते हैं। जैसे ही गले में दाग या झिल्ली निकलने लगे और दिखाई दे फ़ौरन डाक्टर को दिखाना चाहिए। इस रोग में देर करने से या आज-कल करने से रोग बढ़ जाता है और उस इन्जेक्शन से भी लाभ नहीं होता। पहले १०० रोगी में २५-५० मर जाते थे। अब इसके आविष्कार से मृत्यु-संख्या घट गई है और डाक्टरों का ख्याल है कि १० प्रति शत रोगी ही मरते हैं। यह औषधि घोड़े में यह रोग उत्पन्न करके उसके रक्त-रस से वैज्ञानिक विधि से तैयार की जाती है।

परन्तु इस प्रतिविष से जितने लोगों को लाभ दिखाई पड़ता है उससे कहीं अधिक लोगों को नुकसान होता है। बहुत से बच्चे ही नहीं जवान लोग भी इस प्रतिविष के प्रभाव से मरते देखे गये हैं क्योंकि शरीर में प्रविष्ट होकर यह विष का ही प्रभाव अकसर दिखाता है। लोग मरते हैं विषैली औषधि के प्रभाव से और उनसे यह कहा जाता है कि ज्वर के कारण उनकी मृत्यु हो गई। किसी भी प्रकार का सीरम—रोग का पीप—शरीर में प्रवेश करना प्राकृतिक नियम के विरुद्ध है, विशेष करके बचपन में तो किसी भी रोग का सीरम शरीर में प्रवेश करना मनुष्यता के साथ शत्रुता करना है। रोग का सीधा प्राकृतिक इलाज इस प्रकार होना चाहिए।

प्राकृतिक चिकित्सा

बच्चे को उपवास कराइए। उपवास में सन्तरे का रस दीजिए अथवा मिल सके तो अनन्नास का रस दीजिए। दूध बिलकुल ही बन्द कर दीजिए। सवेरे और शाम दोनों समय गरम जल का एनिमा दीजिए। रोगी को चित मत लेटने दीजिए, उसे करवट लिटाइए जिस बगल डिफथीरिया का रोग हुआ है, जिधर झिल्ली बढ़ रही हो। जरूरत पड़े तो गरम पानी पीने को दीजिए। हर दो घंटे पर गले का पैक दीजिए। गले पर गीला कपड़ा लपेटकर ऊपर से फलालैन लपेट दीजिए। आप देखेंगे कि रोग घट रहा है और बच्चे का स्वास्थ्य लौट रहा है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

लहसुन का रस निकाल कर उसमें थोड़ा सा गरम जल मिला कर गले में

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

झींसी मारने (स्प्रे) से बहुत लाभ होता है। परन्तु यह झींसी मारने की क्रिया प्रत्येक १५-२० मिनट पर करनी चाहिए। अथवा बच्चा बड़ा और समझदार हो तो उसके मुँह में लहसुन का जवा डाल देना चाहिए और बच्चे से कह देना चाहिए की थोड़ा-थोड़ा कुचल कर लहसुन का रस हर समय गले में पहुँचाता रहे और हर घंटे या आधे घंटे पर लहसुन का जवा बदलते रहना चाहिए। लहसुन के प्रयोग से झिल्ली बढ़ती नहीं, रुक जाती है और धीरे-धीरे रोग के कीटाणु भी नष्ट हो जाते हैं तथा गले की ग्रन्थियों का प्रदाह शान्त हो जाता है और डिफथीरिया का रोग दबने लगता है।

अदरक और नमक डाल कर पानी गरम करके और उसकी भाप लेने से तथा उसी पानी से गरारा देने से भी लाभ होता है।

जब रोग शान्त हो जाय, प्रदाह मिट जाय तब बच्चे को फल खाने को देना चाहिए और तीन दिन या आवश्यकतानुसार अधिक दिन भी फलाहार कराने के बाद धीरे-धीरे रोटी-सब्जी पर आना चाहिए और बच्चे को उचित आहार की व्यवस्था करनी चाहिए और इस प्रकार का शुद्ध भोजन देना चाहिए जिसमें शरीर में फिर विकार न इकट्ठा होने पावे।

डिफथीरिया के इलाज में किसी अनुभवी चिकित्सक से परामर्श और सहायता लेना अच्छा है। जहाँ कोई सहायता मिलनी सम्भव न हो वहीं स्वयं इलाज हाथ में लेने का प्रयास करना चाहिए।

जो लोग कीटाणुओं को मारने का प्रयत्न करते हैं वे औषधियों द्वारा रोग के कीटाणुओं का नाश तो कर डालते हैं किन्तु विषैला अंश जो शरीर में पैदा हो गया रहता है, अथवा वह कीटाणु स्वयं जो विष उत्पन्न कर देता है उसे दूर करने का कोई भी उपाय वे नहीं करते अतः भविष्य में और भी भयानक रोगों के उत्पन्न होने के लिए क्षेत्र तैयार कर दिया जाता है।

यदि रोग की रुकावट न हो सके तो रोगी की जान संकट में पड़ जाती है और ट्राकियोटोमी नामक आपरेशन करने की आवश्यकता पड़ती है जिसमें थाईराइड ग्रन्थि में सावधानी से आपरेशन करके श्वास नली में शुद्ध वायु पहुँचाने की चेष्टा की जाती है। यह क्रिया कोई सिद्धहस्त सर्जन ही कर सकता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रोहिणी चिकित्सा

साध्य रोहिणी की चिकित्सा रक्त निकलवाकर, वमन कराकर औषधियों का धुवाँ पिलाकर, कुल्ले और गरारे कराकर तथा नाक में औषधियाँ डाल कर करनी चाहिए। इस रोग की प्रधान चिकित्सा वमन करा देना और रक्त निकलवा देना है। आजकल चिकित्सक लोग रक्त नहीं निकालते इसी कारण इस रोग से मृत्यु-संख्या अधिक होती है। जिस स्थान पर रोग आक्रमण कर रहा हो वहीं से रक्त निकालना चाहिए उसके लिए बहुत अच्छे सर्जन की आवश्यकता रहती है।

वातज रोहिणी में रक्त निकलवा कर नमक लगादे और वार-वार गरम-गरम घी या तेल या औषधियों से पकाये हुए तेल को मुँह में लेकर कुछ देर रखे। पित्तज रोहिणी में रक्त निकलवा कर शहद, प्रियंगु और मिश्री का लेप करे। कफज रोहिणी में रक्त निकलवाकर सोंठ मिर्च और पीपरि का लेप करे। मैनफल, चमेली, वायविडंग, अपामार्ग और दन्तीमूल तथा सेंधा नमक डालकर विधि से सिद्ध किये तेल से कुल्ले करे, मुंह में रखे और नाक में टपकावे।

पथ्य वैसा ही रखे जैसे प्राकृतिक चिकित्सा में वताया गया है।

बाल रोगान्तक रस

शुद्ध पारद २ तोला, शुद्ध गंधक २ तोला, सुवर्ण माक्षिक भस्म उत्तम १ तोला। पारा गंधक की कज्जली वना कर उसमें सुवर्ण माक्षिक भस्म मिला कर लोहे के खरल में डाल कर भृंगराज, सम्भालू, मकोय, गूमा, हुरहुर और ब्राह्मी के पत्तों के रस की भावना दे। फिर इसमें १ तोला काली मिर्च का चूर्ण डाल कर खूब घोंटे। १ पहर घुटाई करे। और धूप में सुखा कर सरसों बराबर गोली बनाले।

यह वटी बच्चों का दारुण ज्वर दूर करती है, पाँच प्रकार की खाँसी और बच्चों के सभी रोगों को नष्ट करती है। बहुत उत्तम योग है।

यह योग डिफ्थिरिया के लिए तो नहीं है परन्तु ज्वर और कास और गले की सूजन जुकाम आदि को नष्ट कर देता है। और प्रयोगों के साथ इसे देते रहने से डिफथीरिया में भी लाभ होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida
इस रोग में गरम और उत्तेजक औषधि नहीं देनी चाहिए।

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यदि बालक बहुत कमजोर हो गया हो तो मुक्ताशुक्ति पिष्ठी के साथ १ चावल मकरध्वज देने से ताकत नहीं घटती।

स्कारलेट फीवर

स्कारलेट फीवर या लाल ज्वर संक्रामक व्याधि है, यह छूत द्वारा एक से दूसरे को होती रहती है। यह रोग कफ या थूक के द्वारा एक से दूसरे के पास पहुँचता है, बात करने में, जूठा खाने में, खाँसने में रोग के कीटाणु रोगी के मुख से बाहर निकलते हैं और स्वस्थ आदमियों में प्रवेश कर जाते हैं।

जब रोग आरंभ होता है तब गले में खराश होती है, सिर में दर्द रहता है, बेचैनी रहती है और थकावट मालूम होती है और कै होती है। ज्वर लगभग १०३ डिग्री (३९.५ सें० ग्रे०) तक रहता है। दो दिनों बाद गले के पास या छाती में लाल चकत्ता-सा दिखाई देता है उसमें तेज सुर्ख धब्बे या दाने रहते हैं और वह सारेशरीर में फैल जाता है। केवल मुँह में नहीं फैलता और मुँह पीला-पीला दिखाई पड़ता है। ज्वर बढ़ कर १०६ डिग्री (४१.१ सें० ग्रे०) तक हो जाता है। उसी अनुपात में नाड़ी की गति और श्वास बढ़ जाते हैं। जीभ आरंभ में सफेद रहती है बाद को लाल हो जाती है और स्ट्राबेरी के रंग की हो जाती हैं। गले की टांसिल्स में प्रदाह हो जाता है, वे लाल हो जाती हैं उनमें पीले-पीले दाग पड़े रहते हैं और सूजन भी रहती है, टांसिल्स बीच की ओर बढ़ती है और निगलने में बड़ा कष्ट होता है। छः सात दिनों बाद शरीर से रूसी-सी छूटती है और लाल धब्बे गायब होने लगते हैं।

इस रोग में गले का खराश और टांसिल्स का प्रदाह खास लक्षण हैं। बहुत से ऐसे रोगी भी पाये जाते हैं जिनका शरीर लाल नहीं होता परन्तु उनके गले की टांसिल्स का प्रदाह रहता है। इस प्रकार के विष प्राप्त टांसिल्स के रोग को भी एलोपैथ स्कारलेट फीवर कहते हैं।

इस रोग में अनेक उपद्रव उठ खड़े होते हैं, कानों में प्रदाह होता है, कान के भीतर दर्द हो सकता है और पक जाने के कारण मवाद भी आ सकता है। कानों का प्रदाह और नेफ्राइटिस (गुर्दे का प्रदाह) तो रोग के लक्षण मिट जाने पर होते हैं। अकसर पेशाब में एलब्यूमिन जाने लगता है। गले की ग्रन्थियों में प्रदाह हो जाता है। गुर्दे की दशा बिगड़ जाती है और उसमें भी प्रदाह हो जाता

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। इसकी पहचान यह होती है कि पाँव और चेहरे पर शोथ हो जाता है। पेशाब ईंट के रंग का अथवा किंचित रक्त मिश्रित आता है।

यदि ऊपर बताये गये रोगों में से कोई रोग दिखाई पड़े तो चिकित्सक का ध्यान उधर जाना चाहिए।

ऊपर जो स्कारलेट फीवर के उपद्रव बताये गये हैं वे इस बात की ओर संकेत करते हैं कि शरीर में विषाक्त पदार्थों की बहुलता है, जब पुराने ढर्रे के चिकित्सक इस रोग का इलाज करते हैं और शरीर से विष निकालने का प्रयत्न न करके रोग के लक्षणों को दबाने के लिए अन्य विषैली औषधियों का प्रयोग करते हैं तभी वे सारे उपद्रव खड़े होते हैं। इस रोग का ही नहीं सभी रोगों का सही इलाज यह है कि रोग को दबाने की जरा भी चेष्टा न की जाय। दोषों को निकाल कर शरीर को निर्दोष बनाया जाय।

चिकित्सा

जैसा अन्य ज्वरों में होता है इस ज्वर में भी प्रधान इलाज उपवास है। उपवास के समय केवल संतरे का रस दिया जाय। पीने के लिए पानी गरम करके ठंडा किया हुआ दिया जाय। सन्तरे का रस यों भी दिया जा सकता है और पानी में मिला कर भी दिया जा सकता है। गरम पानी से सवेरे शाम दोनों समय एनिमा दिया जाय। उपवास तब तोड़ा जाय जब ज्वर बिलकुल न रहे, नार्मल हो जाय और जीभ बिलकुल साफ हो जाय। जब दोनों लक्षण स्पष्ट हो जायें तब उपवास तोड़ने का समय समझना चाहिए। तब फलाहार कराना चाहिए। फलाहार १० दिनों तक कराने के बाद धीरे-धीरे रोटी सब्जी और बच्चों का पूरा आहार देना शुरू करना चाहिए। एक बारगी भोजन ऐसा न बढ़ा दिया जाय कि वही रोग या कोई अन्य नया रोग आ घेरे। उपवास के दिनों में सारे शरीर की और गले की गीली पट्टी लगाने से बड़ा लाभ होता है। लाल ज्वर में पित्त का प्रकोप विशेष रहता है। पित्त को शान्त करने के लिए ठंडी पट्टी बड़ा अमोघ काम करती है। जब रोग दूर हो जाय और कमजोरी होने लगे तब पानी में नमक डालकर उसी पानी से सप्ताह में दो-तीन बार स्नान करने से नीरोगिता जल्द आती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मम्प्स

कान की जड़ में होनेवाले दो प्रकार के रोगों का वर्णन आयुर्वेद में है। एक को पाषाण-गर्दभ कहते हैं और दूसरे को कर्णमूल। पाषाण गर्दभ का लक्षण इस प्रकार लिखा है—

वात श्लेष्म समुद्भूतः श्वयथुर्हनु सन्धिजः।
स्थिरो मन्द रुजः स्निग्धो ज्ञेयः पाषाण गर्दभः॥

अर्थात् हन्वस्थि की सन्धि में वात कफ से शोथ उत्पन्न होता है, वह कड़ा, चिकना और मन्द वेदनावाला होता है। इसे पाषाण गर्दभ कहते हैं।

कर्णमूल में ज्वर होता है। इसके सम्बन्ध में लिखा है—

ज्वरादितो वा ज्वरमध्यतो वा ज्वरान्ततो वा श्रुतिमूलशोथः।
क्रमेण साध्यः खलु कष्ट साध्यः ततस्त्वसाध्यः कथितोभिषग्भिः॥

अर्थात् ज्वर के आदि में, ज्वर के मध्य में, या ज्वर के अन्त में कानों की जड़ में शोथ पैदा होता है, वह क्रमश साध्य, कष्ट साध्य और असाध्य होता है। पहले शोथ हो उसके वाद ज्वर हो यह साध्य है, ज्वर के मध्य में यदि शोथ हो तो वह कष्ट साध्य है और ज्वर के अन्त में या सन्निपात के अन्त में हो तो असाध्य होता है। ज्वर में शामक चिकित्सा करने से ही सन्निपात-ज्वर के अन्त में शोथ हो जाता है और बहुत प्रयत्न करने पर जाता है।

मम्प्स अंग्रेजी नाम है। यह रोग कान की जड़ में होता है। इसे गलसूआ भी कहते हैं। एलोपैथी के मत से यह छूत का रोग है और एक बच्चे से दूसरे बच्चे को हो सकता है। यह रोग अकसर बच्चों को हुआ करता है। कान के नीचे एक ग्रन्थि है, उसे अंग्रेजी में पैरोटिड कहते हैं। और उसके आस-पास दो-तीन और छोटी-छोटी ग्रन्थियाँ हैं। पैरोटिड ग्रन्थि में प्रदाह, दर्द युक्त सूजन हो जाने से ही यह रोग होता है। कान की जड़ में दर्द होता है और सूजन हो जाती है। जवड़े दर्द के साथ खुलते हैं। कभी-कभी नहीं भी खुलते हैं। कभी-कभी सूजन का आकार त्रिभुजाकार होता है। कभी-कभी गाल, जवड़ा और कान के पीछे का समूचा अंश सूज जाता है। सूजन के साथ-साथ ज्वर भी रहता है। ज्वर और सिर दर्द होकर यह रोग होता है। वसन्त और पतझड़ के मौसिम में यह रोग अकसर होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ऐलोपैथ डाक्टरों का विचार है कि एक मास तक इस रोग का विष शरीर में रहने के बाद यह रोग होता है। वस्तुतः यह रोग दूषित भोजन से सम्बन्ध रखता है। पैरोटिड ग्रन्थि से लार या सालिवा बनता है और प्रणाली द्वारा मुँह में पहुँचाया जाता है। यह लार भोजन पचाने में सहायक होता है और मुँह में गीलापन कायम रखता है, सूखने नहीं देता। जब मम्प्स हो जाता है तब लार बनने की क्रिया में रुकावट पड़ती है और मुख सूखा रहता है। कभी-कभी दोनों ओर की ग्रन्थियों में एक साथ ही प्रदाह होता है। कभी-कभी एक के बाद दूसरी में होता है। हर एक ओर की सूजन और दर्द दूर होने में एक-एक सप्ताह का समय लगता है।

इस रोग में एक बड़ी विचित्रता यह है कि यदि यह रोग लड़कों को होता है तो बहुतेरों के अण्डकोष में भी दर्द हो जाता है। लगभग ३० प्रतिशत रोगियों को यह उपद्रव हो जाता है। लड़कियों को जब यह रोग होता है तब अक्सर उनके स्तनों और गर्भाशय में भी सूजन और प्रदाह हो जाता है।

चिकित्सा

एलोपैथ अनेक प्रकार के लेप और दवाइयाँ दिया करते हैं जिससे रोग दबता है। रोग का विष शरीर से बाहर नहीं हो पाता है। इस रोग का इलाज इस प्रकार होना चाहिए जिसमें रोग भी मिट जाय और शरीर से विकार भी निकल जाय।

आरम्भ में दो या तीन दिन जैसी आवश्यकता हो उपवास कराना चाहिए और सन्तरे का रस तथा गरम जल देना चाहिए। यदि बच्चा इतने आहार पर न रह सके तो उसे दो दिन बाद थोड़ा दूध भी दिया जा सकता है। रोज दोनों समय गरम पानी का एनिमा देना चाहिए। सूजन के स्थान पर सेंक करना चाहिए। यह सेंक हर दो घण्टे पर करना चाहिए। सेंकते समय दो-तीन गरम सेंक करके अर्थात् ५ मिनट तक गरम सेंक के बाद १ मिनट का ठंडा सेंक करना चाहिए। इस प्रकार एक बार आधे घण्टे तक सेंकना चाहिए।

जब ऐसी अवस्था हो जाय कि बच्चा जबड़ा चला सके और कुछ चबा सके तब उसे फल और दूध देना चाहिए। बच्चे के अच्छे हो जाने पर उसी ढङ्ग का भोजन आरम्भ करना चाहिए जैसा हमने अपनी पुस्तक "हमारे बच्चे"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
में लिखा है।

(१) किसी प्रकार का शोथ हो उस पर बार-बार टिंकचर आयोडीन का लेप करने से सूजन बैठ जाती है।

(२) सोंठ और गेरू पीस कर गरम करके लेप करने से कान की जड़ की सूजन बैठ जाती है।

(३) कान की जड़ में जोंक लगवा देने से अशुद्ध रक्त निकल जाने से सूजन शीघ्र बैठ जाती है।

(४) यदि सूजन पर सोंठ पीस कर उसमें जरा सा अफीम मिलाकर गरम गरम लेप किया जाय तो सूजन भी चली जाती है और दर्द भी कम हो जाता है।

(५) काली जीरी का गरम-गरम लेप करने से सूजन और दर्द कम होता है।

सिंगिया विष घिस कर गरम करके लेप करने से भी लाभ होता है।

मदार की जड़ १ तोला पीस कर उसमें ३ माशे खाने वाला नमक मिला-गरम करके लेप करने से कर्ण-मूल का दर्द भी दूर होता है और सूजन भी कम होती है।

धतूर के पत्ते पर रेंड़ी का तेल लगा कर गरम करके कर्ण-मूल पर बांधने से आराम मिलता है।

यदि सूजन पकने लगे तो प्याज और अलसी की पुलटिस रखने से सूजन जल्दी पकती है। फिर नश्तर लगा कर मवाद निकलवा कर फोड़े का इलाज करना चाहिए।

फूट जाने पर घाव नीम के काढे से धोकर नीम की पत्ती के रस में बराबर का शहद मिलाकर कपड़े की बत्ती भिगोकर घाव में रख देना चाहिए। २४ घंटे बाद पट्टी बदल कर दूसरी रखें। इस उपाय से घाव जल्द सूखता है अनुभूत है।

डाक्टर लोग मिल्क आयोडीन का इनजेक्शन लगाते हैं। एक दिन का अन्तर देकर यह इन्जेक्शन लगाना चाहिए।
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रियुमेटिक फीवर—ग्रामवात-जन्य ज्वर

रियुमेटिक फीवर का हिन्दी ग्रनुवाद ग्रामवात ज्वर होता है। वस्तुतः जिस ज्वर में वात ग्रौर कफ प्रधान कार्य करते हैं उसी को एलोपैथ रियुमेटिक फीवर कहते हैं। कुछ समय पूर्व एलोपैथ यह समझते थे कि बच्चों को यह ज्वर नहीं होता, परन्तु ग्रब सब मानते हैं कि होता है। इस रोग में लक्षणों की इतनी भिन्नता होती है कि पश्चिमी विज्ञानवेत्ता इसका निर्णय ही नहीं कर पाते। हमारा ग्रायुर्वेद यह मानता है कि यह रोग किसी भी ग्रवस्था के व्यक्ति को हो सकता है।

इस रोग में गले में खराश होती है, घुटना या ठेहुन का जोड़ लाल हो जाता है ग्रौर उसमें दर्द होता है, जुकाम होता है, इसके बाद जोड़-जोड़ में भी दर्द हो सकता है ग्रौर ज्वर रहता है। यह तो सामान्य लक्षण है। एक प्रकार का ज्वर ग्रौर होता है जिसमें शरीर की मांसपेशियों में ऐंठन ग्रौर तनाव होता है ग्रौर ज्वर रहता है।

वस्तुतः चीनी, चावल, पूड़ी, मिठाई, बरफी, हलवा, रबड़ी, मलाई, खीर, बिसकुट ग्रादि ग्रधिक खाने ग्रौर मांस का ग्रधिक इस्तेमाल करने तथा मछली, घोंघा, सीप, शख ग्रादि का मांस ग्रधिक खाने से पाचन शक्ति पर दबाव पड़ता है ग्रौर यूरिक एसिड़ बहुत बनता है ग्रौर रक्त में ग्रम्लता पैदा हो जाती है। वह यूरिक एसिड़ नसों ग्रौर हड्डियों के जोड़ों में इकट्ठा हो जाता है ग्रौर रोग पैदा करता है।

जब रियुमेटिज्म का रोग होता है तब ग्रक्सर हृदय का रोग हो जाता है। हृदय कमजोर हो जाता है। इस ज्वर के छूट जाने पर भी हृदय का रोग तो बना ही रह जाता है। हृदय रोग उसी समय घर दबाता है जब ग्रारम्भ में ही ऐसे चिकित्सकों से इलाज कराया जाता है जो रोग को दबाना ही जानते हैं ग्रौर पथ्यापथ्य की कुछ भी व्यवस्था नहीं जानते ग्रौर शरीर से दोषों को निकालने की चेष्टा नहीं करते।

चिकित्सा

जितने भी कफ सम्बन्धी रोग होते हैं उन सब का एक ही प्रकार का इलाज होता है। वह है उपवास। कफ के रोगों में यह नहीं समझना चाहिए कि कफ

Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
केवल उसी स्थान पर है जहाँ विकार दिखाई पड़ रहा है। वल्कि कफ सारी प्रणाली में, पाचक यन्त्रों में, गुरदे, लिवर आदि में, नसों में, मांसपेशियों में और प्रत्येक कोष में प्रवेश कर गया रहता है। और जब तक प्रत्येक कोष और अंग-प्रत्यंग से कफ छाँटकर अलग न कर दिया जाय तवतक रोग निर्मूल नहीं हो सकता।

उपवास करने से सब स्थानों का कफ जलकर मल के रूप में निकल जाता है और कुछ साँस के साथ कार्बन डाइ आक्साइड के रूप में वाहर हो जाता है।

वच्चे को तवतक उपवास कराना चाहिए जवतक जोड़ों का दर्द, चिलकन, लाली और ज्वर एक दम न चले जायँ। उपवास में संतरे का रस या पतले रसवाले फलों का रस दिया जा सकता है। गरम जल दिया जा सकता है। गरम जल में नीवू का रस और शहद मिला कर भी दिया जा सकता है। दूध एक दम वन्द रखा जाय। सवेरे और शाम दोनों समय गरम पानी का एनिमा दिया जाय। गले में खराश रहती है इसके लिए गले पर पनकपड़े की पट्टी रख कर फलालैन या सूखे मोटे गरम कपड़े लपेट देना चाहिए इसीको गले का पैक कहते हैं। जोड़ों के स्थानिक दर्द के लिए गरम जल में तौलिया डुबाकर उससे सेंकना चाहिए अथवा रबड़ के थैले में गरम जल भरकर उससे सेंकना चाहिए। गरम पट्टी के वाद ठंडी पट्टी रखकर सेंकने की विधि प्राकृतिक चिकित्सकों की है। रुई गरम करके भी सेंका जा सकता है परन्तु यह अनुभव में आया है कि इस रोग में सूखा सेंक उतना लाभदायक नहीं होता जितना गरम पानी का सेंक।

यदि आवश्यकता हो तो सारे शरीर का पैक भी दिया जा सकता है। सारे शरीर की एक या दो गीली पट्टी देने से ज्वर उतरने में सहायता मिलती है।

आयुर्वेदीय चिकित्सा

उपवास कराइए। फलाहार दीजिए एवं सामान्य ज्वर को नष्ट करने वाली औषधियाँ दीजिए। मृत्युंजय रस अदरक के रस और मधु के साथ दीजिए। सर्वज्वरहर लौह खिलाइए। सुदर्शन अर्क दीजिए।

सुदर्शन चूर्ण २ माशे की मात्रा में दिन में ३ बार देते रहने से ऐसा ज्वर निश्चित रूप से शीघ्र नष्ट हो जाता है।
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय ३

आमाशय और आँतों के रोग

अजीर्ण का रोग अकसर इस कारण होता है कि बच्चों को अधिक खिलाया जाता है। पेट में गया हुआ भोजन न पचने के कारण सड़ता है, वायु पैदा करता है और अन्य विकार पैदा करता है। इसका प्रधान लक्षण यह है कि इसमें कै होती है, पेट में दर्द होता है और ज्वर हो जाता है। अजीर्ण रोग की दो अवस्थाएँ होती हैं—तरुण और जीर्ण। तरुण अजीर्ण में जब गलत इलाज किया जाता है तब यह रोग पीछा नहीं छोड़ता और पुराना पड़ जाता है फिर इसके दौरे अकसर होते रहते हैं। जब गलत तरीके का भोजन और बहुत अधिक भोजन बच्चों को खिलाया जाता है तभी यह रोग होता है। जीर्ण अजीर्ण रोग में बच्चे को अकसर वमन हो जाया करती है। उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है उसका रङ्ग पीला पड़ जाता है, और वजन नही बढ़ता। रात को नींद ठीक तरह नहीं आती, जीभ पर एक सफेद रङ्ग की परत जमी रहती है और उसकी साँस में दुर्गंध आती है। जीर्ण रोग में कभी तो दस्त नहीं आते और कभी दस्त आने लगते हैं। जब बच्चों को अजीर्ण के द्वारा दस्त आने लगते हैं तब अकसर दस्त में फटा हुआ दूध ही निकलता है। दाँत निकलते समय भी अकसर फटे-फटे दूध का दस्त होता है।

चिकित्सा

तरुण अजीर्ण में यह आवश्यक है कि बच्चे को दूध देना बन्द कर दिया जाय, उसे सन्तरे का रस दिया जाय। दूध फाड़ कर उसका पानी छान कर पिलाया जाय। बच्चे की अवस्था के अनुसार रोज एक बार से दो बार तक हलके गरम जल का एनिमा दिया जाय। बच्चों को एनिमा देने में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अधिक पानी न चढ़ाया जाय।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यदि वमन का जोर अधिक हो तो पीपल की सूखी छाल लाकर उसे जला लेना चाहिए और उसे पानी में बुझा लेना चाहिए। वही पानी एक-एक चम्मच प्रति आधे घण्टे पर अथवा घण्टे-घण्टे पर देना चाहिए। नीबू का रस पानी में मिला कर एक-एक चम्मच देने से भी वमन में कमी हो जाती है। दो-तीन दिनों में ही सब शिकायतें दूर हो जाती हैं। फिर दो-तीन दिनों तक सन्तरे का रस अधिक दिया जाय और माता का दूध दिन-रात में दो-तीन वार दिया जाय और बच्चों का भोजन देने के लिए जो नियम "हमारे बच्चे" नामक पुस्तक में बताये गये हैं उसी के अनुसार भोजन और दूध आदि देना चाहिए।

जीर्ण अजीर्ण में भी शुरू में भोजन बन्द कर देना चाहिए और सन्तरे का रस देना चाहिए। यदि दस्त न आते हों तो रोज शाम को एनिमा दे दिया जाय। रोग दूर होने पर उचित भोजन और दूध की व्यवस्था की जाय। दस्त आते हों तो एनिमा न दिया जाय, ऐसी अवस्था में संजीवनी वटी देना उत्तम होता है।

अथवा सौंफ का अर्क, पोदीने का अर्क, गुलाब का अर्क और इलाइची का अर्क चारों को एक में मिलाकर घण्टे-घण्टे भर पर बच्चे को एक-एक चम्मच देते रहना चाहिए।

एलोपैथ रियोफिन या क्लोरो स्ट्रेप कैपसुल का प्रयोग करते हैं।

पेट का दर्द

जब बच्चे के पेट में दर्द होता है तब वह अपने पाँव सिकोड़ लेता है, और जोर से रोता या चिल्लाता है। पेट छूने पर जिस स्थान पर दर्द होता है वहाँ से हाथ हटा देता अथवा रोने लगता है। दर्द के समय अकसर बच्चा ठहर-ठहर कर रोता है जब दर्द का वेग बढ़ता है तब रोना बढ़ जाता है। दर्द कम हो जाने पर उसका रोना भी कम हो जाता है। बच्चा भूख से भी रो सकता है परन्तु रोगावस्था और भूख के रोने में अन्तर होता है। भूखे बच्चे को स्तन पिला दिया जाय तो वह रोना बन्द कर देता है। बच्चों को पेट के दर्द का रोग अकसर दो मास से छः मास की अवस्था तक अधिक होता है। माता के भोजन में गड़बड़ी होने के कारण ही यह अकसर होता है। कभी-कभी इस कारण भी यह रोग हो जाता है कि बच्चों को अधिक दूध पिला दिया जाता

Arya Vidya Chachan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है और वह पचता नहीं, गैस बनने लगता है। हवा खुलने और गैस के निकल जाने से पेट का दर्द आराम हो जाता है।

चिकित्सा

गुनगुना पानी बच्चे को थोड़ा-थोड़ा पिलाना चाहिए। थोड़े गरम जल का हलका एनिमा दे देने से दर्द में उसी समय लाभ हो जाता है। जब तक दर्द चला न जाय तब तक भोजन नहीं देना चाहिए। दूध देने की भी आवश्यकता नहीं है। बच्चे का पेट गरम तौलिया से सेंकने से पेट के दर्द में आराम मिलता है। छोटी बोतल में गरम पानी भर कर उससे पेट सेंकने से भी लाभ होता है। (१) नाभी पर हींग का गरम-गरम लेप करने से भी लाभ होता है। (२) हिंग्वष्टक चूर्ण खिलाने से भी दर्द दूर हो जाता है। (३) शङ्ख की भस्म आधी रत्ती, आधी रत्ती सोंठ का चूर्ण और जरा सा हींग एक में मिलाकर खिलाने से पेट के दर्द में लाभ होता है। यह एक खुराक दवा है आवश्यकतानुसार तीन-चार खुराक दवा एक दिन में दी जा सकती है।

बच्चे के आराम होने पर बच्चे को चार-चार घण्टे पर दूध देना चाहिए और रात को १० बजे के बाद दूध नहीं देना चाहिए। बच्चों को भोजन देने का यही सही नियम है। माता को अपना भोजन दुरुस्त करना चाहिए। जो चीजें प्रसूता स्त्री को हानिकर बताई गई हैं उन्हें त्याग देना चाहिए। और समय पर सुपच और पथ्य भोजन करना चाहिए।

कब्ज

कब्ज का रोग बहुत कष्टदायक रोग है, बचपन से यदि यह रोग हो जाय तो अनेक रोग उत्पन्न हो सकते हैं। सभी रोगों की जड़ कब्ज ही है। कब्ज जब होता है तब बाहर से देखने में तो यही जान पड़ता है कि दस्त नहीं हुआ। परन्तु यह रुका हुआ मल भीतर रुक कर रक्त को विषैला बना देता है। रक्त के विषैला होते ही, शारीरिक, मानसिक और वात-नाड़ी सम्बन्धी अनेक रोग हो जाते हैं। बच्चों को जब कब्ज होता है तब कभी-कभी ये लक्षण पैदा हो जाते हैं—बच्चे को ठीक से रात को नींद नहीं आती, बेचैनी रहती है, पेट में दर्द होता है, पेट में ऐंठन रहती है। कब्ज के कारणों पर विचार किया जाय तो यह कहना पड़ेगा कि मिथ्या आहार-विहार के ही कारण यह रोग होता

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। बार-बार खाना, कभी देर से खाना, कभी सवेरे खाना, भोजन करने के बाद बिना उसके पचे ही फिर भोजन कर लेना, मैदा, चीनी, हलुवा, पूड़ी, पालिश किया चावल, साबूदाना आदि खाने से भी कब्ज होता है। कुछ बच्चों को २-३ दिन तक पाखाना नहीं होता और जब होता है तब बिलकुल सूखा लकड़ी के माफिक। इस रोग का यह भी एक लक्षण है।

आनाह

वायु दूषित हो जाने से मल नहीं निकलता और पेट गुड़-गुड़ करता है। दस्त साफ नहीं आता, पेट फूल जाता है। इसी को आनाह कहते हैं। वास्तव में कब्ज या कोष्ठ बद्धता का संस्कृत नाम आनाह है। शरीर भारी रहता है। किसी-किसी के पेट में दर्द भी होता है।

चिकित्सा

बच्चों के कब्ज की चिकित्सा के सम्बन्ध में यह याद रखने की बात है कि बच्चे कई अवस्था के होते हैं। उनकी अवस्था के अनुसार चिकित्सा करने की आवश्यकता पड़ती है। बच्चा शिशु हो सकता है और केवल माता के दूध पर रहने वाला हो सकता है। और दो-तीन-चार-पाँच बरस का बालक हो सकता है तथा उसका भोजन दूध और अन्न मिश्रित हो सकता है। कुछ बच्चे ऊपर के भोजन पर पाले जाते हैं। इन सब की चिकित्सा इनकी अवस्थानुसार करनी पड़ेगी।

यदि बच्चा शिशु है और केवल माता के दूध पर रहता है और इस अवस्था में यदि उसे कब्ज रहे तो समझना चाहिए कि माता का भोजन कब्ज करनेवाला है। उसी भोजन का दूध बन रहा है। और उसे पीकर बच्चा रोगी हो रहा है। ऐसी दशा में माता का भोजन दुरुस्त करने की आवश्यकता पड़ती है। हमारे पास अकसर ऐसे बच्चे इलाज के लिए आते हैं। माताओं से यह कहने पर कि आप ऐसा भोजन करती हैं जो कब्ज करनेवाला है तो बहुत सी माताएँ यह उत्तर देती हैं कि मुझे तो कब्ज नहीं रहता उसी भोजन से बच्चे को कैसे कब्ज रहने लगा। यहाँ पर यह समझ लेना चाहिए कि बच्चे की शक्ति और माता की शक्ति में अन्तर होता है जो भोजन माता को कब्ज नहीं करता वही भोजन बच्चे को कब्ज कर सकता है। इसलिए माता का भोजन अवश्य

Arya Vidya Gurukula Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बदलने की आवश्यकता पड़ती है।

कब्ज दूर करने के लिए कोई दस्तावर औषधि नहीं देनी चाहिए। आयुर्वेद के मत से १६ वर्ष की अवस्था के पहले दस्तावर दवा बच्चों को देनी ही नहीं चाहिए। दस्तावर दवा देने से बच्चों की आँतें सदैव के लिए खराब हो जाती हैं। कैस्ट्रोफीन या कैस्टर ऑयल अथवा रेंड़ी के तेल जैसी दस्तावर दवाएँ भी हानि से खाली नहीं हैं। हमारी राय में इनको भी बच्चों को नहीं देना चाहिए।

यदि बच्चा छोटा है तो उसे एक दिन या उससे कम जैसी उसकी अवस्था हो उसके अनुसार उसे फलों के रस पर रखना चाहिए। फलों के रस में मीठे सन्तरे सबसे अच्छे होते हैं। हलके गरम जल से थोड़े पानी का एनिमा बच्चे को दे देना चाहिए और बच्चे को समय पर दूध पिलाना चाहिए। बच्चे को ४-४ घण्टे पर दूध देना चाहिए। और बीच-बीच में सन्तरे का रस देते रहना चाहिए। माता के भोजन एवं बच्चों के भोजन देने के सम्बन्ध की जानकारी के लिए देखिए हमारी पुस्तक "हमारे बच्चे"। माता के भोजन को दुरुस्त कीजिए। चोकरदार आटे की रोटी दीजिए। हरी सब्जी दीजिए, फल दीजिए। दो बार भोजन दीजिए और आवश्यकता हो तो दो बार फलों का नाश्ता दीजिए। यदि माता को कब्ज रहता हो तो उसे भी एनिमा दीजिए। चाय, काफी, चीनी, मैदा आदि बन्द कीजिए।

यदि बच्चा २-३-४ या पाँच बरस का हो तो उसे दो तीन दिनों तक सन्तरे के रस पर रखा जा सकता है। हलके गरम जल से थोड़े पानी का एनिमा देना चाहिए। यह एनिमा रसाहार के दिनों में रोज देना चाहिए और अन्यदिनों में दूसरे तीसरे अथवा सप्ताह में एक दिन अवश्य एनिमा दे देना चाहिए। बच्चों के भोजन में फल और शाक तरकारियों का उपयोग बढ़ाइए। नियम से भोजन दीजिए। बच्चों को धूप और खुली वायु में खूब खेलने और दौड़ने दीजिए, व्यायाम करने दीजिए। भोजन में पालक का रस दीजिए। यदि बच्चे को बाहरी तैयार भोजन दिया जाता हो जैसे डिब्बे का दूध या डिब्बे में बन्द भोजन आदि तो इनको बन्द कर दीजिए और सादा साधारण भोजन जिसमें फल और तरकारियाँ अधिक हों दीजिए। गाय या बकरी का ताजा दूध दीजिए। मीठे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सन्तरे का रस दीजिए। यदि अन्न खानेवाला बच्चा हो तो चोकरदार आटे की रोटी आदि दीजिए। बच्चों को गोश्त मत खिलाइए।

एनिमा का प्रयोग और भोजन सुधार से कब्ज जड़ से मिट जाता है। यदि किसी अवस्था में दस्त कराने के लिए औषधि प्रयोग करना पड़े तो खानेवाली औषधि मत दीजिए। बच्चे के पेट पर औषधियों का लेप किया जा सकता है। लेप से दस्त भी हो जाता है और कोई हानि नहीं होती।

रेंड़ी के बीज, कुटकी और मुसब्बर अन्दाज से लेकर रेंड़ी के तेल से पीस लीजिए और गरम करके बच्चे के पेड़ू पर लेप कीजिए। एक लेप में अगर दस्त न हो तो ४ घंटे पर फिर लेप कर दीजिए। एक दो दस्त हो जायेंगे। दस्त कराने के लिए कभी-कभी चिकने अच्छे साबुन की बत्ती लगाई जाती है। ग्लीसरीन की बत्ती लगाकर दस्त कराया जाता है परन्तु इस प्रकार के उपचार से तत्काल लाभ होता है। जड़ से रोग दूर करने के लिए भोजन-सुधार आवश्यक है।

कभी-कभी खुश्की के कारण बच्चों को कब्ज रहने लगता है। ऐसी अवस्था में फलों के सलाद में थोड़ा सा मक्खन मिलाकर खिलाने से आँतें चिकनी हो जाती हैं और कब्ज मिट जाता है।

(१) रेंड़ी का तेल पेट पर पेड़ू के नीचे मल कर सेंक देने से एक दस्त हो जाता है और पेट साफ हो जाता है।

(२) हींग पानी में घोल कर गरम करके नाभी के नीचे गरम-गरम लेप करने से पेट का दर्द दूर हो जाता है।

(३) ग्लीसरीन सपोजिटरी नाम से अंग्रेजी दवा की दूकानों पर एक बत्ती मिलती है इस बत्ती को गुदा में प्रवेश कर देने से एक साफ दस्त हो जाता है।

(४) भाव प्रकाश ने लिखा है कि शहद, हींग और सेंधा नमक को कपड़े पर लपेट कर बत्ती बना कर गुदा में प्रवेश कर देने से दस्त तुरत हो जाता है। इसे आयुर्वेद में फल वर्ती कहते हैं। यह प्रयोग अनुभूत है।

(५) ८ छटांक गरम जल में १ छटांक तारपीन का तेल मिला कर इसमें फलालैन का टुकड़ा भिगोकर पेट सेंकने से पेट फूलने का रोग आराम होता है।

अतीसार

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

अतिसार दस्त आने के रोग को कहते हैं। दस्त आने के अनेक कारण

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हो सकते हैं। दस्त आने का साधारण रोग अकसर अधिक भोजन कर लेने या अनावश्यक पदार्थ खा लेने से हो जाता है। इसमें कोई खतरा नहीं रहता और एक या दो दिनों तक भोजन वन्द कर देने और एक बार एनिमा ले लेने से ही आराम हो जाता है। यदि बच्चा ऐसा हो जो विना कुछ खाये-पिये न रह सके तो उसे थोड़ा-थोड़ा सन्तरे का रस कई वार दिया जा सकता है। दस्त आने के रोग में भोजन वन्द कर देना सवसे आसान और लाभदायक उपाय है। यदि दस्त आते हों और दूध या भोजन वरावर दिया जाय तो दस्त वन्द नहीं होंगे। यदि तेज औषधियाँ दे कर विना पथ्य पालन के दस्त वन्द किया जाय तो पाचन शक्ति कमजोर हो जायगी और भयानक रोगों की जड़ पड़ेगी।

छूतदार अतीसार या कोलाइटिस (वृहदान्त्रप्रदाह)

यह अतीसार दो प्रकार का होता है। अकसर यह रोग वच्चों को होता है। इंगलैंड में वच्चों के इस रोग को समर डायरिया कहते हैं। क्योंकि वहाँ अकसर यह रोग गरमियों में होता है। इस रोग के कई भेद हैं। एक प्रकार के अतीसार का यह लक्षण होता है कि आरम्भ में ढीला और कुछ पतला पाखाना होता है और दिन भर में ८-१० वार तक होता है। पाखाने का रंग हरा होता है उसमें कफ आने लगता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि रोग सामान्य अवस्था में चलता रहता है और कभी-कभी उग्ररूप में होता है तथा बड़ी आँतों का प्रदाह उत्पन्न हो जाता है। बड़ी आँतों में प्रदाह होने पर उसे कोलाइटिस कहते हैं।

इस रोग के दूसरे भेद का लक्षण यह होता है कि इसमें एकाएक दस्त होने आरम्भ हो जाते हैं और दस्त के साथ कै भी आने लगती है। थोड़ा ज्वर भी होता है, और अनेक दस्त आते हैं। दस्त का रंग हरा होता है। आरंभ में दस्त में रक्त भी आ जाता है। दस्त वहुत पतला पानी जैसा होता है। कुछ दिनों के वाद दस्त का रंग हरा हो जाता है और उसमें कफ भी आने लगता है। कभी-कभी ज्वर तीव्र हो जाता है और दस्तों की संख्या अधिक नहीं रहती फिर भी रोग भयानक रहता है। डाक्टर लोग इस रोग का कारण जर्म्स बताते हैं। इस रोग में पित्त का जोर अधिक रहता है उसी

Adv. Vasit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
के कारण बड़ी आँतों में प्रदाह हो जाता है और ज्वर भी रहता है। वस्तुतः यह त्रिदोष के कारण होता है। इसीलिए कष्ट-साध्य होता है। जब रोग बढ़ जाता है तब उसका रंग भूरा भी हो जाता। वस्तुतः यह रोग गलत तरीके के भोजन और रहन-सहन के कारण हो जाता है।

चिकित्सा

साधारण अतीसार के इलाज के सिलसिले में भी हम बता चुके हैं कि अतीसार का वास्तविक इलाज उपवास है। इस प्रकार के अतीसार में भी सब तरह का भोजन बन्द कर देना चाहिए यहाँ तक कि दूध भी बन्द कर देना चाहिए और केवल संतरे का रस या मोसम्बी का रस दिया जा सकता है। थोड़ा पानी भी दिया जा सकता है। यह याद रखने की बात है कि अतीसार के रोग में अधिक पानी देना भी रोग को बढ़ा देता है। इस रोग में दोषों को निकाल देने के लिए सवेरे और शाम दोनों समय गरम जल का एनिमा देना चाहिए। एनिमा के पहले पेड़ू पर यदि मिट्टी की पट्टी रख ली जाय तो दस्त बन्द करने में भी काफी मदद मिलती है। दो तीन दिनों तक फलों के रस पर रहने से ही दस्त बन्द हो जाते हैं। जब दस्त बन्द हो जाय तब थोड़ा मठा दिया जा सकता है। यदि बच्चा बहुत छोटा हो और ऐसी अवस्था हो कि मठा नहीं दिया जा सकता हो तो हलके, जल्द पचने-वाले फल दिये जा सकते हैं। इसके लिए पका केला अच्छा होता है। पका पपीता भी थोड़ी मात्रा में दिया जा सकता है। दूध फाड़कर उसका पानी देना अधिक अच्छा है।

यदि रोगी की दशा चिन्ताजनक हो और स्वयं इलाज करने में माता-पिता डरते हों तो तुरन्त किसी चतुर चिकित्सक की सलाह लेना अच्छा होता है। अच्छा यह होता है कि आयुर्वेद के अच्छे ज्ञाता चिकित्सक से परामर्श लिया जाय। यदि खाने-पीने की गड़बड़ी न होने पावे तो रोग की गम्भीरता मिटने में संदेह नहीं रह जाता है। जब फल पचने लगे तब धीरे-धीरे उचित भोजन पर आना चाहिए। बच्चों के लिए अतीसार बहुत खराब रोग है। बच्चा इसमें कमजोर हो जाता है अतः सावधानी से इलाज करना चाहिए।

(१) आम की अन्तर छाल १ छटांक लाकर दही के साथ पीस लें। इसका
Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लेप नाभी पर करने से दस्त में आराम मिलता है ।

(२) कपर्दी भस्म १ रत्ती, शंख भस्म १ रत्ती, संजीवनी वटी १।४ रत्ती, गंगाधर चूर्ण २ रत्ती, सबकी एक खुराक बनाकर शहद से चटावे । ऐसी ३-४ खुराक दिन में ३-४ बार देने से सब प्रकार के दस्त के रोग में आराम मिलता है । यह औषधि बेल के मुरब्बे के साथ भी दी जाती है ।

गंगाधर चूर्ण

(३) नागर मोथा, मोचरस, लोध, धाय का फूल, बेल की गिरी, कोरैया की छाल सब को सम भाग लेकर कपड़छन चूर्ण बना लें । इसको गंगाधर चूर्ण कहते हैं । १-२ रत्ती की मात्रा में शहद के साथ चटाने से अतीसार में लाभ होता है । दिन में ३-४ बार चटाना चाहिए ।

(४) कर्पूर रस—नागर मोथा १ तोला, शुद्ध सिंगरफ १ तोला, जायफल १ तोला, शुद्ध कपूर १ तोला शुद्ध अफीम १ तोला इनको खूब महीन पीस कर जल के साथ घोंट कर १-१ रत्ती की गोली बनानी चाहिए । ये गोलियाँ लाल रंग की बनती हैं । आधी गोली से १ गोली तक माँ के दूध के साथ अथवा जल के साथ देने से पुराना दस्त, ज्वरातीसार, रक्तातीसार आदि में अच्छा लाभ होता है । प्लीहा या यकृत की गड़बड़ी के कारण जो दस्त आते हैं उनमें भी लाभ होता है । अनुभूत है ।

स्वर्ण पर्पटी

(५) स्वर्ण पर्पटी के प्रयोग से संग्रहणी और पुराने अतीसार में बहुत लाभ होता है । आधी रत्ती की मात्रा में बेल के शर्बत के साथ या शहद के साथ चटाना चाहिए । किसी अच्छे वैद्य के यहाँ से यह दवा मँगा लेनी चाहिए । इसके बनाने में खटराग है इसलिए नुसखा नहीं लिखा ।

(६) गंगाधर चूर्ण २ रत्ती, विष तिंदुक वटी, १।२ रत्ती दोनों मिलाकर शहद के साथ चटाने से उन बच्चों को लाभ होता है जिनको भोजन के तुरन्त बाद दस्त लग जाते हैं । यह प्रयोग कुछ दिन कराना चाहिए ।

शिशु कल्याण शर्बत

सौंफ का अर्क एक पाव, नीबू का रस ४ तोला, शतावर का अर्क १ पाव इन सब को कलई दार कड़ाही में धीमी आँच पर चढ़ा दे और उसमें ८ तोला

Arya Samaj Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
मिश्री मिला दे। जब पकने लगे तब इसमें बकरी के दूध का छींटा देता रहे जिसमें मैल कट जाय। उस मैल को निकाल देना चाहिए। जब चाशनी तैयार हो जाय तब उसमें सफेद मिर्च का चूर्ण ३ माशे डाल दे और ६ माशे गुड़ुच का असली सत भी मिला दे। बाद को २ ग्राम पिपर मेंट और डेढ़ ग्राम जवाइन का सत एक में गला कर मिला दें। शर्बत ठंडा हो जाने पर ४ माशा अफीम मिला कर खूब घोट दें जिसमें अच्छी तरह मिल जाय। इसकी मात्रा पाँच बून्द से दस बून्द तक है। इसे चटाने से सब प्रकार के दस्तों में लाभ होता है।

पेचिश (Dysentery)

बच्चों के लिए पेचिश का रोग भयानक समझा जाता है। इस रोग में भी बड़ी आँतों में प्रदाह हो जाता है। उस प्रदाह के कारण दस्त में कफ आने लगता है। रक्त भी आने लगता है। इसे हिन्दी में आँव आना कहते हैं। इस रोग में दस्त थोड़ा-थोड़ा आता है और कई बार आता है तथा पेट में ऐंठन और मरोड़ होता है। यह गरम देशों में अधिक होता है। मरोड़ के दो लक्षण होते हैं। किसी-किसी रोगी को दस्त के पहले मरोड़ अधिक होता है और दस्त हो जाने पर दर्द और मरोड़ में आराम हो जाता है और किसी-किसी को दस्त के पहले तो दर्द कम रहता है और दस्त हो जाने पर दर्द बहुत बढ़ जाता है। इस पिछले लक्षणवाले पेचिश को एलोपैथ टेनेसमस कहते हैं। इस रोग में अकसर ऐसा होता है कि दस्त में मल नहीं निकलता केवल कफ या आँव ही निकलता है। उसमें रक्त मिला रहता है। किसी-किसी को रक्त नहीं निकलता केवल कफ ही या आँव ही निकलता है।

यह रोग एलोपैथ डाक्टरों के मत से कीटाणुओं के कारण होता है। परन्तु वस्तुतः यह रोग अधिक स्टार्च और प्रोटीन तथा मांस-मछली आदि खाने के कारण होता है। वस्तुतः यह मन्दाग्नि के कारण होता है और देर में पचनेवाले और भारी भोजन के कारण होता है।

चिकित्सा

छूतदार अतीसार की चिकित्सा जिस प्रकार बताई गई है उसी प्रकार का इलाज इस रोग में होना चाहिए। रोगी को पूर्ण विश्राम देना चाहिए।
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

और सन्तरे के रस पर रखना चाहिए और पेट में यदि दर्द अधिक हो तो गरम पानी में कपड़ा भिगोकर पेडू को सेंकना चाहिए। जब रोग आराम हो जाय तब फल खाने को देना चाहिए। जो फल कुछ कड़े हों उनको कुचल कर रस निकाल कर देना चाहिए। जब रोग दूर हो जाय तब भोजन क्रमशः देना चाहिए।

आयुर्वेदीय चिकित्सा अतीसार के समान होती है। कर्पूर रस दीजिए या गंगाधर चूर्ण दीजिए। अथवा संजीवनी वटी १।२ रत्ती, गंगाधर चूर्ण २-३ रत्ती और कपर्दी भस्म १ रत्ती एक में मिश्रित कर दीजिए।

वमन

बच्चों को वमन होना अनेक रोगों का सूचक है। वमन कोई स्व तन्त्र रोग नहीं है। अजीर्ण होने से वमन होने लगती है, बहुत अधिक खा लेने से भी वमन होने लगती है, स्नायविक रोग भी वमन का कारण हो सकता है। ज्वर रोग में भी वमन हो सकती है। कभी-कभी पित्त बहुत अधिक बढ़ जाता है और उसके कारण वमन होने लगती है। गलत भोजन के कारण रक्त में अम्लता आ जाने से भी वमन होने लगती है। इस प्रकार यह आसानी से समझ में आ जाता है कि वमन एक लक्षण है और अनेक रोगों में वमन हो सकती है। इलाज करते समय असल कारण का इलाज करने में जल्द सफलता मिलती है।

अधिक दूध पी लेने से, या दूध पीने के बाद खेलाते समय बच्चे को अधिक हिलाने-डुलाने से बच्चा अकसर दूध डाल देता है। यदि रोग के कारण बच्चा दूध की वमन करता है तो वह दूध फटा-फटा निकलता है और उसमें से दही के समान खट्टी-खट्टी गंध निकलती है। ऐसी दशा में कभी-कभी कब्ज रहने लगता है और कभी-कभी पतले दस्त भी आने लगते हैं।

चिकित्सा

चिकित्सा करते समय कारण को दूर करने का प्रबन्ध कीजिए। यदि यह आसान न हो कि कारण का पता लग सके तो ऐसी दशा में बच्चों को पूर्ण आराम देना चाहिए। बिस्तरे पर लिटा रखना चाहिए भोजन बिलकुल बन्द Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida कर देना चाहिए। पानी के लिए जल देने की आवश्यकता पड़े तो गरम जल

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दीजिए। यदि बच्चे की अवस्था कुछ बड़ी हो तो गरम जल में एक दो बूंद नीबू का रस डालकर दे देना अच्छा होता है। गरम जल से एनिमा दे देना चाहिए। यदि आवश्यकता हो तो सन्तरे का रस भूख लगने पर दिया जा सकता है। इस उपाय से अजीर्ण का दोष मिट जाता है और वमन का रोग चला जाता है। यदि इस उपाय से लाभ न हो तो किसी अच्छे चिकित्सक को दिखा देना चाहिए।

(१) पीपल वृक्ष की छाल आग में जला कर वह जलता कोयला पानी में बुझा लेना चाहिए। यह बुझाया हुआ जल थोड़ा-थोड़ा पिलाने से वमन दूर हो जाती है, पित्त शान्त हो जाता है।

(२) सौंफ का अर्क, पुदीने का अर्क, इलायची का अर्क और गुलाव जल चारों बरावर-बरावर मिलाकर एक-एक चम्मच आधे-आधे घंटे पर देने से वमन बन्द हो जाती है।

(३) सौंफ, पुदीना, इलायची और थोड़ी सी सोंठ पीसकर पानी में छान लेना चाहिए और थोड़ा गरम करके एक-एक दो-दो चम्मच पिलाते रहना चाहिए।

(४) एक दो बूंद नीचे लिखा तरल एक घूंट पानी में मिला कर पिलाने से कै बन्द हो जाती है। कपूर, पिपरमेंट और जवाइन का सत तीनों औषधियाँ बरावर-बरावर लेकर साफ शीशी में डालकर कार्क लगा दें। थोड़ी देर में तीनों मिलकर पानी जैसी पतली चीज हो जायगी। इसी तरल में से १-२ बूंद औषधि जल में मिलाकर देना चाहिए।

(५) शंख भस्म १ रत्ती की मात्रा में दिन में कई बार देने से वमन बन्द हो जाती है।

(६) संजीवनी वटी १।२ रत्ती की मात्रा में पोदीना के रस के साथ अथवा शहद के साथ अथवा माँ के दूध के साथ चटाने से बच्चों के वमन में लाभ होता है और अजीर्ण भी मिट जाता है। अनुभूत योग है।

एलोपैथ सिक्विल गोली $\frac{1}{6}$ या $\frac{1}{8}$ की मात्रा में खिलाते हैं।

अनुभूत बालामृत

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida
ढाई सेर गरम पानी में कलीदार (चूना बिना बुझा चूना) एक पाव भिगो

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देना चाहिए। भिगोने के लिए पात्र मिट्टी का लेना चाहिए। चूना कुछ देर में गल जायगा। गल जाने पर उसे किसी लम्बी लकड़ी से खूब अच्छी तरह चला कर छोड़ देना चाहिए। २४ घंटे बाद साफ निथरे हुए जल को छान लेना चाहिए। इसी को चूने का पानी कहते हैं। इसी में से ५ सौ ग्राम जल में इतनी ही मिश्री या दानेदार चीनी मिला कर कलईदार कड़ाही में पकाना चाहिए। अधपका हो जाने पर रतन जोत का ८ रत्ती चूर्ण मिला दीजिए। यह दवा रंग लाने के लिए होती है और निर्दोष होती है। जब चाशनी में तार आने लगे तब उतार कर महीन तार की चलनी से या महीन वस्त्र से छान लीजिए और शीशी में भर कर कार्क लगा दीजिए। यह दवा दिन में २-३ बार १५-२० बूंद से लेकर ५-६ माशे तक दी जाती है। बच्चे की अवस्था के अनुसार मात्रा दीजिए। इससे बच्चों के दस्त और दूध फेंकने का रोग दूर होता है एवं बच्चा मोटा ताजा तन्दुरुस्त होता है सूखा रोग में भी इससे लाभ होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय ४

हृदय, फेफड़े और गले के रोग

ब्रोंकाइटिस

ब्रोंकाइटिस सर्दी का ही एक भेद है। सर्दी बच्चों को अकसर हो जाती है। यह सर्दी कई तरह की होती है। किसी-किसी को सर्दी का जोर कम रहता है और ज्वर नहीं रहता या रहता भी है तो बहुत ही कम। जब सर्दी का जोर ज्यादा होता है तब ज्वर तेज हो जाता है। ज्वर १०२-१०३ डिग्री (३८·९ सें० ग्रे० से ३९·५ सें० ग्रे०) तक हो जाता है। जब सर्दी में कफ ढीला रहता है तब कफ आसानी से निकल जाता है और थोड़ा ही खाँसने से कफ निकल जाता है अथवा स्वयं ही ढीला होकर बह जाता है। जब कफ सूखा रहता है तब कफ नहीं निकलता। कभी-कभी कफ के अधिक सूख जाने के कारण एक प्रकार की सूखी खाँसी आने लगती है उसे हूपिङ्ग कफ या कुकुर खाँसी कहते हैं। एलोपैथी के चिकित्सक हूपिङ्ग कफ का कारण एक प्रकार के कीटाणु मानते हैं। इसमें छाती की सभी केशिकाएं, श्लेष्मिक कलाएँ, और श्वास-पथ में कफ जम जाता है इसी को ब्रोंकाइटिस कहते हैं। यही रोग जब कुछ और बढ़ जाता है और इसका असर फेफड़ों तक में पहुँच जाता है तब उसे ब्राँको निमोनिया कहते हैं। जबतक कफ ढीला रहता है और नाक से बहता रहता है तबतक ब्रोंकाइटिस या निमोनिया नहीं होता। जब कफ सूख जाता है तभी ब्रोंकाइटिस और निमोनिया होते हैं।

ब्रोंकाइटिस और ब्राँको निमोनिया रोगों के कारण एलोपैथी के चिकित्सकों के मत से कीटाणु ही हैं। परन्तु यह सिद्धांत सही नहीं है। अनेक प्रकार के गलत और दोषपूर्ण भोजन से गला, नाक, कान के रास्ते, श्वासपथ आदि रोगग्रस्त और विकार-ग्रस्त हो जाते हैं और उनमें एकाएक प्रदाह होकर कफ

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
जमने लगता है। स्टार्चवाले भोजन जैसे मैदे की रोटी, हलवा, पूड़ी, चावल, मालपुवा, गुड़, चीनी, मिल की बनी सफेद चीनी, अँचार, चटनी, मुरब्बे आदि के खाने से कफ बढ़ता है और सर्दी, जुकाम और ब्रोंकाइटिस और ब्रॉंको निमोनिया आदि रोग होते हैं। जो लोग चाहते हों कि उनके बच्चों को ये रोग न हों उन्हें ऐसे गलत भोजन भूलकर भी अपने प्यारे बच्चों को नहीं देना चाहिए।

चिकित्सा

आरम्भ में बच्चों को उपवास करा दीजिए और उपवास काल में मीठे संतरे का रस दीजिए और गरम जल दीजिए। गरम पानी का थोड़े जल का एनिमा रोज दे देना चाहिए। संतरे के रस और गरम जल पर ३-४ दिनों तक रखना चाहिए या तब तक रखना चाहिए जब तक कि भयानक लक्षण दूर न हो जायें। यदि खाँसी बहुत दुःख देती हो और कफ ढीला न हो तो चेस्ट पैक देना चाहिए। दिन में दो-तीन चेस्ट पैक और रात में या शाम को एक बार और देने से कफ जल्द ढीला हो जाता है और खाँसी में आराम मिल जाता है। रोग जब सामान्य दशा में आ जाय और थोड़े लक्षण शेष रह जायें तब फल खाने को दिये जायं। रोग निवृत्त हो जाने पर अन्न खाने को दिया जाना चाहिए। मैदा, चीनी, गुड़ आदि बन्द कर देना चाहिए और बच्चे के आराम हो जाने पर गुड़, चीनी, मिठाई आदि खाने की आदत को धीरे-धीरे बन्द कर देनी चाहिए। फल, तरकारियाँ, चोकरदार आटे की रोटी आदि खिलाना चाहिए अथवा जैसा हमने अपनी पुस्तक "हमारे बच्चे" में बच्चों को भोजन देने को लिखा है वैसा भोजन देना चाहिए।

यह याद रखिए कि छोटे बच्चों को सर्दी बहुत जल्द लग जाती है, उनकी शक्ति कम रहती है माता-पिता उनकी शक्ति का ठीक-ठीक अन्दाज नहीं लगा पाते जितनी सर्दी बड़ों के लिए सहने लायक होती है उतनी ही सर्दी बच्चों को दुखदाई हो जाती है। सवेरे शाम भी बच्चे अकसर माता-पिता की लापरवाही से सर्दी खा जाते हैं। सात बरस तक बच्चों को ठंडे पानी से मत नहलाइए। गर्मी के दिनों में यदि ठंडे जल से नहला दिया जाय तो सर्दी के दिनों में तो अवश्य ही ठंडे पानी से न नहलाना चाहिए।
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रोग के आराम होजाने पर यदि बच्चा बड़ा हो तो उसे गहरी साँस लेना सिखलाइए और खूब खेलने-कूदने दीजिए। गहरी साँस का अभ्यास करने से फेफड़े और गले आदि की श्लेष्मिक कलाएं बलवान हो जाती हैं और दुबारा रोग का आक्रमण नहीं होता।

अकसर ऐसा देखा जाता है कि जिन लोगों को बचपन में सर्दी का रोग अधिक होता रहता है, वे बड़े, जवान और बूढ़े होने पर भी जल्द सर्दी खा जाते हैं और पसली, श्वास, खाँसी आदि से कष्ट पाते रहते हैं। इसलिए बचपन से ही इस तरह का खान-पान और रहन-सहन रखना चाहिए कि इस रोग के होने की कोई संभावना ही न रहे।

सर्दी-जुकाम

सर्दी-जुकाम का साधारण लक्षण यह है कि छींके खूब आती हैं, नाक से पानी बहता है किसी-किसी की आँखों से भी पानी बहने लगता है, ज्वर तेज रहता है। जब शरीर में विकार रहता है तब प्रकृति उस विकार को निकालने के लिए अकसर जुकाम पैदा करती है। जुकाम प्राकृतिक साधन है विकारों के निकालने लिए। गलत तरीके के रहन-सहन के कारण जो दोष, जो विकार इकट्ठे हो जाते हैं वे ही विकार सर्दी जुकाम पैदा करने के कारण बन जाते हैं। जब तक शरीर में विकार न हो तबतक जुकाम या सर्दी हो ही नहीं सकती है। मैदा और स्टार्च वाले भोजन, गुड़, चीनी, इमली आदि खटाई अधिक खाने से तथा कफ बढ़ानेवाले रहन-सहन के कारण श्लेष्मिक कला विकार-ग्रस्त हो जाती है और जुकाम या सर्दी का रोग हो जाता है। चाहे बच्चों को सर्दी-जुकाम का रोग हो चाहे बड़ों को सब के रोग एक ही कारण से होते हैं। यह बात नहीं है कि बच्चों को रोग किसी दूसरे कारण से हो और बड़ों को दूसरे कारण से। इसलिए जो माता-पिता अपने बच्चों को स्वस्थ और तन्दुरुस्त देखना चाहते हों उन्हें अपने बच्चों के भोजन पर विशेष ध्यान रखना चाहिए और ऐसा भोजन देना चाहिए जो स्वास्थ्यवर्धक हो।

बहुत से लोग बच्चों को सर्दी से बचने के लिए बड़े मोटे-मोटे कई कपड़े हर समय पहनाए रखते हैं। इतने अधिक कपड़े पहनाने से चमड़े की स्वाभाविक क्रिया रुक जाती है। चमड़ा भी तो वायु को ग्रहण करता है और पसीने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

के रूप में शरीर से बहुत सा जहर निकाला करता है इस क्रिया में अधिक कपड़े बाधक होते हैं। चमड़े से सटा हुआ ऊनी कपड़ा बच्चों को हरगिज न पहनाना चाहिए। नीचे कोई सूती कपड़ा पहनाकर उसके ऊपर ऊनी कोट या जरसी आदि पहनाया जा सकता है। इतना कम कपड़ा भी नहीं पहनाना चाहिए कि बच्चा सर्दी खा जाय।

चिकित्सा

बच्चों को सर्दी जुकाम का इलाज करते समय एक या दो दिनों तक बच्चों को सन्तरे के रस पर रखना चाहिए। और हर तरह का भोजन बन्द कर देना चाहिए। यदि बच्चा छोटा हो और माता के दूध पर रहता हो तो उसके दूध पीने का समय ६-६ घण्टे पर कर देना चाहिए और दूध थोड़ा कम ही पिलाया जाय अथवा दूध भी बन्द कर दिया जाय और केवल सन्तरे का रस दिया जाय। एक ही या दो दिनों में जुकाम का जोर कम हो जाता है। इसके बाद एक या दो दिनों तक फल खाने को दे और थोड़ा-थोड़ा दूध दे। यदि कफ का जोर अधिक हो तो दूध बन्द ही रखना अच्छा है क्योंकि दूध से कफ बढ़ता है। फिर धीरे-धीरे भोजन पर आना चाहिए।

आयुर्वेदीय चिकित्सा

सरदी खाँसी के लिए नीचे लिखा प्रयोग उत्तम है:—

(१) पीपरि १ तोला, काकड़ा सिंगी १ तोला, कायफल १ तोला। सबका चूर्ण बनाकर १-२ माशे की मात्रा में बच्चे को दिन में ३-४ बार चटाना चाहिए।

(२) रेंगनी (भटकटैया) का फूल लेकर चूर्ण करके शहद से चटाना चाहिए। सरदी खाँसी ठीक होगी।

(३) एलादि वटी या व्योषादि वटी उचित मात्रा में देने से सरदी खाँसी में लाभ होता है।

(४) सीतोपलादि चूर्ण शहद से चटाने से सर्दी जुकाम ठीक होता है मात्रा १ माशा या डेढ़ माशा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

(५) सीतोपलादि चूर्ण १ माशा, शृंग भस्म १ रत्ती, अभ्रक भस्म ½ रत्ती,

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवाल भस्म १ रत्ती, शंख भस्म १ रत्ती। सबको मिलाकर १ खुराक बनावे। ऐसी ३-४ खुराक दिन में शहद से देने से ब्रोंकाइटिस, निमोनिया खाँसी आदि सब रोग दूर होते हैं। यदि ज्वर हो तो इसी में ½ रत्ती मृत्युञ्जय रस और १ रत्ती गोदन्ती हरताल भस्म भी मिला देना चाहिए।

क्रूप

इस रोग को आयुर्वेद में क्या कहते हैं यह हम निर्णय नहीं कर सके। यह गले का रोग है और ६ मास से लेकर ५ वरस तक के बच्चों को होता है। बच्चों को ठंड लग जाने से अकसर यह रोग होता है। बच्चों का स्वरयन्त्र या लेरिंक्स बहुत तंग रहता है और वात-नाड़ियाँ बहुत ही उत्तेजनापूर्ण होती हैं। ठंड लगने के कारण स्वरयंत्र की वात-नाड़ियों में प्रदाह हो जाता है। कभी-कभी एक नकली झिल्ली भी पैदा हो जाती है। यह झिल्ली अकसर डिफथीरिया के कारण होती है। स्वरयंत्र में प्रदाह के कारण वहाँ दर्द और सूजन पैदा हो जाती है, बच्चा कष्ट से साँस ले पाता है। धीरे-धीरे गला बैठने लगता है और यदि रोग बढ़ता गया तो आवाज एक दम बन्द हो जाती है। बच्चों को ऐंठन होने लगती है। अकसर इस रोग से बच्चे मर जाते हैं।

अकसर ऐसा होता है कि रात को बच्चा जग जाता है, उसे साँस लेने में कष्ट होता है, गला बैठ जाता है, घाँव-घाँव आवाज होती है या काँसे के टूटे बरतन पर मारने की-सी आवाज आती है, खाँसी आती है। यह दशा ३-४ घंटे रहती है और सुबह होते-होते हालत में सुधार मालूम होने लगता है। दिन भर बच्चा अच्छा रहता है, रात को फिर रोग का दौरा हो जाता है। परन्तु यह दौरा हलका होता है। दूसरे दिन बच्चा फिर अच्छा दिखता है परन्तु रात को फिर रोग का दौरा हो जाता है। यह दौरा और भी हलका होता है। किसी-किसी का रोग इतने से ही आराम हो जाता है और किसी-किसी को ब्रोंकाइटिस या श्वास-पथ-प्रदाह का रोग हो जाता है। इससे आगे बढ़कर निमोनिया, पसली चलना आदि भी रोग हो जा सकते हैं।

एलोपैथ तो सभी रोगों को कीटाणुओं द्वारा ही पैदा हुआ मानते हैं। परन्तु वस्तुतः यह रोग अजीर्ण के कारण होता है। गलत तरीके का भोजन देने से विजातीय पदार्थ शरीर में जब इकट्ठा होता है तभी सर्दी लगने का

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अधिक भय होता है और उसी समय अधिक सर्दी लगती भी है।

चिकित्सा

इस रोग का इलाज यह है कि बच्चे को भोजन न देकर दो-तीन दिनों तक केवल मीठे सन्तरे के रस पर रखा जाय। कफ को ढीला करके स्वरयंत्र के प्रदाह को कम किया जाय। इसके लिए गरम जल में नमक और अदरक का रस डालकर वारबार गरारे कराये जायँ, रूई गरम करके गला और छाती सेंकी जाय इस प्रकार गरमी पाकर कफ पिघल जायगा और आराम मिल जायगा। दूसरा उपाय यह है कि गले पर गीले कपड़े की पट्टी रखकर उसके ऊपर ऊनी कपड़ा रखकर वाँध दिया जाय। यह पट्टी भी दिन में कई वार लगाने की आवश्यकता पड़ती है। इस उपाय से भी कफ पिघल जाता है। इसी को गले का पैक कहते हैं।

लहसुन का रस शहद में मिलाकर कई वार वच्चे को चटाना चाहिए। लहसुन एक अव्यर्थ महौषधि है। इसका प्रभाव इंजेक्शन से भी अधिक होता है। मकरध्वज दिया जा सकता है। बारहसिंघे की सींघ की भस्म से लाभ होता है।

सरदी जुकाम की चिकित्सा में दिया गया नं० ५ का प्रयोग इस रोग में भी दिया जा सकता है।

बच्चा जव रोग-मुक्त हो जाय तव उसको तीन दिनों तक केवल फल और दूध पर रखा जाय और धीरे-धीरे स्वाभाविक भोजन दिया जाय। बच्चों का भोजन इस प्रकार का रखा जाय जिसमें उसका स्वास्थ्य उन्नत बने और शरीर में विजातीय अंश न इकट्ठा होने पावे।

टानसिल और एडिन्वायड्स का बढ़ना

गले में दाहिने वायें दोनों ओर श्लेष्मिक ग्रन्थियाँ हैं। इन ग्रन्थियों को टानसिल कहते हैं। एडिन्वायड्स भी गले में नाक और गले के सन्धि-स्थल पर ही होता है। वे बहुत छोटी ग्रन्थियाँ हैं। इनका उपयोग स्वास्थ्य को कायम रखने में होता है। किसी प्रकार के कीटाणु या अन्य हानिकारी पदार्थ गले में प्रवेश करने के पहले ही यहीं पर इन ग्रन्थियों के प्रभाव से रोक लिये जाते हैं। इन ग्रन्थियों से एक प्रकार का श्लेष्मिक रस निकलता है जिसके कारण गला हर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

समय तर रहता है और जो अनिष्टकारी या गन्दा पदार्थ गले के भीतर घुसना चाहता है वह उस तर पदार्थ में लिपटकर बाहर ही रह जाता है और हम खखार कर थूक या कफ के साथ उसे बाहर कर देते हैं। टानसिल्स सिर के कफ को भी निकाल कर सिर को साफ रखते हैं तथा गले के कफ को भी बाहर निकालते हैं। वस्तुतः शरीर से श्लेष्मिक मल या विजातीय पदार्थ निकालकर शरीर को स्वस्थ बनाने में इस अंग का उपयोग हमारा शरीर खूब करता है। हमारे शरीर को स्वस्थ रखने और भीतर से विषैला अंश निकालने के लिए यह बहुत उपयोगी अंग है।

जब भोजन इतना दोष-पूर्ण और कफ वर्धक हो जाता है कि उस बढ़े हुए कफ को निकाल सकना इस यंत्र के लिए कठिन हो जाता है। तब यह अंग स्वयं रोगी हो जाता है। अधिक मात्रा में रोटी और चावल खाना भी कफवर्धक है। दही, दही के पदार्थ, मिठाई, चीनी, गुड़, घी, मछली आदि खाने से भी कफ बढ़ता है। यह कफकारी भोजन ही सब प्रकार के रोगों को उत्पन्न करता है। यह हमने पहले भी लिखा है। जब यह यंत्र या टानसिल स्वयं रोगी हो जाता है तब इसमें प्रदाह हो जाता है। उसमें दर्द होता है, सूजन हो जाती है और वे लाल हो जाते हैं। किसी-किसी के टानसिल इतने बढ़ जाते हैं कि गिलटी की तरह फूल आते हैं और उनमें बहुत अधिक वेदना और दर्द होता है। किसी-किसी को यह रोग कभी होता है और कभी दब जाता हैं। जब दौरा होता है तब जुकाम और ज्वर के साथ यह रोग शुरू होता है। किसी-किसी को सूजन बराबर बनी रहती है दर्द कभी घटता है, कभी बढ़ता है। इसी प्रकार एडिन्वायड्स भी बढ़ जाते हैं और उनमें भी प्रदाह हो जाता है।

टानसिल का रोग यों तो अकसर बच्चों को ही होता है क्योंकि वे मिठाई, चीनी, गुड़ आदि बहुत खाते हैं, १२-१४ वर्ष तक के बच्चों को यह रोग अकसर होते देखा गया है परन्तु बड़ी उम्र के लोगों में भी यह रोग बहुत अधिक होता है। खाने-पीने की जिस गड़बड़ी के कारण यह रोग बच्चों को होता है उन्हीं गड़बड़ियों के कारण यह रोग बड़ों को भी होता है। जिन लोगों को यह रोग हो जाता है उनका स्वास्थ्य बहुत गिर जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

एलोपैथ इस रोग की साधारण और सफल चिकित्सा इस यंत्र को निकाल

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देना ही समझते हैं परन्तु वस्तुतः यह बहुत ही गलत इलाज है। टानसिल को निकाल देने से रोग की जड़ नहीं कटती, रोग का दिखाई पड़नेवाला लक्षण कट जाता है। रोग का असली कारण मौजूद रहने के कारण जीवन में आगे अनेक भयङ्कर रोग उत्पन्न होने की आशङ्का रहती है। जिनके कारण जीवन संकट में पड़ जाता है। सावधान माता-पिता को चाहिए कि वे समझदारी से ऐसा भोजन बच्चों को दें जिससे यह रोग कभी हो ही नहीं, यदि संयोग से रोग हो जाय तो रोग की जड़ का इलाज करना चाहिए न कि लक्षण का। यदि आपको अपना बच्चा प्यारा है, आप उसके शुभचिन्तक हैं तो टानसिल का आपरेशन मत कराइए।

एडिन्वायड

गले में एक श्लेष्मिक कला है उसका कार्य भी शरीर से विषैला अंश बाहर करने का है। जब शरीर में विषैला अंश बहुत हो जाता है और इस कला को बहुत अधिक कार्य करना पड़ता है तब इस कार्य-भार के कारण उस कला में विकार पैदा होते हैं। फिर इस कला में नाक के पीछे और गले में गाँठ सा कुछ जमने लगता है। इस जमाव या एकत्री करण को एडिन्वायड कहते हैं।

यह एक ग्रन्थि है जो गले में उस स्थान पर है जहाँ नाक का सुराख है। गलत ढंग के खान-पान के कारण इस ग्रन्थि में प्रदाह हो जाता है इसे एडी न्वाइटिस कहते हैं।

इस रोग के कारण बच्चों के बढ़ने में रुकावट पड़ जाती है और बच्चे बढ़ते नहीं हैं। साँस लेने में कष्ट होता है और बच्चे की बुद्धि मारी जाती है और बच्चा मुँह से साँस लेता है क्योंकि नाक का छेद रुका रहता है।

जब एडिन्वायड का रोग हो जाता है या टानसिल बढ़ जाते हैं, तब बार-बार जुकाम होने लगता है, खाँसी, श्वास आदि रोग होने लगते हैं। बच्चा पनपता नहीं है। नाक से साँस लेने में कष्ट होता है और बच्चा मुँह से साँस लेने लगता है।

बहुत से डाक्टर कहते हैं कि आपरेशन करा डालने से ये सब शिकायतें मिट जाती हैं। परन्तु उनका यह कथन विश्वास के योग्य नहीं है। बहुत से

Arya Vidit Chaudhari Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एलोपैथ डाक्टर भी इस बात को अनुभव करने लगे हैं कि टानसिल्स के कटवा देने से भविष्य में बहुत से रोग होने की सम्भावना रहती है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि आपरेशन करने के बाद बच्चों के स्वास्थ्य में प्रत्येक दृष्टि से सुधार दिखाई पड़ने लगता है। परन्तु यह लाभ क्षणिक होता है और वह लाभ जो दिखाई पड़ता है लापता हो जाता है। टानसिल्स कटवा-कर निकलवा देने से बहरापन, रोग-निवारक शक्ति का ह्रास, मस्ट्रायड अस्थि का प्रदाह, ब्रोंकाइटिस, खाँसी और स्वाँस आदि रोग होते ही रहते हैं।

डाक्टर लोग एडिनायड में भी आपरेशन करने की राय देते हैं। आपरेशन करा देने से बच्चे की बुद्धि तेज हो जाती है। इसके आपरेशन में विलम्ब करने से बच्चे की हालत बिगड़ती रहती है।

इस पुस्तक में बताये आहार-विहार के पालन करने से प्रायः रोग होते ही नहीं, यदि होते हैं तो जल्द आराम हो जाते हैं। पथ्य फल-तरकारियों का सेवन करना चाहिए।

चिकित्सा

एलोपैथ डाक्टरों के पास आपरेशन करने के अलावा और कोई चिकित्सा ही इन दोनों रोगों की नहीं है। यही कारण है कि किसी डाक्टर से इस रोग के सम्बन्ध में परामर्श लेने पर वह आपरेशन के ही लिए सलाह देता है। प्राकृतिक ढङ्ग से चिकित्सा करने पर यह रोग बड़ी आसानी से मिट जाता है। यह बात अवश्य है कि अनुभवी चिकित्सक ही इस रोग का इलाज कर सकते हैं। स्वयं घर पर इलाज करने में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हो सकती हैं। परन्तु जहाँ अच्छा चिकित्सक मिलने की सुविधा न हो वहाँ स्वयं इलाज करना चाहिए। नीचे हम एक व्यवस्था-पत्र दे रहे हैं इससे बहुत लाभ होता है। साथ ही हम यह भी निवेदन कर देना चाहते हैं कि इस चिकित्सा में तुरन्त ही यदि लाभ न दिखाई पड़े तो बच्चों के माता-पिता को निराश नहीं होना चाहिए। कभी-कभी किसी-किसी को बहुत अधिक दिनों में लाभ दिखाई देता है और काफी लम्बे अरसे तक इलाज करने की आवश्यकता पड़ती है।

केवल उन्हीं लोगों को इस चिकित्सा से लाभ कम होता है जिनका रोग Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida काफी पुराना हो गया रहता है और इतना बढ़ गया रहता है कि इस

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चिकित्सा का उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता।

आरम्भ में बच्चे को एक मास के लगभग केवल फल पर रखिए। यदि एक मास तक केवल एक ही फल पर रखा जाय तो और अच्छा है। दिन भर में तीन-चार बार ही फल खिलाना चाहिए। यदि कई तरह का फल देना हो तब भी एक बार एक ही तरह का फल देना चाहिए। एक मास बाद बच्चे को रोटी और सब्जी देनी चाहिए। और दिन भर में दो बार फल देना चाहिए। एक बार दूध देना चाहिए। और ध्यान इस बात का रखना चाहिए कि बच्चे का पेट साफ रहे। आरम्भ में चार-पाँच दिनों तक गरम पानी का एनिमा देना चाहिए। इसके बाद ठंडे पानी का एनिमा महीनों तक रोज भी देने की आवश्यकता पड़ सकती है। गरम पानी से गले का सेंक करना चाहिए। उसमें अदरक का रस या संतरे का रस मिला कर गरारा कराना और अच्छा है।

बच्चे को घर के बाहर अधिक खेलने देना चाहिए। गहरी साँस लेने का अभ्यास डालना चाहिए। ताजी साफ हवा में टहलने और खेलने को प्रोत्साहित करना चाहिए और मौका भी देना चाहिए। बच्चों को नाक से साँस लेने का अभ्यास कराना चाहिए। कभी-कभी भाप से गले के भीतर सेंकने की भी आवश्यकता पड़ती है। गले में भाप पहुँचाते समय इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि गला न जलने पाये। काफी हलकी भाप और दूर से लेनी चाहिए। प्रतिदिन गले पर गीले कपड़े की पट्टी रखनी चाहिए। चीनी और मिठाई बिलकुल बन्द कर देनी चाहिए। अकसर इतने ही से बहुतों को लाभ हो जाता है। बहुतों को महीने १५ दिन के बाद दो-तीन बार या आवश्यकतानुसार कई बार फलाहार वाला क्रम दुहराना पड़ता है।

बड़ों को जब यह रोग होता है तब उन्हें उपवास भी कराना पड़ता है और नेती का व्यवहार करना पड़ता है।

अदरक और नमक जल में डालकर उबाल लेना चाहिए और उसी पानी से गरम-गरम कुल्ले करना चाहिए और नारायण तेल की मालिश गले पर बाहर की ओर करनी चाहिए और रुई के पहल से सेंकना चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida
कब्ज दूर करने के लिए गुलकन्द आधा तोला में २ माशा हर्रे का चूर्ण

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
मिलाकर खिलाना चाहिए।

जब टान्सिल में एक बार सूजन हो जाती है तो जरा-सा अपथ्य होने पर पुनः पुनः हो जाया करती है अतः ठंडक लगने से बचाना चाहिए।

हृदय रोग

हृदय रोग के अनेक भेद हैं। इस छोटी सी पुस्तक में उन सब का वर्णन दे सकना सम्भव नहीं है। उन सब भेदों में से कुछ ही छोटे बच्चों को होते हैं। हृदय हमारे शरीर का बहुत आवश्यक अंग है। हृदय धड़कना या ऐसे ही अनेक रोगों को हृदय का रोग कहते हैं। इसलिए इससे सदैव सावधान रहना चाहिए। बच्चों में अक्सर ये रोग इसलिए हो जाते हैं कि उनके अनेक रोगों को एलोपैथी दवा देकर दवा दिया जाता हैं। रोगों को दवाने का जो इलाज किया जाता है, चाहे जिस तरह की चिकित्सा-पद्धति से होता हो, वह गलत है। वही गलत ढङ्ग का इलाज अनेक रोगों का कारण हो जाता है। ऐसपिरिन आदि खाने से भी हृदय कमजोर हो जाता है और अनेक प्रकार के अन्य रोग भी हो जा सकते हैं। हृदय का आकार वढ़ जाना, दर्द होना, धड़कना आदि अनेक रोग हैं जो हृदय में होते हैं। हृदय के कपाट के रोग भी होते हैं। हृदय में शूल भी होता है। उन सवका वर्णन हमारी पुस्तक "अपूर्व चिकित्सा विधान" में देखिए।

चिकित्सा

हृदय रोग को दूर करने के लिए एलोपैथ डाक्टर हार्ट टानिक दिया करते हैं। यह गलत तरीके का इलाज है। बच्चों को फल और दूध खाने को दीजिए। रोटी चावल आदि न खिलावें अथवा कम कर दें। बच्चे में जीवनी शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न करें। खुली हवा में जहाँ ताजी और साफ हवा आती हो, बच्चों को गहरी साँस लेने को कहिए, खूब खेलने दीजिए। इतना ही बच्चे के रोग को दूर करने के लिए काफी है। यदि और आवश्यकता हो तो उसकी छाती पर नीले शीशे का प्रकाश डालना चाहिए। आधे घंटे तक यह प्रकाश प्रातः ७-८ बजे धूप में डाला जाता है। यदि धूप तेज लगती है तो सिर छाया में रखा जाता है। नीली बोतल में धूप में पकाया पानी आधी-आधी छटाँक की मात्रा में कई बार देने से भी लाभ होता है। यदि
Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chandigarh

रोग बढ़ गया हो तो अच्छे चिकित्सक से परामर्श लीजिए। अर्जुन वृक्ष की छाल का चूर्ण ४-६ रत्ती और मोंती की सीप की भस्म १ रत्ती हृदय रोग के लिए अच्छी औषधि है।

एलोपैथ डाक्टर पालाडैक नामक शरवत देते हैं।

प्लूरिसी

छाती में दोनों ओर दो फेफड़े हैं। ये फेफड़े शरीर के बड़े आवश्यक अंग हैं। इन दोनों फेफड़ों के चारों ओर एक झिल्ली या परदा होंता है। उस परदे को अँगरेजी में प्लूरा कहते हैं। यह झिल्ली दोहरे पर्त की होती है। उसी झिल्ली में या उसके नीचे पानी इकट्ठा हो जाता हैं। उस प्लूरा में प्रदाह भी हो जाता है। प्लूरा में पानी जमने या इकट्ठा होने को प्लूरिसी कहते हैं। यह अक्सर छोटे बच्चों में निमोनिया के बाद हो जाता है। निमोनिया में जब एलोपैथ गलत ढङ्ग का इलाज करते हैं, रोग को दबाने का प्रयत्न करते हैं तभी अक्सर यह रोग होता है। बिना निमोनिया हुए भी यह रोग हो सकता है। प्लूरसी को क्षय रोग का पूर्व रूप समझा जाता है क्योंकि प्लूरसी वाले रोगी को क्षय रोग भी हो जाता है।

इस रोग में खाँसी आती है, ज्वर रहता है, पसली में दर्द होता है, फेफड़े के नीचे दर्द होता है। जब पानी अधिक हो जाता है तब उसकी आवाज भी सुनी जा सकती है। इस रोग को आयुर्वेद में उरस्तोय—छाती में पानी इकट्ठा होना—कहते हैं।

एलोपैथ की राय में इस रोग का सफल इलाज यही है कि आपरेशन करा कर पानी निकलवा दिया जाय। उनके मत से पानी निकालने का अन्य कोई उपाय ही नहीं है। जब तक पानी सूख न जाय या निकल न जाय रोगी को चैन नहीं मिल सकता। लेकिन उचित रीति से इलाज करने पर बिना आपरेशन के ही पानी सूख जाता है।

चिकित्सा

इस रोग में सबसे अधिक आवश्यक यह है कि बच्चे को उपवास कराया जाय और यदि आवश्यक हो तो संतरे का रस दिया जाय। पानी देने की आवश्यकता

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हो तो गरम पानी दिया जाय और उसमें थोड़ा सा सन्तरे का रस दिया जाय। जब रोग आराम हो जाय तब कुछ दिन फलाहार कराया जाय। फलाहार के सम्बन्ध में काफी अधिक लिखा गया है उसी नियम के अनुसार दिया जाय। प्रति दिन एनिमा दिया जाय। एनिमा दोनों समय देना चाहिए। यदि दोनों समय किसी कारण एनिमा न दिया जा सके तो कम से कम एक बार अवश्य देना चाहिए। कपड़ा भिगोकर छाती पर पट्टी रखनी चाहिए। इससे दर्द दूर होने में बहुत सहायता मिलती है।

(१) च्यवन प्राश १ तोला और रस सिन्दूर $\frac{१}{२}$ रत्ती, अभ्रक भस्म $\frac{१}{२}$ रत्ती मिलाकर देने से इस रोग में लाभ होता है। ज्वर की दशा में च्यवन प्राश नहीं देना चाहिए।

(२) काकड़ासिंगी, अतीस, नागरमोथा, कायफल, छोटी इलायची वंस-लोचन इनका चूर्ण करके अदरक का रस और शहद दोनों मिलाकर उसी के साथ ३ माशे की मात्रा में दिन में ३-४ बार देना चाहिए।

(३) एलोपैथ डाक्टर इस रोग में स्ट्रेप्टो माइसिन का एक इनजेक्शन और आइसोनेक्स टेबलेट देते हैं। टेवलेट ३ देनी चाहिए। यह क्रम ३ महीने चलता है।

निमोनिया

निमोनिया दो तरह का होता है। ब्रांको निमोनिया और लोवर निमो-निया। दो बरस तक के बच्चों को अकसर ब्रांको निमोनिया ही होते देखा जाता है। तीन बरस के अन्दर लोवर निमोनिया बच्चों को बहुत कम होता है परन्तु ४ बरस के बाद अकसर यह हुआ करता है। छोटे बच्चों को लोवर निमोनिया उतना घातक नहीं है जितना बड़ी उम्र के लोगों को होता है। श्वास-पथ को अंग्रेजी में ब्राँकिया कहते हैं। इस स्वास-पथ में जब निमो-निया का आक्रमण होता है तब उसे ब्रांको निमोनिया कहते हैं। फेफड़े के लोब में जब निमोनिया का आक्रमण होता है तब उसे लोवर निमोनिया कहते हैं।

निमोनिया में १०२ डिग्री तक ज्वर रहता है। लगातार खांसी आती रहती है, साँस बाहर कष्ट से निकलती है इसीलिए यह लम्बी होती है और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
उसमें एक तरह की पीड़ा मिश्रित आवाज आती है। खाँसी में जो कफ आता है वह लाल रंग का होता है और उसका रंग ईंट के चूर्ण का-सा होता है। यह पीड़ा मिश्रित ध्वनि अकसर उस समय शान्त रहती है, नहीं सुनाई पड़ती जब बच्चा चुपचाप पड़ा हो। साँस लेने में नाक के नथुने फूलते हैं यह निमोनिया का खास लक्षण है। इस रोग में अकसर देखा जाता है कि प्यास तो लगती है परन्तु भूख बिलकुल ही नहीं रह जाती। फिर भी एलोपैथ लोग रोगी का बल कायम रखने के लिए दूध आदि कुछ न कुछ खिलाया करते हैं।

चिकित्सा

निमोनिया में ज्वर रहता ही है। इसलिए ज्वर का ही इलाज इस रोग में होना चाहिए। ज्वर का इलाज यही है कि जब तक ज्वर न चला जाय तब तक उपवास कराया जाय। उपवास के समय केवल मीठे सन्तरे का रस दिया जाय। और पानी पीने के लिए इच्छा भर दिया जाय। दूध आदि बन्द कर दिया जाना चाहिए। एनिमा दोनों समय दिया जाय। पानी गरम-गरम दिया जाय। चेस्ट पैक—छाती पर गीली पट्टी—दिन में कई बार दी जाय। गले पर गीली पट्टी एक बार दी जाय। यदि छाती में दर्द हो तो मिट्टी की पट्टी रखी जाय। इतने ही से निमोनिया आराम हो जाता है। जब ज्वर दूर हो जाय तब कुछ दिनों तक फलाहार कराया जाय, इसके बाद साधारण भोजन दिया जाना चाहिए।

निमोनिया अकसर इस कारण होता है कि मीजिल्स और हूपिंग कफ जैसे सामान्य रोगों में गलत ढंग का इलाज करके लोग इस रोग की नींव डाल देते हैं। मीजिल्स के बाद तो अकसर निमोनिया हो जाता है। जब ज्वर में भोजन दिया जाता है तभी अनेक प्रकार के उपद्रव उठ खड़े होते हैं। और निमोनिया आदि भी उपद्रव की ही तरह होते हैं। एलोपैथ लोग ज्वर में अन्धाधुन्ध भोजन कराते हैं, साबूदाना, दूध, बारली आदि खूब खिलाते हैं। सामान्य ज्ञान रखने वाला रोगी समझता है कि हमारे चिकित्सक बल न घटने देने के लिए दूध आदि दे रहे हैं। वह यह नहीं समझता कि यही भोजन, जो उसे बिना आवश्यकता के दिया जा रहा है, अनेक भावी रोगों की जड़ है जिसे वह इस समय नहीं समझ पा रहा है।
Arya Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एलोपैथ लोग सिबेजाल या पेनसिलीन आदि का व्यवहार इस रोग में करते हैं। आयुर्वेदीय मत से अनेक औषधियों की व्यवस्था की जा सकती है।

आयुर्वेदीय मत से चिकित्सा करने के लिए उपवास आदि की व्यवस्था करनी पड़ेगी।

छाती पर पुराना घी की मालिश करनी चाहिए।

अभ्रक भस्म ½ रत्ती, शृंग भस्म ½ रत्ती, सीतोपलादि ४ रत्ती, शंख भस्म ½ रत्ती, मृत्युञ्जय रस ½ रत्ती, गोंदन्ती १ रत्ती मिलाकर ऐसी ३-४ मात्रा दिन में ४-४ घंटे पर देने से लाभ होता है। खाँसी बहुत आती हो तो कंटकारी अवलेह अथवा वासावलेह देना चाहिए। अथवा ऊपर वाली औषधि वासावलेह के साथ देनी चाहिए।

हूपिंग कफ—कुकुर खाँसी

हूपिंग कफ एक प्रकार की सूखी खाँसी है। छोटे बच्चे अकसर इस रोग से पीड़ित होते हैं। चार बरस से लेकर बारह वर्ष तक के बच्चों को यह रोग खासतौर से होता है। इसमें खाँसी बड़ी तेजी से आती है। कफ इतना सूखा रहता है कि खाँसते-खाँसते बच्चे को कै हो जाती है, चेहरा लाल हो जाता है। यह छूत का रोग है, एक बच्चे से दूसरे बच्चे को लग जाता है। एलोपैथ इस रोग की उत्पत्ति एक प्रकार के कीटाणु से मानते हैं। परन्तु वस्तुतः यह रोग अधिक खिलाने से होता है। मैदा, चीनी, पालिश चावल और अन्य ऐसी चीज जिसमें खनिज लवणों का अभाव होता है अधिक मात्रा में खिलाने से इस रोग के होने की अधिक सम्भावना रहती है।

खाँसी का दौरा होता है। ये दौरे ४०-५० बार तक रोज होते हैं। दो सप्ताह तक रोग बढ़ता है, दो सप्ताह तक रुका रहता है, इसके बाद घटना आरम्भ हो जाता है। इस प्रकार ४०-४५ दिनों तक यह रोग रहता है। परन्तु किसी-किसी का यह रोग ३-३ मास तक नहीं छूटता। इस रोग में श्लेष्मिक कला की सरदी हो जाती है। किसी अन्य रोग में शामक चिकित्सा करने से इस रोग के होने की भी सम्भावना रहती है। इस रोग को कुकुर खाँसी भी कहते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चिकित्सा

इस रोग में यदि गलत ढंग का इलाज किया जाय तो रोग के छूटने में वहुत विलम्ब लगता है और अनेक उपद्रव भी उठ खड़े होते हैं। इस रोग का सीधा-सादा इलाज यह है कि वच्चे को उपवास कराया जाय और उपवास में केवल मीठे सन्तरे का रस दिया जाय। पानी में मिला कर भी सन्तरे का रस दिया जा सकता है। जहाँ सन्तरा न मिले वहाँ किसी पतले रसवाले फल का रस दिया जा सकता है। यदि और कुछ न हो सके तो मुनक्का पानी में उबालकर वही रस देना चाहिए। उपवास के दिनों में दूध भूलकर भी नहीं देना चाहिए यह समझ लेना चाहिए कि दूध पतला होते हुए भी पूर्ण भोजन है। दूध देने से उपवास का काम नहीं होता। गरम पानी से एनिमा रोज देना चाहिए गले, पर और छाती पर कपड़े की गीली पट्टी रखनी चाहिए। पानी गरम दिया जा सकता है। दो-तीन दिनों में ही रोग की गम्भीरता मिटने लगती है। जव गम्भीरता कम होने लगे तव फल खिलाना आरम्भ करना चाहिए। तीन-चार दिन फल खिलाने के वाद वच्चों के लिए उचित भोजन देना चाहिए। एनिमा तव भी देते रहना चाहिए। वच्चे को गहरी साँस लेने की आदत डालनी चाहिए। वच्चा यदि खेलता-कूदता हो तो जहाँ तक सम्भव हो अधिक काल तक मैदान या वाग में रखा जाय। थोड़ी देर नंगे वदन धूप लेना चाहिए।

(१) तीसी का लुआव देने से कफ ढीला हो जाता है।

(२) तीसी, विहीदाना दोनों को अन्दाज से लेकर थोड़े पानी में भिगो दें। तीन घंटे वाद लुआव निकाल लें। उसमें थोड़ी मिश्री मिलाकर तीन-चार वार देने से कई दिनों में कफ ढीला हो जाता है।

(३) काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, पीपरि, कायफल, सोंठ, मिर्च, जवाइन और मंगरैल सवको वरावर-वरावर लेकर चूर्ण वना ले। इस चूर्ण की ४-५ रत्ती की मात्रा में १ रत्ती वंसलोचन का चूर्ण मिला कर शहद से चटाना चाहिए।

(४) गरम पानी पीने को देना लाभदायक है।

(५) कदली क्षार शहद के साथ चटाने से इसमें लाभ होता है। मात्रा २ रत्ती।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(६) वासा क्षार १ रत्ती की मात्रा में शहद से चटाने से भी लाभ होता है।

(७) सीतोपलादि चूर्ण के साथ में भी वासाक्षार दिया जाता है।

(८) प्रवाल आधी रत्ती, श्रृंग भस्म २ चावल, अभ्रक भस्म १ चावल चन्द्रामृत रस २ चावल शहद से देना चाहिए। यह १ मात्रा है ऐसी ३-४ मात्रा दिन में देना चाहिए।

भटकटैया का पंचाग २ तोला, मुनक्का १० दाना, पानी २॥ छटाँक। धीमी आँच पर काढ़ा बनाकर चौथाई बच जाय तो उतार कर छान लें। शहद १० बूँद मिलाकर १-१ सम्मच दिन में ३-४ बार पिला दें। इससे कफ जल्द ढीला होता है।

च्यवन प्राश खाँसी की उत्तम औषधि है। बच्चे की अवस्था के अनुसार चार आने भर या इससे कुछ कमवेश दिया जा सकता है। १ वर्ष से ऊपर की अवस्था के बच्चों को यह दिया जा सकता है। इस से कम अवस्था के बच्चों को नहीं।

कंटकारी अवलेह भी खाँसी की अच्छी औषधि हैं। बच्चों के लिए इसकी भी खुराक चार आने भर दी जानी चाहिए।

कास

(१) प्रवाल भस्म १-१ रत्ती की मात्रा में शहद से चटाने से खाँसी में लाभ होता है।

(२) नागर मोथा, अतीस, पीपरि और ककड़ासिंगी १-१ तोला की मात्रा में लेकर कपड़छन चूर्ण करके शीशी में रख ले। २-३ रत्ती की मात्रा में दिन में ३-४ बार शहद से चटाने से बालकों की खाँसी, ज्वर एवं अतिसार में लाभ होता है।

(३) सीतोपलादि चूर्ण २-३ रत्ती की मात्रा में दिन में ३-४ बार चटाने से खाँसी में लाभ होता है।

(४) शर्बत वासा चटाने से खाँसी में लाभ होता है।

(५) लऊक सपिस्ता और दयाकूजा चटाने से बच्चों को सूखी खाँसी में आराम पहुँचाता है दिन में २ बार लऊक सपिस्ता देना चाहिए और दो बार दयाकूजा देना चाहिए। ये दोनों दवायें यूनानी हकीमों के यहाँ बनी तैयार

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
मिलती है।

(५) तालिसादि चूर्ण २-३ रत्ती शहद के साथ चटाने से खाँसी में लाभ होता है। दिन में ३-४ वार चटाना चाहिए।

(७) चन्द्रामृत रस सूखी खाँसी में अच्छा लाभ करता है। आधी रत्ती की मात्रा में बच्चों को दी जानी चाहिए।

(८) प्रवाल भस्म २ चावल बरावर, सीतोपलादि चूर्ण ४ रत्ती, अभ्रक भस्म १ चावल भर, शृंग भस्म १ चावल भर, शंख भस्म आधी रत्ती, चन्द्रामृत रस २ चावल भर सबकी एक खुराक बनाकर शहद से या वासा शर्बत से देना चाहिए। ऐसी ३-४ खुराक दिन भर में देना चाहिए।

(९) सीतोपलादि चूर्ण ३ रत्ती में २ चावल बरावर खाने वाला सोडा देने से बच्चों की खाँसी में अच्छा लाभ होता है। कफ नाशक गुण क्षार में अधिक होता है। उसी प्रकार खाने वाले सुहागे का लावा भी २ चावल के बरावर मिला कर दिया जा सकता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय ५

त्वचा के रोग

एक्जीमा—उकवत या अपरस

एक्जीमा खुजली का ही एक भेद है। यों तो इसकी कई जातियाँ हैं परन्तु बच्चों को सब नहीं होती हैं। इसलिए इस पुस्तक में उन सब भेदों का वर्णन करना आवश्यक नहीं है। बच्चों को दो प्रकार का एक्जीमा होता है, एक गीला और दूसरा सूखा। सूखे एकजीमा में खुजली तो होती है परन्तु उसमें से मवाद वगैरह नहीं निकलता, केवल रूखी भूसी सी निकलती है। गीले एक्जीमा में मवाद भी निकलता है।

छोटे बच्चों को भोजन की गड़बड़ी से ही यह रोग होता है। जब बच्चों को ऐसा भोजन दिया जाता है जो रक्त को दूषित कर देता है तथा जिससे शरीर में एक प्रकार का विष इकट्ठा हो जाता है तभी यह रोग होता है। जो बच्चे केवल अपनी माँ का दूध पीते हों और कुछ भी भोजन न करते हों यदि ऐसे बच्चों को यह रोग हो जाय तो समझना चाहिए की माता का भोजन ऐसा है जिसमें मांस, मछली और अण्डे की विशेषता है। रक्त का विकार दूर करनेवाले तत्वों की कमी है और वह भोजन माता के दूध में विष की मात्रा को बढ़ा रहा है और बच्चे में रोग उत्पन्न कर रहा है।

एक्जीमा शब्द का अर्थ होता है त्वचा का प्रदाह। इसमें पहले त्वचा का रंग लाल हो जाता है और उसमें दाने निकलते हैं। फिर उन दानों में मवाद पड़ जाता है। एक के बाद दूसरे दाने निकलते रहते हैं और घाव बढ़ता रहता है। कुछ दिन में पपड़ी पड़ती है और उसमें बड़े जोरों की खुजली चलती है और बच्चा खुजला देता है। सब घाव खुजलाने से खुल जाता है, घाव ताजा हो जाता है और बढ़ता जाता है। आयुर्वेद में खुजली को कण्डू और एक्जीमा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

को पामा कहते हैं। वस्तुतः खुजली और पामा दोनों ही चर्मरोग हैं और ऐसे भोजनों के प्रभाव स्वरूप ही उत्पन्न होते हैं जो रक्त शुद्ध करने में असमर्थ होते हैं। गीले एक्जीमा और खुजली का इलाज भी प्रायः एक ही तरह का होता है।

चिकित्सा

इस रोग का प्रधान इलाज यही है कि शरीर से विष निकाल दिया जाय। रक्त पूर्ण रूप से स्वच्छ और निर्दोष हो जाय। एलोपैथ चिकित्सक रोगों को दबाने का प्रयत्न करते हैं अतः वे इस रोग को भी दबा देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि क्षय, तपेदिक, संग्रहणी आदि अन्य भयानक रोग उत्पन्न हो जाते हैं और इन रोगों के उत्पन्न होने का दोष चिकित्सक चालाकी से अपने ऊपर न लेकर कीटाणुओं के सर पर मढ़ता है।

सभी तरह के अन्न बन्द कर देना अच्छा होता है। यदि ऐसा सम्भव न हो तो भी कुछ दिन केवल फल खाकर रहा जाय। फलाहार कम से कम १ सप्ताह अवश्य कराया जाय। उसके बाद रोटी और सब्जी खाने को दी जायँ। तरकारियाँ और फल काफी अधिक मात्रा में खाये जायँ। मसाले, चीनी, गुड़ और मिठाई की प्रायः सभी चीजें एक दम बन्द कर दी जायें। दोनों समय गरम पानी का एनिमा दिया जाय। धूप स्नान और वायु स्नान किया जाय। यदि मीठा देने की अत्यन्त आवश्यकता हो तो केवल शुद्ध-शहद थोड़ी मात्रा में दी जा सकती है।

स्थानिक उपचार के तौर पर दो बार भाप से उसे धोया जाय। अथवा गरम जल में इपसम साल्ट डाल कर भी धो सकते हैं। नारियल के तेल में नीबू का रस डालकर धूप में पका लीजिए और वही तेल घाव पर लगाइए। इस उपाय से रोग दूर होने में थोड़ा विलम्ब अवश्य लगेगा परन्तु शरीर निर्दोष हो जायगा और अन्य कोई रोग उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं रहेगी।

गंधक का लोशन या गंधक का मलहम लगाने से घाव जल्द सूखता है परन्तु नेचर क्योर के सिद्धान्त के अनुसार कोई भी चीज घाव पर नहीं लगाना चाहिए। ऐसा प्रबन्ध रखना चाहिए जिसमें बच्चा घाव को खुजलाने न पावे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

खुजलाने से घाव सूखने में बहुत विलम्ब हो जाता है। डाक्टरों का विचार है कि इस रोग पर तेल या इसी तरह की कोई चीज नहीं लगानी चाहिए क्योंकि तेल लगाने से रोग दूर नहीं होता। आयुर्वेद में अनेक तेल ऐसे हैं जो औषधियों से तैयार किये जाते हैं और उनसे एक्जीमा में लाभ होता है। महामरिचादि तैल, महा सिंदूरादि तैल अच्छे लाभदायक हैं। कासीसादि मलहम बहुत लाभकारी है। इस का नुस्खा नीचे दिया जा रहा है।

कासीसादि घृत

हीरा कसीस, हल्दी, दारु हल्दी, नागरमोथा, हरताल, मैनसिल, कमीला, गंधक, वायविडंग, गूगल, मोम, काली मिर्च, कूट, सफेद सरसों, रसांजन, सिन्दूर, गन्धा विरोजा, लाल चन्दन, कत्था, नीम के पत्ते, करंज के वीज, सारिवा, बच, मजीठ, मुलहठी, जटामांसी, सिरस की छाल, लोध, पद्माख, जंगी हड और पंवार के वीज (चकवड़ के वीज) इन ३१ औषधियों को १०-१० ग्राम लेकर सब का चूर्ण करके तांवे के वर्तन में १३०० ग्राम घी डाल कर सब चूर्ण उसमें मिला दे और ७ दिन धूप में पकने दे फिर इस मलहम को देह में लगावे। सब तरह के कुष्ठ, दाद, खाज, विर्चचिका (बेवाई) विसर्प, मस्तक के फोड़े, नाड़ी व्रण, उपदंश, दुष्ट व्रण आदि सम्पूर्ण रोग नष्ट होते हैं।

दाद—रिंगवर्म

दाद दोषज व्याधि उतनी नहीं है जितनी क्रिमिज। दाद में एक प्रकार के क्रिमि होते हैं। जगह लाल पड़ जाती है उसमें खुजली होती है और छोटे-छोटे दाने उभड़ते हैं और दानों का घेरा अंगूठी की तरह गोल होता है। इसी कारण उसे रिंगवर्म कहते हैं। अंगूठी को अंगरेजी में रिंग कहते हैं।

दाद यों तो शरीर के किसी भी अंग में हो सकती है परन्तु पोतों पर जांघ के जोड़ों के पास, पट्ठों में और सर पर अकसर होती है। एक दाद ऐसी होती है कि बरसात के दिनों में होती है और बरसात के बाद उसका जोर कम हो जाता है।

दाद क्रिमि से उत्पन्न होने वाला रोग अवश्य है परन्तु यह रोग उन्हीं लोगों को अकसर होता है जिनमें जीवनी-शक्ति कम होती है, जिनका स्वास्थ्य

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दुर्वल होता है, जिन्होंने कुत्सिन भोजनों के द्वारा रोग निवारक शक्ति घटा ली है। इस रोग का इलाज वही होना चाहिए जिसमें स्वास्थ्य उन्नत हो।

चिकित्सा

जिस ढङ्ग का इलाज एक्जीमा के लिए वताया गया है उसी तरह का इलाज दाद का भी होना चाहिए। आजकल ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो दाद का सम्वन्ध किसी भी हालत में भोजन से मानने को तैयार हों। परन्तु सत्यता यह है कि भोजन के ऊपर ही हमारा स्वास्थ्य निर्भर है। इसलिए शरीर में कहीं भी कोई रोग हो उसके लिए जिम्मेदार हमारा भोजन ही है।

भोंजन सुधार, दोनों समय एनिमा का प्रयोग, सूर्य स्नान और वायु स्नान, नमक जल का स्नान, प्रातः काल टहलना, व्यायाम आदि से स्वास्थ्य में सुधार होता है और ये ही उपाय दाद को भी दूर करते हैं।

दाद के स्थान पर सूर्य की किरणें लगने देने से वड़ा लाभ होता है। दाद पर नीवू का रस लगाने से भी लाभ होता है परन्तू नीवू लगता है। नारियल के तेल में कपूर मिलाकर लगाने से दाद में वहुत लाभ होता है। दो तीन सप्ताह में दाद आराम हो जाता है। एसिड क्राइसोफनिक से तैयार किया हुआ मलहम भी दाद को आराम करता है। सुहागे की खील का मलहम भी दाद को आराम करता है। कासीसादि मलहम से दाद में भी लाभ होता है।

विसर्प

रक्त में गरमी पहुँच जाने से वच्चों को यह रोग अकसर होता है। गाल में अत्यन्त लाल चकत्ता निकलता है अथवा लाल सूजन हो जाती है और वह पसरने लगती है जैसे ऊपर से नीचे की ओर उतरने लगती है। किसी-किसी वच्चे में लाल रंग की फुंसियाँ निकलती हैं फिर उनमें पीप पड़ जाती है और ये फुंसियाँ पसरने लगती हैं। विसर्प उपरोक्त तीनों प्रकार का होता है।

अधिक आग तापने या धूप में घूमने-फिरने से या गरम पदार्थों के खाने-पीने से रक्त में गरमी बढ़ जाने के कारण भी यह रोग होता है।

चिकित्सा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

बच्चों को गुलकन्द या बड़ी हरड का चूर्ण खिला कर पेट साफ कर

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देना चाहिए। फिर रक्त सफा चूर्ण या अर्क खिलाना चाहिए। वृहन्मंजिष्ठादि क्वाथ अच्छा काम करता है। उसी औषधि को जल में भिगोकर अर्क खींच लेने से भी काम अच्छा चलता है। अगर अर्क निकालना हो तो प्रत्येक औषधि आध-आध पाव लेकर दूने जल में भिगोना चाहिए।

मलहम

लाल चन्दन का चूर्ण १ तोला, रस कपूर १ तोला, मुरदा शंख १ तोला सब को कूट-पीस कर महीन चूर्ण कर ले और ५ तोला गाय के घी में या नैनू में फेंट कर मलहम बना ले। दवा मिलाने के पहले घी को १०० बार पानी से धो लेना चाहिए। यह प्रयोग अनेक बार का प्रयोग किया हुआ है। घी न मिलने पर वेसलीन में भी यह मलहम बनाया जाता है।

यदि फुनसियाँ निकली हों तो उन पर रसौत का लेप करना चाहिए। यदि गुलाब जल में रसौत घोल लिया जाय तो अधिक गुणकारी लेप हो जाता है।

कत्था, चन्दन का बुरादा, मुरदा संग, मेहदी का फल सब को बारीक चूर्ण करके वेसलीन में या घी में मलहम बना ले। सब दवायें बराबर-बराबर जैसे १-१ माशे लेकर अन्दाजन ६ माशे घी में मलहम बनाले।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय ६

वात-नाड़ी सम्बन्धी रोग

कनवलशन—ऐंठन

बच्चों को ऐंठन का रोग कई कारणों से होता है। अकसर ऐसे लोगों के बच्चों को कनवलशन हुआ करता है जिनका मस्तिष्क कमज़ोर होता है, जिनको हिस्टीरिया का रोग होता है अथवा जिनके वंश के लोग शराब पीते हैं अथवा जिनके परिवार में सिफलिस या गर्मी का रोग हुआ रहता है।

मृगी, गुर्दे का रोग और मस्तिष्क रोग के कारण बच्चों को ऐंठन या फिट का रोग हुआ करता है कभी-कभी छूतदार रोगों के आरम्भिक रूप के कारण भी ऐंठन का रोग हुआ करता है। अजीर्ण के कारण अथवा क्रिमियों के कारण आँतों में ऐंठन होने के कारण भी ऐंठन का रोग होता है। कान बहने के कारण तथा गले के घाव के कारण अथवा दाँत निकलने के समय भी बच्चों को ऐंठन का दौरा हो सकता है।

एठन का लक्षण यह है कि शरीर की मांसपेशियों में एक प्रकार का तनाव और फिर फैलाव दौरे के रूप में होता है और जब मांस-पेशियों में संकोच या सिकुड़न होती है बच्चा ज़ोरों से मुट्ठी बाँध कर दाँतों को बन्द कर लेता है और चेहरा नीला पड़ जाता है। कभी-कभी धनुष टंकार की तरह भी हो जाता है। बच्चों में यह रोग अकसर हुआ करता है। किसी चतुर चिकित्सक से परामर्श लेना अच्छा है। यह रोग भयंकर है और अकसर बच्चे मर जाते हैं।

कनवलशन या ऐंठन का रोग इस प्रकार का भी हो सकता है कि २-३ मिनट ही रुके और बच्चा स्वस्थ हो जाय। कभी-कभी बार-बार इस प्रकार के दौरे आते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बच्चा बेहोश हो जाय और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मुंह से झाग आने लगे। यह मूर्च्छा या अपस्मार की तरह का रोग है। अपस्चार में ऐंठन होती ही है।

चिकित्सा

गरम जल का स्नान इस रोग के लिए विशेष उपकारी है। लम्बे टप में गरम जल भर कर—अवश्य जल इतना सामान्य गरम हो कि बच्चे को कष्ट न मिले बल्कि सुख मिले—उसमें बच्चे को बैठा या लेटा देना चाहिए। और कई मिनट तक लेटने देना अच्छा होता है। चूंकि ऐंठन वायु के कारण होती है इसलिए गरम जल में लेटने से मांस पेशियों का संकोच और तनाव रुक जाता है, वात-नाड़ियों में बल आ जाता है। जब रोग की दशा शान्त हो जाय तब गरम जल का स्नान बन्द कर देना चाहिए और गरम वस्त्र पहनाकर सामान्य गरम रखने की चेष्टा करनी चाहिए और गरम जल का एनिमा देकर पेट साफ कर देना चाहिए। कम से कम चौबीस घंटे तक कुछ भी खाने को न दिया जाय। दूध भी न मिले तो अच्छा है। हाँ, आवश्यकतानुसार गरम-गरम पानी पीने को देना चाहिए और पूरा आराम देना चाहिए। उसे लेटाये रखना चाहिए।

एलोपैथिक चिकित्सक मांसपेशियों को सुन्न कर देने के लिए कभी-कभी इंजेक्शन आदि का प्रयोग करते हैं। हमारी राय में इस प्रकार का कोई शामक उपाय करना उस समय प्राण बचाने के लिए लाभदायक हो सकता है परन्तु रोग को जड़ से नष्ट नहीं कर सकता।

चौबीस घंटे बाद फलों का रस और थोड़ा दूध देना चाहिए और तीन दिनों तक यही पथ्य रखना चाहिए। और गरम पानी का एनिमा रोज देना चाहिए। फिर फलों के रस के बाद फल देना चाहिए और एक सप्ताह फल और दूध पर रखने के बाद यदि बच्चा अन्न खाने वाला हो तो रोटी-सब्जी धीरे-धीरे आरम्भ करनी चाहिए और इस प्रकार भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए कि फिर दोष शरीर में एकत्र न होने पावे।

यदि यह रोग किसी भयानक रोग के पूर्व-रूप के रूप में प्रगट हुआ हो तो प्रधान रोग की भी चिकित्सा करनी चाहिए। परन्तु ऐसी चिकित्सा कभी भी नहीं करनी चाहिए जिसमें रोग का कारण दब जाय।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इस रोग की प्रथम चिकित्सा यही है कि रोगी को होश में लाया जाय ऐसे बच्चों को चन्दन की लकड़ी का धुवाँ नाक के पास दीजिए। उसकी आँख पर कोमलता से हाथ फेरने से दौरा जल्द समाप्त होता है। बच्चे के हाथ-पाँव को दबाकर रखना चाहिए जिसमें अधिक न ऐंठ जायँ।

चूने में नौसादर का चूर्ण मिलाकर कपड़े की पोटली में बाँधकर सुँघाने से बच्चा तुरंत होश में आ जाता है।

बच्चे के मुँह पर शीतल जल का छींटा मारने से मूर्च्छा दूर होती है। साफ हवा में रखिए। कस्तूरी असली १ रत्ती हींग ८ रत्ती दोनों को खूब घोंट कर रख लीजिए। इसमें से १-१ चावल दूध के साथ घोलकर बच्चे को दिन में दो बार चटाइए। ४० दिन के प्रयोग से बच्चा स्वस्थ हो जाता है। कस्तूरी गरम चीज है इसलिए यह प्रयोग जाड़े में करना चाहिए।

मोती की पिष्टी १ रत्ती की मात्रा में शहद के साथ ४० दिनों तक खिलाने से रोग चला जाता है।

बच्चे को पौष्टिक किन्तु जल्द पचने वाला आहार देना चाहिए।

इनफैन्टाइल परालिसिस(बच्चों का लकवा)

बच्चों का यह रोग बड़ा गम्भीर है। यह रोग अकसर छः वर्ष की अवस्था तक होता है। एलोपैथ चिकित्सकों का मत है कि एक प्रकार के कीटाणु के मुख और नाक द्वारा प्रवेश पाने से यह रोग होता है। कभी-कभी यह रोग संक्रामक रूप मे भी फैलता है। कहा जाता है कि रीढ़ की हड्डी में प्रदाह होने के कारण यह रोग होता है।

यह बताने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती कि एलोपैथों की कीटाणुओं द्वारा रोग फैलाने की बात वैसी ही निराधार है जैसी अन्य रोगों के सम्बन्ध में। वस्तुतः यह रोग उन्हीं बच्चों को होता है जिनको उसना और उबला हुआ भोजन दिया जाता है जिसमें खनिज लवण और विटामिनों का अभाव रहता है। इस अभाव के कारण शरीर की रोग-निवारक शक्ति क्षीण हो जाती है और रोग का आक्रमण हो जाता है। कीटाणुओं का प्रभाव हमारे शरीर पर तभी होता है जब उनके जीने और बढ़ने के लिए हमारा शरीर अनुकूल पड़ता है। यह तभी सम्भव है जब शरीर की रोग-निवारक शक्ति घट जाती है। जब-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तक रोग-निवारक शक्ति रहती है तब तक कीटाणु हमारे शरीर में प्रवेश करके स्वयं नष्ट हो जाते हैं। अतः रोग का कारण हमारा दूषित भोजन है जिसके कारण रोग-निवारक शक्ति घटती है।

प्रयोग करके यह देख लिया गया है कि कबूतर, छोटी चूहिया, चूहे आदि को जब मैदा की रोटी और पालिश चावल और ऐसे ही भोजन जिनमें खनिज लवण तथा विटामिनों का अभाव होता है कई सप्ताह तक खिलाया जाता है तब उनमें इनफैन्टाइल पेरालिसिस के लक्षण प्रगट हो जाते हैं। और जब उनको बिना छने गेहूँ के आटे की रोटी, बिना पालिश किये चावल का भात तथा ऐसे ही प्राकृतिक अवस्था के पदार्थ दिये जाते हैं तब बड़ी तेज़ी से रोग के लक्षण गायब हो जाते हैं और वे स्वस्थ हो जाते हैं।

हमारी रीढ़ की हड्डी के भीतर से वातनाड़ियों का समूह जाता है। वह मस्तिष्क से निकलकर रीढ़ की हड्डी द्वारा नीचे उतरता है और उन्हीं की शाखाएँ हमारे पाँव और हाथों में जाती हैं और उनकी क्रियाओं और मांस-पेशियों को नियंत्रित करती हैं। रीढ़ के उन्हीं वातनाड़ी-केन्द्रों में, जो हाथ-पाँव की मांसपेशियों और गतियों के नियामक हैं, लोच और शक्ति के अभाव के कारण यह रोग प्रायः होता है। इसी को आयुर्वेद की भाषा में वात रोग कहते हैं क्योंकि वातनाड़ियों का विकार वात-विकार कहलाता है।

जब यह रोग होने को होता है तब हलका ज्वर, हाथ-पाँव में दर्द और सर्दी मालूम होती है अकसर इस लक्षण को भूल से चिकित्सक इनफ़्लुएंजा समझ लेता है। फिर थोड़े ही दिनों बाद देखा जाता है कि शरीर के किसी अंग में लकवा मार गया है। वह रोगी के उठाने या हिलाने से उठता या हिलता ही नहीं। अकसर एक ही हाथ या एक पाँव में यह रोग होता है परन्तु कभी-कभी एक हाथ और एक पाँव में भी यह हो जाता है और दोनों पाँव या दोनों हाथ, अथवा दोनों पाँव और दोनों हाथ में भी यह रोग हो सकता है। कुछ दिनों बाद रोग धीरे-धीरे मिट जाता है। परन्तु ऐसा सम्भव है कि कुछ मांसपेशियाँ निर्जीव ही रह जायँ, उनमें चेतना न आवे और धीरे-धीरे वे क्षीण होने लगें। इसका फल यह होता है कि वह अंग निष्प्राण तो रहता ही है हलका और पतला भी पड़ जाता है। अकसर बचपन का परालिसिस आराम

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हो जाता है परन्तु कुछ बच्चों में यह स्थाई रूप से रह ही जाता है। परालिसिस को हिन्दी में पक्षाघात या लकवा कहते हैं।

चिकित्सा

एलोपैथ चिकित्सकों की राय यह होती है कि यह छूतदार रोग है अतः वे छूत के रोग के समान ही इसका इलाज भी करते हैं। बच्चे को अन्य बच्चों से अलग रखना अच्छा होता है। दर्द को कम करने के लिए आक्रान्त अंग की मांसपेशियों को पूर्ण विश्राम मिलना चाहिए। यदि स्प्लिन्ट लगा दिया जाय तो अच्छा है। आक्रान्त स्थान पर सूखा सेंक करना या बालू का सेंक देना चाहिए। बिजली की चिकित्सा से इसमें लाभ होता है।

जब तक ज्वर रहे बच्चे को कुछ भी खाने को न दिया जाय उपवास कराया जाय और इस दशा में उसे केवल संतरे का रस और गरम जल दिया जाय। सन्तरे का रस और गरम जल उतना दिया जा सकता है जितना बच्चा चाहे। इन उपवास के दिनों में गरम जल का एनिमा देना चाहिए। जब ज्वर शान्त हो जाय, जीभ साफ हो जाय, तब बच्चे को केवल फल खाने को देना चाहिए। जब रोग दूर हो जाय केवल दुर्बलता रह जाय तब धीरे-धीरे रोटी-सब्जी पर आना चाहिए। और फल, तरकारियाँ, कच्ची खाई जानेवाली तरकारियाँ, सलाद, ताजा कच्चा दूध और मक्खन आदि भरपूर खिलाना चाहिए जिसमें बच्चे में जो खनिज लवण और विटामिनों का अभाव हो गया है वह दूर हो जाय। चीनी, मिठाई, मुरब्बे, मैदा, पालिश चावल आदि बिलकुल बन्द कर देना चाहिए। यदि बच्चा कुछ मीठा खाना ही चाहे तो उसे खजूर, मुनक्के, किशमिश, अंजीर और शहद आदि देना चाहिए। अच्छे प्राकृतिक चिकित्सक द्वारा रीढ़ की हड्डियों की हस्त चिकित्सा करानी चाहिए। आक्रांत अंग की मालिश इस रोग की सर्वोत्तम औषधि है। मालिश तेल से या सूखी दोनों तरह से होती है। मालिश चिकित्सा का एक विशेष अंग है। मालिश के विशेषज्ञ द्वारा यह कार्य कराना अधिक अच्छा है। हलकी भाप से आक्रान्त स्थान को सेंकने से भी विकार निकल जाता है और रोग दूर हो जाता है।

हमारी पुस्तक अपूर्व चिकित्सा विधान भी देखिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मेनिनजाइटिस

गर्दन और मस्तिष्क में, मस्तिष्क और रीढ़ के भीतर से जाने वाली वात-नाड़ी को ढकने वाली झिल्ली का नाम मेनिनजाइज़ है। इस झिल्ली या कला के प्रदाह को मेनिनजाइटिस कहते हैं। इसको देशी भाषा में गर्दन तोड़ बुखार कहते हैं। यह तीव्र रोग या तरुण रोग है। वच्चों को होनेवाले जितने भी तीव्र रोग हैं उनमें सबमें भयानक यह रोग है।

इसके कारणों के सम्बन्ध में कहा जाता है कि छूत के रोग के कारण या सिर में चोट लगने के कारण अथवा कान की हड्डियों के प्रदाह के कारण, जो फैलकर या बढ़कर सेरिब्रो स्पाइनल कार्ड तक चला जाता है, यह रोग वच्चों में हो सकता है। निमोनिया या रक्त के विषाक्त हो जाने से भी यह रोग हो सकता है। सिर में चोट लग जाने या सिर के वल गिर जाने के कारण भी मेनिनजाइज पर आघात लग जाने से यह रोग हो जाता है।

वच्चों के रोगों की शामक चिकित्सा करके उनके विष को दवाना इस रोग का प्रधान कारण है। गलत तरीके के भोजन से शरीर में दोषों के विगड़ने और एकत्र होने से इस रोग की नींव पड़ती है और सामान्य सा वाहरी कारण उपस्थित होने से रोग का उभाड़ हो जाता है।

इस रोग में नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है, वड़ा तेज ज्वर रहता है और भयानक सिर दर्द होता है। और ऐंठन या कनवलशन होता है। गर्दन के पीछे और रीढ़ के अन्दर तेज पीड़ा होती है, पीठ में तनाव हो जाता है क्योंकि इसकी मांसपेशियाँ तन जाती हैं और सिर पीछे की ओर खिंच जाता है और तन जाता है। आरम्भ में बेचैनी वहुत रहती है और शोर या शब्द वर्दाश्त नहीं होता और रोशनी की ओर ताकने में कष्ट होता है। वच्चा प्रलाप करने लगता है और कभी-कभी ऐसा होता है कि वच्चा अचेत पड़ा रहता है। कभी-कभी भयानक वमन होती है। किसी-किसी वच्चे के मुँह पर और वदन में भी दाग उत्पन्न हो जाते हैं और ऐसे ज्वर को दाग दार ज्वर कहते हैं। पेड़ू की दशा या तो साधारण रहती है या वह पीछे सिकुड़ जाता है और कब्ज रहने लगता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चिकित्सा

जैसे और ज्वरों में चिकित्सा होती है वैसे इस रोग में भी चिकित्सा करनी चाहिए। उपवास प्रधान चिकित्सा है। उपवास के दिनों में सन्तरे का रस देना चाहिए। गरम पानी का एनिमा देना चाहिए और गरदन पर मिट्टी की मोटी पट्टी रखनी चाहिए। सारे शरीर की या सीने और पीठ पर कपड़े की ठंडी पट्टी रखनी चाहिए। इसके वाद फलों पर कुछ दिन रखना चाहिए। तव बुद्धिमानी के साथ उचित भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए। अच्छा यह होता है कि इस प्रकार के रोगी का इलाज चतुर प्राकृतिक चिकित्सक की देख-रेख में हो। वच्चे को ऐसे कमरे में रखा जाय जहाँ प्रकाश की चकाचौंध कष्ट न दे।

डाक्टर लोग कमर पर रीढ़ के पास काटकर सेरिब्रो स्पाइनल तरल को निकाल देते हैं इससे सिर दर्द आराम हो जाता है और गर्दन का तनाव कम हो जाता है। सुन्न करनेवाली औषधियों का प्रयोग करके मांसपेशियों की ऐंठन कम करते हैं और कभी-कभी इस रोग के रक्त रस (सीरम) द्वारा चिकित्सा करते हैं।

एलोपैथ चिकित्सकों के इलाज द्वारा अकसर रोगी मर जाते हैं। यदि आराम भी होते हैं तो वच्चे कमजोर और रोगी हो जाते हैं। कभी-कभी वच्चे अन्धे और वहरे हो जाते हैं और लकवा भी मार जाता है। हमारी पुस्तक अपूर्व चिकित्सा विधान भी देखिए।

ट्यूबरकुलर मेनिनजाइटिस

क्षय जन्य मेनिनजाइटिस वच्चों को अकसर हुआ करता है। यद्यपि यह रोग वड़ों को भी हो सकता है। इस रोग में क्षय का लक्षण शरीर के किसी एक अंग में भी प्रगट हो सकता है और सारे शरीर का भी क्षय हो सकता है। कुछ दिनों तक वच्चे का स्वास्थ्य वहुत दुर्वल रहता है और तव यह रोग प्रगट होता है वमन, ऐंठन या जोरों का सिर दर्द होता है। इसके वाद गर्दन की मांसपेशियाँ तन जाती हैं और सख्त हो जाती हैं। सिर पीछे की ओर खिच जाता है। इस रोग से वच्चे अकसर नहीं वचते, मर जाते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चिकित्सा

इस रोग में चिकित्सा प्रायः निष्फल जाती है। यदि बच्चे को प्राकृतिक भोजन पर रखा जाय तो जान बचने की आशा कुछ की जा सकती है, ताजा दूध, ताजी हवा और फल-तरकारियों का प्रचुर प्रयोग ही लाभदायक होता है। शेष चिकित्सा उसी प्रकार की जानी चाहिए जैसी मेनिनजाइटिस की चिकित्सा में लिखा है। अच्छा यह होगा कि किसी अच्छे चिकित्सक से परामर्श लिया जाय।

विट्स डांस (कोरिया)

इस रोग को सेंट वाइटस डांस भी कहते हैं क्योंकि इसका आविष्कार उन्होंने ही किया था। यह रोग हमारे देश में बहुत कम होता है। इसकी गणना आयुर्वेद के वात रोग में की जानी चाहिए क्योंकि यह वात-नाड़ियों के कमजोर होने के कारण ही होता है। डाक्टर लोग भी मानते हैं कि इस रोग के मूल में रियूमेटिज्म अवश्य होता है। इस रोग में शरीर की कई मांसपेशियों या मांसपेशियोंके समूह में रोगी की बिना इच्छा के ही स्वयं कम्पन या हरकतें होती हैं और रोगी की वात-नाड़ियाँ उसको रोक नहीं पातीं। मांसपेशियों का यह कम्पन अकसर हाथ और मुँह में ही होता है। इस कम्पन को रोकने की चेष्टा बेकार होती है, रोकने की जितनी ही कोशिश की जाती है कम्पन उतना ही बढ़ जाता है। अकसर ऐसा होता है कि बच्चों के हाथ से चीजें गिर जाती हैं या चेहरा टेढ़ा-मेढ़ा हो जाता है। उत्तेजना, थकावट या कठिनाइयों में फँसने के कारण मानसिक परेशानियों से इस रोग की अकसर उत्पत्ति होती है। बच्चा इस रोग से आक्रान्त होने पर चिड़चिड़ा हो जाता है और उसका स्वभाव बदल जाता है। इस रोग में स्वर में अन्तर पड़ जाता है, स्वर स्पष्ट नहीं निकलते और जीभ मोटी हो जाती है।

कभी-कभी इस रोग में रियूमेटिज्म के लक्षण भी प्रगट होते हैं। जोड़ों में सूजन और दर्द प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। कुछ दिनों के बाद वात-नाड़ियों पर अधिकार ही नहीं रह जाता। बहुत बड़ी भीड़ में रहना, नींद न आना, लगातार शोर-गुल के बीच रहना, मानसिक उत्तेजना, अत्यधिक कार्य इन कारणों से यह रोग अकसर हो जाता है। सोते समय इस रोग का आक्रमण प्रायः

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
नहीं होता।

इस रोग के कारण के सम्बन्ध में बड़ी गलत धारणा चिकित्सकों में है। हमारी राय में माता-पिता से भी इस रोग का सम्बन्ध होना चाहिए। जिन माता-पिता का भोजन दूषित होता है, धातु-विकार होता है, वात-नाड़ी दौर्बल्य होता है उनके बच्चों को यह रोग होना चाहिए क्योंकि रोग का विष और वात-नाड़ी दौर्बल्य इनको विरासत में ही मिलती है। गलत भोजन, मांस, मछली, मैदा, चीनी, गुड़ आदि का अधिक व्यवहार करने से शरीर में एक प्रकार का विष इकट्ठा होता है वही विष रक्त में मिलकर रोग उत्पन्न होने का कारण बन जाता है।

चिकित्सा

यदि बच्चा स्कूल जाता हो तो स्कूल से हटा लेना चाहिए और उसे पूरा आराम देना चाहिए। किसी प्रकार की मानसिक चिन्ता पास न आने देना चाहिए। रोगी की चारपाई के चारों ओर नरम बिछावन या पुआल बिछा देना चाहिए जिसमें यदि रात को रोगी रोग के दौरे के समय गिरे तो चोट न लगे। एलोपैथ चिकित्सक इस रोग में संखिया देने की व्यवस्था करते हैं। शरीर में पहले से ही विष रहता है उसमें और विष प्रयोग करके उसकी मात्रा को बढ़ाना बड़ी नादानी है।

नीचे लिखी व्यवस्था से रोग जल्द आराम होता है। गरम पानी का एनिमा दिया जाय। एक सप्ताह या इससे भी कुछ अधिक दिनों तक केवल फलाहार कराया जाय, फिर दूध और फल की व्यवस्था की जाय। १५ दिन तक दूध और फल पर रखने के बाद धीरे-धीरे रोटी सब्जी पर आना चाहिए। किसी-किसी रोगी के लिए रीढ़ की हस्त-चिकित्सा करने की भी आवश्यकता पड़ जाती है।

रोग के अच्छा हो जाने के बाद भी कुछ दिनों तक ऐसे कार्य नहीं करना चाहिए जिससे उत्तेजना होती है और पढ़ना-लिखना, गाना-बजाना आदि बन्द रखना चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय ७

अपूर्ण पोषण के रोग

रिकेट्स—अस्थिदौर्बल्य

अस्थि दुर्बलता का रोग अकसर छोटे बच्चों को होता है। और ५ वर्ष की अवस्था तक बहुत अधिक संख्या में होता है। परन्तु ७ वर्ष की अवस्था से लेकर १८ वर्ष तक के नवजवान बच्चों को भी हो सकता है। हाँ, यह अवश्य है कि इस अवस्था में यह रोग बहुत ही कम लोगों को होता है।

भारतवर्ष में यह रोग प्राचीन काल में बहुत कम होता था अथवा बिलकुल ही नहीं होता था। क्योंकि यदि यह रोग इस देश में प्रचलित होता तो इसके बारे में हमारे शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख मिलता। कश्यप संहिता में फक्क रोग का नाम बाल-व्याधियों में मिलता है। फक्क रोग का लक्षण बच्चों के सूखा रोग से मिलता है। रिकेट या अस्थिदौर्बल्य या अस्थि-क्षय में कुछ विशेष लक्षण भी मिलते हैं। भारतवर्ष की भौगोलिक स्थिति ऐसी है, तथा यहाँ प्राचीनकाल में खाने-पीने की चीजों की इतनी इफरात रहती थी कि हर व्यक्ति, हर बच्चे और बूढ़े को पूर्ण पौष्टिक भोजन मिल जाता था। कोई भी किसी भी अर्थ में भूखा नहीं रहता था। रहने-सहने का ढंग प्राकृतिक था, खूब रोशनी, खूब धूप, विपुल स्वच्छ वायु प्रायः सबको प्राप्त थे अतः ऐसे स्वास्थ्य-पूर्ण वातावरण में अस्थि-क्षय या अस्थिदौर्बल्य जैसा रोग उत्पन्न नहीं हो सकता था।

एलोपैथिक चिकित्सक भी इस बात को अब मानने लगे हैं कि दूषित भोजन के कारण जिसमें पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्त्व नहीं होते और विटामिन डी तथा कैलशियम और फासफोरस की कमी रहती है यह रोग उत्पन्न होता है। योरुप, अमेरिका आदि देशों में भारतवर्ष की अपेक्षा अब भी यह रोग

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अधिक होता है क्योंकि इस सभ्यता के युग में उन लोगों को सूर्य का प्रकाश और धूप तथा उन्मुक्त स्वच्छ वायु नहीं मिल पाती। विटामिन और खनिज-लवण-रहित भोजन तो वहाँ अधिकांश लोग करते ही हैं। यही वजह है कि उन देशों में यह रोग-अधिक होता है।

इस रोग में अस्थियाँ विकृत हो जाती हैं, कमजोर हो जाती हैं और रोगी में रोग निवारक शक्ति का ह्रास हो जाता है।

१६१४ के युद्ध के बाद योरुप की भोजन-व्यवस्था बहुत बिगड़ गई थी लोग किसी प्रकार जीवन चलाने मात्र के लिए भोजन पाते थे। पौष्टिक भोजन का एक तरह से सर्वसाधारण के लिए अभाव हो गया था। भोजन में विटामिनों और खनिज लवणों का अभाव तो था ही, यह रोग बड़े जोरों से फैला। इस रोग के निराकरण के लिए अनुसंधान-कार्य आरम्भ हुए। जेनेवा में इसके सम्बन्ध में बहुत कुछ अनुसंधान किया गया। प्रोफेसर एडवर्ड मेलान बी ने सबसे पहले यह सिद्ध किया कि बसा में घुलनशील विटामिन डी की भोजन में कमी होने से रिकेट या अस्थिदौर्बल्य का रोग होता है। सूर्य की रोशनी अपनी अल्ट्रावायलेट किरणों के कारण शरीर के अन्दर भी इस विटामिन को तैयार करती है अतः जिन बच्चों के शरीर पर सूर्य की रोशनी पर्याप्त मात्रा में नहीं लगती है उनको तथा गरीबों को यह रोग विशेष रूप से होता है। भोजन में बसा का अभाव भी इस रोग के उत्पन्न होने का प्रधान कारण है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सूर्य के प्रकाश का अभाव या कमी, भोजन में कैलशियम, फासफोरस का अभाव, विटामिन सी और डी की न्यूनता तथा भोजन में बसा की कमी ये सभी मिलकर बच्चों में रिकेट या अस्थिदौर्बल्य का रोग उत्पन्न करते हैं।

अन्न जो हम बच्चों को खिलाते हैं वे भी रिकेट पैदा कर देते हैं क्योंकि इनकी क्रिया विटामिन डी के विपरीत होती है और विटामिन डी अपना प्रभाव नहीं दिखा पाता। दूसरे इन अन्नों से शरीर इतनी तेजी से बढ़ता है कि उतनी तेजी से हड्डियों को उचित मात्रा में कैलशियम नहीं मिल पाता कि वे उसी अनुपात में दृढ़ और पुष्ट होकर बढ़ सकें। इसके अलावा विटामिन डी वाले भोजन बच्चे अधिकतर पसन्द नहीं करते और ऐसा ही भोजन ग्रहण करते हैं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जिसमें यह विटामिन कम होता है।

विटामिन डी जिन पदार्थों में होता है वे किंचित मँहगे हैं और दूसरे उनकी ओर लोगों की रुचि भी प्रायः कम रहती है। दूध, दही, घी, मक्खन, पनीर, सारडिन मछली, स्प्राट नामक छोटी मछली में तथा हरे और पीले रंगवाले पत्तेदार शाक और तरकारियों में विशेष रूप से यह पाया जाता है। ये खाने-पीने के सामान आजकल वहुत मँहगे हैं और साधारण कमाई का आदमी आसानी से इनका प्रवन्ध अपने और अपने परिवार के लिए नहीं कर सकता। सन्तरे और नीवू में विटामिन सी होता है। विटामिन सी विटामिन डी की कमी को वहुत कुछ पूरा करता है। इस रोग में निम्न लक्षण होते हैं—

(१) रीढ़ की अस्थि लच जाती है। कवूतर की छाती की तरह वच्चे की छाती आगे निकल आती है।

(२) सिर और माथे पर पसीना अधिक आता है।

(३) वच्चे की शकल विगड़ जाती है और वह वुड्ढे की तरह लगने लगता है। सन्धियों की हड्डियाँ मोटी हो जाती हैं और वहाँ की वात-नाड़ियाँ विकृत हो जाती हैं।

(४) वच्चे को पेशाव अधिक आता है।

जिन माताओं के दूध में सम्पूर्ण तत्व नहीं होते और उसी पर वच्चे को रहना पड़ता है उनको यह रोग विशेष रूप से होता है।

वाजारू डिव्वा वन्द दूध पीने वाले वच्चे भी अकसर इस रोग के शिकार होते देखे गये हैं।

गर्भिणी माता का दूध पीने से भी यह रोग वच्चों को होता है।

रिकेट या अस्थि दौर्वल्य के लक्षण

इस रोग के वहुत ही आवश्यक लक्षण ये हैं कि रात को वच्चे को नींद नहीं आती, सिर में वहुत अधिक पसीना आता है। यहाँ तक पसीना आता है कि तकिया भीग जा सकता है। यदि वच्चा चलता हो और यह रोग हो जाय तो उसका चलना रुक जाता है अर्थात् वह चल नहीं पाता और उसकी टाँगें धनुप की तरह टेढ़ी हो जाती हैं घुटने चलते समय लड़ने लगते हैं। यदि वच्चा चलता न हो और यह रोग हो जाय तो चलने की सामर्थ्य उसमें देर में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आती है। वकैयाँ या घुटनों के वल चलने वाले वच्चों की बाहें टेढ़ी हो जाती हैं। छः मास के वच्चे की हड्डी में यह परिवर्तन हो जाता है कि हड्डियों के अंत में गाँठें पड़ जाती हैं, वच्चा कमजोर हो जाता है। उसे सर्दी लगने का वहुत डर रहता है और उसे सरदी जल्द लगती भी है। उसे ब्रोंकाइटिस, या ब्रांकों निमोनिया जल्द हो जाता हैं, खाँसी आती है और वड़े कष्ट से कफ ढीला होकर निकल पाता है।

रिकेट अकेली हड्डियों का रोग नहीं है वल्कि इसमें मांसपेशियाँ, वात-नाड़ियाँ और शारीरिक यन्त्र भी हड्डियों के साथ-साथ विकृत हो जाते हैं। वच्चे को कव्ज रहने लगता है और दाँत देर में निकलते हैं अथवा विकृत और कमजोर दाँत निकलते हैं। सिर लम्वा और चौकोर हो जाता है। छाती पर दो प्रकार की गहरी धारियाँ प्रगट हो जाती हैं—एक ऊपर से नीचे जाती है और दूसरी शरीर के चारों ओर घूमती हैं। और छाती कवूतर की छाती की तरह हो जाती है। इसका कारण यही है कि पसली के दोनों छोरों पर हड्डी में एक गाँठ सी पड़ जाती है। गाँठ पड़ने पर हड्डियाँ उठ आती हैं और गाँठदार धारियाँ प्रकट हो जाती हैं। इन्हीं गाँठों के कारण छाती का आकार विगड़ जाता है। सवसे पहला लक्षण यह प्रगट होता है कि हाथ की कलाई और टखने के जोड़ों पर सूजन प्रगट हो जाती है। वह सूजन भी हड्डी के अन्त में गाँठ सी पड़ने के कारण ही दिखाई पड़ती है।

वात-नाड़ियों के दुर्वल हो जाने के कारण वच्चा चिड़चिड़ा हो जाता है। नीचे हम फक्क रोग के निदान और लक्षण दे रहे हैं जिससे पाठक यह समझ सकें कि वैज्ञानिकों की खोज किसी भी अर्थ में कश्यप-संहिता से आगे नहीं है।

फक्क रोग

भगवान कश्यप ने कश्यप-संहिता में जीवक को उपदेश दिया है कि यदि वालक एक साल का हो जाय और पाँवों के वल न चले तो समझना चाहिए कि उसे फक्क रोग हो गया है। माता का दूध जव कफ के कारण विकृत हो जाता है तव उस दूध को ही फक्क दूध कहते हैं। कफ से दूपित होने के कारण वच्चे के रस रक्त आदि धातुओं को वहाने वाली नसें वन्द हो जाती हैं और वच्चा दुवला और वहुत सी व्याधियों से पीड़ित हो जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भाव यह है कि स्रोतों के वन्द हो जाने से पोषक तत्व नहीं पहुँच पाता। यही वात पश्चिमी वैज्ञानिक कहते हैं कि एक साल का वच्चा न चले तो समझना चाहिए कि कैलशियम की कमी से रिकेट नामक रोग हो गया है। पाश्चात्य वैज्ञानिक कहते हैं कि भोजन में कैलशियम की कमी से यह रोग होता है। महर्षि कश्यप और ऊँची वात बताते हैं। उनका कहना है कि कफकारी दूध के पीने से स्रोतों के वन्द हो जाने से भीतरी ग्लैंड्स भी ठीक कार्य सम्पादन नहीं कर पाते और यदि दूध में कैलशियम हुआ भी तो उसका सात्मीकरण (एसिमिलेशन) नहीं होता और वच्चा क्षीण हो जाता है।

वहरापन और गूंगपन की उत्पत्ति भी फक्क रोग के कारण ही महर्षि मानते हैं। महर्षि कहते हैं कि जीभ के दो कार्य हैं शव्दोच्चारण और रस ग्रहण। जिह्वामूल में जव विकार पैदा हो जाता है तव शव्दोच्चारण नहीं हो पाता और शव्दोच्चारण का मूल है कान। शव्दोच्चारण शक्ति के नाश होने से कान की भी शक्ति नष्ट हो जाती है और वच्चा गूंगा और वहरा हो जाता है।

फक्क रोग तीन प्रकार का होता है—दूध के दोष से, गर्भ के दोष और व्याधि के कारण। माता के गर्भ में विकार आने से ठीक-ठीक पोषण न प्राप्त होने से भी फक्क रोग हो जाता है तथा गर्भिणी स्त्री के दूध पीने के कारण भी यह रोग होता है। और गर्भावस्था में यदि माता को पौष्टिक भोजन न मिले, यदि ऐसा भोजन मिले जिसमें दूध, फल, घी, मक्खन, ताजी तरकारियाँ आदि का अभाव हो तो माता में ही विटामिनों और खनिज लवणों की कमी हो जाती है और इनके अभाव से गर्भस्थ वच्चा पुष्ट नहीं हो पाता, तथा उत्पन्न होने पर भी इस कमी से उसकी वृद्धि ठीक-ठीक नहीं होती और अनेक कारणों से ज्वर आदि रोगों के कारण भी यह रोग हो जाता है।

इसके लक्षण ये हैं—वालक अत्यन्त सूख जाता है, और वालक के वल, मांस और कान्ति आदि क्षीण हो जाते हैं, चूतड़, वाहु और जंघा सूख जाते हैं इनमें मांस नहीं रह जाता है, पेट निकल आता है, सिर वड़ा और लम्वा हो जाता है, चेहरा सूख जाता है और चेहरे की हड्डियाँ वाहर निकल आती हैं, मुँह डरावना हो जाता है, आँखें पीली पड़ जाती हैं केवल अस्थि-पंजर या कंकाल-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मात्र शेष रह जाता है। ओठ और शरीर अत्यन्त मलीन और दुखी दिखाई पड़ते हैं और पाखाना-पेशाव नित्य ही होता है। उसका शरीर और ओठ चेष्टा-हीन हो जाते हैं यदि बालक पाँव के वल या वकैयाँ चलता रहता है तो वह भी कमजोरी के कारण वन्द हो जाता है। मक्खियाँ और अन्य कीड़े उसके पास वहुत आते हैं और ऐसे रोगी की मृत्यु समीप आ गई रहती है। बच्चे के रोंगट खड़े हो जाते हैं या रोंगटे जड़ हो जाते हैं। रोगी के शरीर से दुर्गन्ध आती है, रोगी मलिन, क्रोधी और चिड़चिड़ा हो जाता है, साँस गरम तथा तेज़ आती है अन्त में पाखाना-पेशाव भी अधिक आने लगता है।

चिकित्सा

रिकेट रोग इस वात का ज्वलन्त प्रमाण है कि सदोप भोजन जिसमें खनिज लवण और विटामिनों का अभाव होता है तथा अपूर्ण भोजन जिसमें हड्डियों, मांसपेशियों और टिशुओं को वनानेवाले पदार्थों की कमी या अभाव रहता है किस प्रकार स्वास्थ्य की नींव को खोद देते हैं और सारे शरीर के ढाँचे को विगाड़ देते हैं। ठीक इसी प्रकार यदि पूर्ण स्वास्थ्यप्रद भोजन, जिसमें खनिज लवण और विटामिनों की अधिकता हो, की व्यवस्था की जाय और सूर्य-किरणें प्रचुर मात्रा में शरीर में पहुँचाई जायँ, सूर्य-स्नान और वायु-स्नान कराया जाय तो जड़ से यह रोग दूर किया जा सकता है। बच्चे की संकट-जनक परि-स्थिति का मुकाविला करने का यही एक अमोघ शस्त्र है। हमारे देश की माताएँ छोटे बच्चों को तेल लगाकर जाड़े के दिनों में धूप में सुला देती हैं। प्रतिदिन के धूप मिलने से अस्थियाँ सवल रहती हैं और प्रायः अस्थि सम्वन्धी रोग उन्हें नहीं होते।

वच्चे को पर्याप्त मात्रा में दूध दीजिए। यदि वच्चा माता का दूध पीता हो तो माता को ऐसा भोजन मिलना चाहिए जिसमें शरीर की आवश्यकता को पूरी करनेवाले सभी तत्व उसमें मौजूद हों। अर्थात् माता के भोजन में दूध, घी, सब्जी, ताजे मौसमी फल, सन्तरे, सेव, मुनक्का, वादाम की प्रचुरता हो। यदि वच्चे को माता का दूध न मिलता हो तो गाय या वकरी का दूध देने की व्यवस्था करनी चाहिए और वच्चे को सन्तरे का रस, पालक का रस, अनार का रस आदि भी देना चाहिए। माँ का दूध पीनेवाले वच्चों को भी फलों के

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रस देने की व्यवस्था करनी चाहिए। अनाज तो एक दम बन्द कर देना अच्छा होता है। ५-६ सन्तरे का रस और बकरी का दूध देकर यह रोग आसानी से भगाया जा सकता है।

'हमारे बच्चे' नामक पुस्तक में हमने बच्चों के भोजन के सम्बन्ध में काफी विस्तार से लिखा है। उसी नियम के अनुसार बच्चों के भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए।

दिन में कम से कम दो बार धूप-स्नान कराना चाहिए। जब बच्चा खेलता हो तो उसके सब कपड़े अकसर उतार देना चाहिए। जिसमें उसके बदन में हवा और सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणें लग सकें। जबतक रोग बिलकुल निर्मूल न हो जाय, अस्थियाँ मजबूत न हो जायें, वात-नाड़ियाँ और मांस-पेशियाँ पूर्ण स्वस्थ न बन जायें तबतक अनाज खाने को न दिया जाय।

काडलिवर आयल (मछली का तेल) रिकेट रोग की अच्छी औषधि समझी जाती है। परन्तु काडलिवर आयल देते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि विटामिन बी और सी वाले फल और शाक-तरकारियाँ बच्चों को अवश्य पहुँचे। यदि विटामिन बी और सी ऊपर से नहीं पहुँचाया जाता तो काडलिवर आयल से लाभ के बदले हानि होने का ही खतरा अधिक रहता है। मछली के तेल की मालिश भी की जा सकती है। मालिश से भी अच्छा लाभ होता है। काड-लिवर आयल के बदले यदि बच्चों को मक्खन दिया जाय तो उनका स्वास्थ्य जल्द सुधरता है। दूध के साथ सन्तरे का रस और दो-चार चम्मच पालक का रस देते रहने से विटामिन बी और सी की कमी शरीर में नहीं रह जाती। दूसरे दूध का सारा कैलशियम पचने लगता है और शरीर की कैलशियम की कमी शीघ्र पूरी हो जाती है। हड्डियाँ मजबूत बनने लगती हैं। उनकी कमजोरी दूर होने लगती है। तथा पूर्ण भोजन प्राप्त होने से शरीर में रक्त और मांस की अधिक वृद्धि होने लगती है वात-नाड़ियाँ और टिशूज सबल होने लगते हैं और शरीर का सारा रोग दूर हो जाता है।

बच्चे का हाजमा सुधारने की भी व्यवस्था करनी चाहिए जिसमें भोजन का सात्मीकरण ठीक ढंग से हो। हिंग्वष्टक, चूर्ण, हींग, सोहागा का लावा या लवण भास्कर आदि में से किसी एक का प्रयोग आवश्यक है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बच्चे का स्वास्थ्य सुधारने का प्रबन्ध करना चाहिए। स्वास्थ्य में सुधार होने पर, शरीर में सब तत्व पूरे-पूरे पहुँचते रहने पर अस्थियों का विकार स्वयं ही धीरे-धीरे दूर हो जाता है और रोग नष्ट हो जाता है।

आयुर्वेद के मत से प्रवाल, मोती, मुक्ता शुक्ति और अभ्रक, लौह आदि की भस्में उचित मात्रा में देनी पड़ती हैं, स्वर्ण बसन्त मालती रस, गुरुच का सत्व, कुमार कल्याण रस आदि से भी लाभ होता है। अरविन्दासव बच्चों के लिए अच्छी घुट्टी का काम करता है। महालाक्षादि तैल और नारायण तैल आदि की मालिश करने से भी लाभ होता है। अच्छा यह होता है कि महालाक्षादि तैल की मालिश की जाय, दूध सन्तरे मक्खन आदि विशेष रूप से दिये जायें और बसन्त मालती रस गुरुच सत्व और प्रवाल मिला कर उचित मात्रा में दिया जाय तथा धूप आदि उचित रूप में मिलने की व्यवस्था की जाय।

शंख भस्म, गोदन्ती भस्म, मुक्ता शुक्ति, प्रवाल, भस्म, कच्छपास्थि भस्म और जहर मोहरा खताई की भस्मत्र राबर बराबर लेकर एक साथ घोंटकर रख दे इस भस्म में से ३-३ रत्ती की मात्रा में शहद से या शर्बत सन्तरा से देने से अस्थियों में बल आ जाता है।

नारायण तेल की मालिश करने से बहुत जल्द लाभ होते देखा गया है। इस मालिश से अस्थियों में बल आता है, दुबले बच्चों में बल का संचार होता है। एवं वायु सम्बन्धी अनेक रोग नष्ट होते हैं वैसे ही महा माषादि तेल की मालिश से भी लाभ होते देखा गया है।

काडलिवर आयल (मछली का तेल) या शार्क लिवर आयल (यह भी मछली का ही तेल है) की मालिश करने से भी अस्थियों में बल आता है।

मुक्ताशुक्ति

मोती के सीप का काला भाग अलग कर दे और सफेद भाग को कपड़े में बाध कर पोटली बनाले और एक हंडिया में चूने का पानी भरकर उसमें दोला यंत्र में १ पहर तक पकावे और इसी तरह १ पहर तक दूध में पकावे फिर गरम जल से धोकर साफ करके कपड़ छन चूर्ण करके मजबूत खरल में डालकर गुलाब जल से १ सप्ताह घोंट कर सुखाकर रख ले। बच्चे की अवस्था के अनुसार आधी रती या कुछ कम शहद से या शर्बत बनफशा के साथ चटाने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

से पाचन शक्ति बढ़ती है।

जीवित घोंघा खिलाने से बच्चों के सूखा रोग में बहुत अच्छा लाभ होता है। उसकी विधि यह है कि घोंघा तोड़ कर उसमें से जीव या गूदा निकाल कर धो कर साफ कर लिया जाय और उनको २-४ बूंद घी में भून ले। फिर उसे पीस कर बच्चे को पिला दे। घोंघा यदि छोटा हो तो २-३ भी लिया जा सकता है। यदि बड़ा हो तो १ में ही काम चल जाता है। ३ मास में बच्चा स्वस्थ हो जाता है।

मेरा विचार है कि यदि क्षयरोगी को घोंघे का मांस खिलाया जाय तो उसे भी लाभ होगा।

स्कर्वी

रिकेट की तरह ही यह स्कर्वी रोग भोजन में आवश्यक तत्वों की न्यूनताओं के कारण उत्पन्न होनेवाला रोग है। विटामिन सी की कमी इस रोग का कारण है। यह बात नहीं है कि यह रोग केवल गरीबों को ही होता हो जिनका भोजन शरीर के लिए आवश्यक तत्वों से शून्य या न्यून होता है। बल्कि सत्यता यह है कि ऐसे घरों में यह रोग होता है जो धनी वर्ग है और जहाँ, चीनी, चाय, मिठाई, विसकुट, टिन में बन्द मछलियाँ, गोश्त, आलू, पूरी, परेठा, मलाई, कन्डेंस्ड मिल्क आदि खाने में बहुत अधिक पैसा खर्च किया जाता है और रोज ही ऐसी ही चीजें खाई जाती हैं।

यह रोग समुद्र में चलनेवाले जहाजों के नाविकों को अकसर होता है जिनको बरसों तक समुद्र में ही रहना पड़ता है और जिनको वैज्ञानिक ढंग से तैयार किये गये भोजन, डिब्बे बन्द दूध, मछली, गोश्त आदि और बिसकुट आदि ही भोजन मिलता है और ताजे मौसमी फल और ताजी हरी तरकारियाँ साग-सब्जी की प्राप्ति का अभाव रहता है।

भोजन में अनेक खनिज लवणों की कमी ही इस रोग का कारण है। यदि ताजे साग, ताजा दूध, मौसमी फल, हरी तरकारियाँ पर्याप्त मात्रा में शरीर में पहुँचते रहें तो आवश्यक विटामिन भी मिलते रहते हैं। शरीर स्वस्थ और सबल बना रहता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

स्कर्वी बच्चों को तो होता ही है बड़े लोगों को भी हो सकता है। यह रोग

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

किसी-किसी में उग्र रूप में होता है और किसी-किसी में साधारण रूप में। इसका उग्र रूप बहुत कम दिखाई पड़ता है। जो बच्चे वैज्ञानिक ढंग से तैयार किये गये बनावटी भोजनों पर पाले जाते हैं और उनको ताजे फलों का रस आदि पदार्थ नहीं मिलते उनको उग्र रूप का भी स्कर्वी हो जाता है। यह रोग उन लोगों को भी होता है जो मन्दाग्नि के कारण बहुत ही अधिक परहेज से रहते हैं और भोजन की केवल दो-चार ही चीज थोड़ी-बहुत मात्रा में खाकर किसी तरह जीवित रहते हैं। दूसरे उन लोगों को भी यह रोग हो सकता है जिनको भोजन सम्बन्धी जनून होता है और बड़े शंकित रहकर थोड़ी सी इनी-गिनी चीजें ही खाते हैं और इस मानसिक दुर्बलता के कारण भोजन में पर्याप्त मात्रा में खनिज लवण और विटामिनों को ग्रहण नहीं करते। गरीब लोगों को भी गरीबी के कारण यह रोग हो सकता है जिनका भोजन केवल नमक और रोटी है अथवा थोड़ा गुड़ और रोटी है।

इस रोग का आरम्भ बहुत धीरे-धीरे होता है। बच्चा पीला, कमजोर और दुर्बल पड़ने लगता है, वजन बराबर घटता है, बच्चा सुस्त और मिन-मिनहा रहता है, आँखें बन्द किये या तो सोता है या सुस्त पड़ा रहता है। मसूड़े सूज जाते हैं, उनसे रक्त आने लगता है। दाँत ढीले पड़ जाते हैं और कुछ चबाना और खाना कष्टकर हो जाता है। यदि मुँह में दाँत न हों तो मसूड़े अनावश्यक रूप से पीले पड़ जाते हैं। अकसर ऐसा होता है कि मसूड़ों से या कहीं भी त्वचा से रक्त बहता है। जोड़ों में दर्द होता है।

इस रोग में अकसर निदान की गलती हो जाती है और लोग रिकेट, परा-लिसिस (लकवा), या वात व्याधि या रियूमेटिज्म समझने लगते हैं। इस रोग में काले या नीले रङ्ग के धब्बे शरीर पर पड़ जाते हैं, एक या अधिक अङ्गों में लकवा भी मार जाता है और जोड़ों में दर्द भी रहता है। इन्हीं लक्षणों से निदान करने में गलती होती है।

वस्तुतः रक्त में अम्लता बढ़ जाने से इस रोग में पित्त कुपित हो जाता और उसी के सभी लक्षण इस रोग में उत्पन्न होते हैं। शरीर पर नीले-काले धब्बे पड़ना, मसूड़े और शरीर से रक्त बहने लगना ये सब विकृत पित्त के ही लक्षण हैं। साथ ही वायु की विकृति भी रहती है इसीलिए अन्य लक्षण प्रगट

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

होते हैं। चिकित्सा करते समय चिकित्सक को इन सब बातों पर भी ध्यान रखना चाहिए।

कुछ लोगों का ख्याल है कि नीबू में वह तत्व मौजूद है जो स्कर्वी को मार भगाता है। परन्तु अमेरिका से प्रकाशित मेडिकल डिक्शनरी का कहना है कि अनुसंधान द्वारा यह बात गलत साबित हो चुकी है। यह बात नहीं है कि नीबू इस रोग में हानिकर है या लाभ नहीं करता। सत्य बात यह है कि अकेला नीबू इस रोग को आराम नहीं कर सकता।

वस्तुतः अनुसंधान यह है कि इस रोग को मेडिटरेनियन लाइम मार भगाता है। उसमें विटामिन भी काफी अधिक मात्रा में होता है। नीबू को भी अंगरेजी में लाइम कहते हैं। इस लाइम शब्द की संदिग्धता के कारण यह भ्रम फैल गया।

चिकित्सा

स्कर्वी का रोग भोजन की व्यवस्था बिगड़ने के कारण या भोजन में खनिज लवण और विटामिनों की कमी के कारण तथा ताजे मौसमी फल और हरी शाक तरकारियों के अभाव के कारण होता है। इसलिए इस रोग का इलाज यही है कि भोजन में ये पदार्थ बढ़ा दिये जायँ। सन्तरे का रस काफी मात्रा में दिया जाय। ताजा दूध दिया जाय। पालक, टमाटर, मूली, नेनुआ, तरोई, सलजम, लौकी आदि हरी तरकारियाँ काफी मात्रा में बढ़ाई जायँ। गोभी, पात गोभी, गाँठ गोभी आदि भी अच्छी चीजें हैं। गोभी और पात गोभी का सलाद भी खाना चाहिए। उन पदार्थों के पाचन और सात्मीकरण के लिए पाचन शक्ति को ठीक रखने और बढ़ाने की आवश्यकता रहती है।

सूर्य-किरण स्नान, वायुस्नान का भी सहारा लेना चाहिए जिसमें स्वास्थ्य सुधरे। जिन बच्चों को डिब्बा बन्द दूध मिलता हो उनको भी सन्तरे का रस प्रतिदिन नियमित रूप से मिलना चाहिए।

जहाँ तक सम्भव हो वैज्ञानिक ढंग से तैयार किया गया भोजन बन्द किया जाय। क्योंकि यदि इनमें खनिज लवणों और विटामिनों का अत्यन्त अभाव नहीं भी रहता हो तब भी इन विटामिनों और खनिज लवणों की मात्रा उनमें न्यून अवश्य रहती है और उस कमी को पूरी करने के लिए यदि फलों का रस, ताजी शाक-तरकारियाँ काफी अधिक मात्रा में न ली जायँ तो इस अभाव

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

की पूर्ति नहीं होती और शरीर क्षीण और रोगी हो जाता है।

इस रोग के हो जाने पर इसे आराम करने के लिए भोजन के बीच-बीच में कई बार ताजे फलों का रस, तरकारियों का सलाद और कच्चा रस अथवा उबालकर निकाला रस देने की व्यवस्था करनी चाहिए। अच्छा तो यह होगा कि अन्न आदि यथा साध्य बन्द करके ताजे फल-तरकारियों का रस और ताजा दूध ही भर पेट दिया जाय। बच्चे का साधारण स्वास्थ्य उन्नत बनाया जाय। सामान्य गरम जल में स्नान, सूर्य-स्नान आदि का सहारा तथा उचित मालिश की व्यवस्था करके रोग-निवारक शक्ति बढ़ाई जाय और खनिज लवण और विटामिनों की कमी पूरी की जाय।

हमने ऊपर लिखा है कि रक्त की अम्लता बढ़ने से यह रोग होता है अतः रक्त की अम्लता दूर करने और पित्त घटाने की व्यवस्था करना आवश्यक है। एनिमा आदि की व्यवस्था करके पहले पेट साफ़ कर लेना अच्छा होता है। आयुर्वेद के मत से पेठा या सफेद कुम्हड़ा इस रोग में विशेष लाभकारी होना चाहिए इससे रक्त झिरने में कमी हो जाती है। साथ ही अन्य हरी पत्तीवाले शाक भी लाभ कर सकते हैं। ताजा दूध बहुत लाभ करेगा। मसूड़े पर नीबू का रस लगाना चाहिए। दूब का रस भी लाभ करेगा। ताजे आँवले का रस काफी मात्रा में देना चाहिए। इसमें विटामिन सी. बहुत होता है और यह पित्त नाशक भी है। रक्तपित्त में भी यह बहुत लाभ करता है। यदि जोड़ों में दर्द बहुत हो तो उस पर गरम और ठंडी पट्टी रखने की व्यवस्था करनी चाहिए। पानी में नीबू का रस मिलाकर प्रदिदिन पीने को देना चाहिए।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय ८

विभिन्न प्रकार के रोग

सोते समय पेशाब करना

छोटे बच्चे तो अकसर सोते समय पेशाब कर देते हैं परन्तु बहुत से छोटे बच्चे भी ऐसे होते हैं जो बिस्तरे पर पेशाब करना पसन्द नहीं करते और जब पेशाब कर देते हैं तो रोने लगते हैं। अकसर माताएं उनके संकेत को समझ नहीं पातीं, इसी कारण वे बिस्तर गीला कर देते हैं। ३-४ वर्ष के बाद अथवा और अधिक अवस्था होने पर बिस्तर पर पेशाब करना अवश्य रोग है।

कुछ बच्चे तो आलस में ही उठना नहीं चाहते और पड़े-पड़े मूत देते हैं उनका आलस दूर करना चाहिए। जिसमें यह दुर्गुण न हों उनके लिए पूरा विश्राम मिलना चाहिए क्योंकि उत्तेजना, परिश्रम, खेलने का अभाव आदि के कारण मानसिक वात-नाड़ियों पर अधिक जोर पड़ने के कारण उन्हें पता ही नहीं चलता कि कब उन्होंने बिस्तर गीला कर दिया। ऐसे बच्चों को उत्ते-जना या मानसिक चिन्ता का कोई अवसर नहीं देना चाहिए।

चिकित्सा

कुछ दिनों तक फलाहार कराइए। सिट्स बाथ दीजिए। पेडू पर ठंडे पानी से दिन में कम से कम दो बार रगड़-रगड़ कर स्पंज कराइए। गरम पानी का एनिमा प्रतिदिन देना चाहिए। कम से कम दस दिनों बाद रोटी सब्जी देना शुरू करना चाहिए।

रात को सोते समय पेशाब करनेवाले बच्चों को न तो मारना चाहिए और न गाली देना चाहिए बल्कि उनको अधिक प्यार करना चाहिए और उनका अधिक से अधिक विश्वास प्राप्त करना चाहिए। जिसमें बच्चा निडर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chandigarh

होकर बता सके कि उसे किस कारण पेशाब होता है, और उस कारण को दूर करने की चेष्टा करनी चाहिए। रात को सोते समय या सोने के कुछ पहले पानी बन्द कर देना चाहिए और पेशाब करके सोने जाने देना चाहिए। और चेष्टा यह करनी चाहिए की प्रत्येक दूसरे घंटे जगाकर पेशाब करा दिया जाय। कभी-कभी पेट में कीड़े पड़े रहते के कारण भी बच्चे रात को सोते समय पेशाब करते हैं। एडिन्वायड ग्रन्थि के विकार के कारण भी यह रोग हो जाता है।

यदि साधारण उपाय से रोग न दूर हो तो आवश्यक रूप से किसी अच्छे चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

आयुर्वेदीय चिकित्सा

(१) काला तिल ½ किलो, पोस्ता के बीज ½ पाव दोनों को अलग-अलग भून कर कूट कर चूर्ण कर ले और उसमें खजूर का चूर्ण १ छटाँक और मुनक्का चूर्ण १ छटाँक मिलाकर दो-दो तोले के लड्डू बना लें। एक लड्डू सुबह और एक लड्डू शाम को दे यह मात्रा १२-१४ वर्ष के बच्चों की है। कम अवस्था के बच्चों को मात्रा कम करके दे।

(२) तारकेश्वर रस से मूत्र कम हो जाता है।

क्रिमिरोग—चुरने

क्रिमि कई प्रकार के होते हैं। कुछ का आकार बड़ा होता है और कुछ का आकार छोटा। थ्रेड वर्म सफेद रंग का गोल और छोटा कीड़ा होता है। इसको हिन्दी में सूंडी या चुरने कहते हैं। यह छोटी आँत के नीचे के हिस्से में तथा बड़ी आँतों में पाया जाता है। क्योंकि इन क्रिमियों के बढ़ने और जीवित रहने के लिए इन्हीं स्थानों पर उपयुक्त आहार तथा स्थान प्राप्त होता है।

आयुर्वेद के मत से क्रमि रोग २० प्रकार का होता है। कुछ क्रमि रक्त में, कुछ कफ में और कुछ मल में मिलते हैं। कुछ क्रमि इतने सूक्ष्म होते हैं कि आँख से दिखाई नहीं पड़ते इनको देखने के लिए माइक्रोस्कोप (सूक्ष्म दर्शक यंत्र) की आवश्यकता पड़ती है, कुछ बड़े होते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मल में मिलने वाले कृमि मोटे तौर से ३ प्रकार के होते हैं (१) सफेद-सफेद पतले-पतले सूत के आकार के छोटे-छोटे होते हैं इनको अंग्रेजी में थ्रेड वर्म कहते हैं दूसरी जाति के कृमि बड़े होते हैं और जोंक के आकार से लेकर १ फीट तक लम्बे हो सकते हैं। इनको केंचुआ कहते हैं। इनको अँग्रेजी में राउंड वर्म कहते हैं। तीसरे प्रकार के कृमि बिलकुल लौकी या कद्दू के बीज के आकार के सफेद-सफेद होते हैं इनको कद्दू दाना कहते हैं। आँतों में ये चिपके रहते हैं और बच्चों को कमजोर कर देते हैं। कद्दू दाने अकेले भी रहते हैं और गुच्छे के गुच्छे झोंझ में भी होते हैं।

लक्षण

बच्चा नाक बार-बार रगड़ता है, अर्थात नाक में खुजली होती है, लार बहती है, सोते समय इतनी लार बहती है कि बच्चे के तकिये के गिलाफ पर पानी दिखाई पड़ता है, बच्चा कमजोर हो जाता है, मुंह सूखता है, बच्चा दाँत किटकिटाता है। कभी पतले दस्त होते हैं कभी कब्ज हो जाता है। बच्चे को भूख कम लगती है। कभी-कभी ज्वर हो जाता है, बच्चे के गुदा-द्वार पर खुजली होती है, दस्त के साथ कभी-कभी छोटे कृमि निकलते दिखाई पड़ते हैं। बच्चा चिड़चिड़ा हो जाता है।

ये कीड़े जब पड़ जाते हैं तब बच्चा रात को अच्छी तरह सो नहीं पाता क्योंकि गुदा में बड़े जोरों की खुजली मचती है। उसे बेचैनी बहुत रहती है और जलन के साथ दर्द होता है उसे कब्ज रहने लगता है। और पेशाब भी साफ नहीं आता।

उन क्रिमियों के अण्डे पानी के द्वारा या भोजन के द्वारा पेट में जाते हैं और वहीं बच्चे बन जाते हैं फिर उनके अण्डे और बच्चे होते हैं इस प्रकार इनका परिवार बढ़ जाता है और कष्ट देता है। ये क्रिमि यहाँ तक उपद्रव मचाते हैं कि इनसे कनवलशन या ऐंठन तथा मांसपेशियों में खिचाव होने लगता है जिसे कोरिया कहते हैं। तथा वात-नाड़ियाँ कमजोर पड़ जाती हैं।

यह बात नहीं है कि क्रिमि के अण्डे जब पेट में जाते हैं तभी यह रोग होता है परन्तु समझने की बात यह है कि यदि इन अण्डों को जीवित रहने और बढ़ने के लिए हमारी आँतें उपयुक्त होंगी तभी ये बढ़ सकेंगे और अपना

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

परिवार बढ़ावेंगे। अतः इसके अण्डों का पेट के अन्दर जाना वास्तविक कारण नहीं है वास्तविक कारण तो हमारा वह भोजन है जो आंतों में जाकर सड़ता है और उन अण्डों को जीवित रहने के लिए उपयुक्त भोजन का काम देता है अतः इस रोग का भी कारण गलत ढङ्ग का भोजन और रहन-सहन ही है।

अधिक गुड़, चीनी, मिठाई, मैदा, बेसन, उरद, साग, आदि खाने के कारण छोटे बच्चों के पेट में चुरने पड़ते हैं। एक प्रकार के गोल केंचुए के आकार के क्रिमि पेट में पड़ते हैं उन्हें केंचुआ कहते हैं। एक प्रकार का कीड़ा पेट में और पड़ता है जिसे कद्दू दाना कहते हैं। यह आंतों में चिपक जाता है और इसके टुकड़े, जिनका आकार लौकी के बीज से मिलता-जुलता है, मल के साथ निकला करते हैं जूं और लीख भी बाहरी क्रिमि हैं। रक्त में भी क्रिमि हो जाते हैं। चुरने या छोटे क्रिमि छोटे बच्चों को अकसर पड़ जाते हैं।

चिकित्सा

असावधान चिकित्सक कीड़ों को मारने के लिए प्रयत्न करते हैं जो गलत इलाज है। वह इसलिए कि क्रिमियों को मारने का प्रयत्न करनेवाले चिकित्सक शारीरिक अवस्था में सुधार करने का कोई प्रयत्न नहीं करते। यदि आंतें साफ कर दी जायें और शरीर से वह कचरा निकाल दिया जाय जिस पर क्रिमि जीते हैं तो उनके जीने का सहारा ही नष्ट हो जाता है और क्रिमि स्वयं नष्ट हो जाते हैं और बाहर से अन्दर जानेवाले अण्डे भी जीवित नहीं रह पाते। इसलिए सर्वोत्तम उपाय यही है कि शरीर का विष निकाल दिया जाय और गन्दगी नष्ट कर दी जाय।

बच्चों को मांस-मछली, अण्डा, स्टार्चवाले भोजन, बासी भोजन, जेली, जाम, बिस्कुट, मिठाई, गुड़, चीनी आदि बिलकुल बन्द कर दीजिए और केवल फलों पर रखिए। बहुत मीठे फल जैसे आम, कटहल आदि मत दीजिए। मक्खन, घी, बनावटी दूध आदि बन्द कीजिए। प्रतिदिन गरम पानी का एनिमा दीजिए। बच्चे को थोड़ा खेलने दीजिए, गहरी साँस का अभ्यास कराइए। एनिमा के पानी में थोड़ा सा तारपीन का तेल डाल देना अच्छा होता है क्योंकि इस तेल के संयोग से कीड़े मर जाते हैं। नींबू का रस डालकर एनिमा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देना भी अच्छा होता है। पानी गरम करते समय उसमें १ रत्ती तम्वाकू की पत्ती डाल दे और इसी पानी का एनिमा दे दे इससे भी कीड़े मर जाते हैं। तम्वाकू डालते समय इस वात का ध्यान रखना चाहिए कि इससे किसी-किसी को चक्कर आ जाता है। इसलिए पहले बहुत थोड़ा तम्बाकू डाले जैसे-जैसे बच्चा बर्दाश्त करे वैसे-वैसे बढ़ा कर एक रत्ती की मात्रा पर आवे।

कम से कम १० दिन केवल फलाहार कराने पर धीरे-धीरे रोटी सब्जी पर आना चाहिए और कुछ दूध भी देना आरम्भ करना चाहिए। दूध सदैव ताजा और कच्चा ही देना अच्छा होता है।

आयुर्वेदीय चिकित्सा

(१) वायविडिङ्ग का चूर्ण शहद से चटाने से पेट के क्रिमि मर जाते हैं। मात्रा ३-४ रत्ती।

(२) वायविडङ्ग, पलास पापड़ा, जवाइन इन सव को बरावर-बरावर लेकर चूर्ण कर डाले। उस चूर्ण में से ३-४ रत्ती की मात्रा खिलाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

(३) डाक्टर लोग सेन्टोनिन का प्रयोग करते हैं।

(४) कृमिकुठार रस दीजिए अथवा कीट मुग्दर रस दीजिए।

(५) सिना २०० खिलाने से क्रिमि मर जाते हैं यह होमियोपैथी दवा है।

(६) विडंगासव क्रिमि रोग की अच्छी औषधि है।

(७) एलोपैथ एन्टीपार शर्बत या एलफोपार विद सिना पाउडर देते हैं।

(८) कमीला १ रत्ती गुड़ में मिलाकर खिलाने से कीड़े भी मर जाते हैं और बच्चे का पेट भी साफ हो जाता है।

पलास पापड़ा तीन तोला, शुद्ध कुचला २॥ तोला, वायविडंग २ तोला, जवाइन १॥ तोला, गंधक १ तोला और शुद्ध पारा ॥ तोला।

पहले पारा गंधक पत्थर के खरल में डाल कर खूब घोंट कर काले रंग की कज्जली बनाकर शेष दवाओं को कूट-पीस कर इसी कज्जली में मिला कर ३ घंटे खूब घोंटे और पानी के साथ सान कर मूंग बराबर गोली बनाले। १-१ गोली खिलाने से सब प्रकार के कृमि नष्ट होते हैं।

डाक्टरों का विचार है कि कद्दूदाना बहुत भयंकर कृमि है और उससे जल्दी छुटकारा नहीं मिलता।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation Chandigarh

डाक्टरों के विचार से [illegible] नामक औषधि से इसमें लाभ होता है। यह औषधि खाली पेट खिलाई जाती है और दवा खिलाने के पहले रेंडी के तेल से पेट साफ कर लिया जाता है। औषधि खिलाने के १२ घंटे बाद कोई दस्तावर औषिधि खिला कर दस्त करा देना आवश्यक है। मात्रा आदि के बारे में किसी डाक्टर से परामर्श लेना उचित है।

बच्चों को दस्त कराने की आवश्यकता पड़े तो आधा तोला गुलकन्द में बड़ी हड़ का चूर्ण १-१॥ माशा मिला कर खिला देना चाहिए। इसी से उनको दस्त हो जाता है।

(१०) कवीला १ तोला, नीम के पत्ते १ तोला, वायविडंग १ तोला। सब को एक साथ कूट-पीस कर कपड़छन चूर्ण करके शीशी में रखलें। इस चूर्ण में से ४-६ रत्ती चूर्ण शहद के साथ चटाने से लाभ होता है। यह दवा रात को चटा कर सुबह पेट साफ कर देना चाहिए।

(११) अनार के फल के छिलके का क्वाथ बनाकर देने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

डाक्टर लोग कृमि में ऐन्टीपार का प्रयोग करते हैं। बच्चों के लिए इसका शरबत भी मिलता है। कुछ दिन पहले सेन्टोनिन का प्रयोग कृमि नष्ट करने के लिए खूब होता था। १ वर्ष के बच्चे को सेन्टोनिन आधा ग्राम देना चाहिए, पाँच वर्ष तक के बच्चे को १ ग्रेन। डाक्टर से सलाह लेकर इसका प्रयोग करना चाहिए।

दाँत निकलते समय के रोग

दाँत निकलते समय बच्चों को अक्सर अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। हमारे देश में बच्चों के पालन-पोषण के ज्ञान की बहुत कमी है। गाँवों की जनता प्रायः अशिक्षित है उस तक ज्ञान का प्रकाश फैलाना है। वहाँ बच्चे भाग्य से ही जीते और मरते हैं। न उन्हें कोई शिशु-पालन का नियम मालूम है न कोई शिक्षा की व्यवस्था है। अतः गाँवों में भी दाँत निकलते समय बच्चे अधिकांशतः रोगी हो जाते हैं।

पश्चिमी देशों में पहले जितना कष्ट दाँत निकलने में बच्चों को होता था अब वह बहुत कम हो गया है क्योंकि अब बच्चों को पालने के लिए ऐसे वैज्ञा-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

निक ढंग काम में लाये जाते हैं कि होशियारी से पालने पर बच्चों को बिना
Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
कष्ट के ही अकसर दाँत निकल आते हैं।

भूख की कमी, नींद कम आना, चिड़चिड़ा होना, रोना, क्रोध करना दाँत निकलते समय प्रायः सभी बच्चों को हो जाते हैं। यदि माता सावधान रहे तो इन लक्षणों से परेशानी नहीं होगी। होशियारी से यदि बच्चों का पालन-पोषण किया जाय तो कनवलशन और फड़कन के रोग बिलकुल रोके जा सकते हैं। बच्चा यदि पूर्ण रूप से स्वस्थ हो तो दाँत बिना कष्ट के निकल आते हैं।

असल बात यह है कि यदि बच्चों का भोजन ठीक हो और स्वास्थ्य दायक नियमों के अनुसार वे पाले जायँ तो उन्हें कोई रोग नहीं होता। बच्चों के पालने-पोसने का सही नियम हमने अपनी पुस्तक "हमारे बच्चे" में विस्तार के साथ लिखा है। जब बच्चों को अनियमित रूप से भोजन दिया जाता है और ऐसा भोजन दिया जाता है जिसमें खनिज लवणों और विटामिनों का अभाव होता है तथा जो रक्त में अम्लता पैदा करनेवाले होते हैं तभी बच्चे अस्वस्थ होते हैं। अस्वास्थ्य-कर तरीके से बच्चों को पालने से भी बच्चे अस्वस्थ रहते हैं और उन्हीं को दाँत निकलते समय बहुत कष्ट होता है। दाँत निकलते समय अकसर बच्चों का हाजमा बिगड़ जाता है, दस्त आने लगते हैं, अकसर उन्हें अनपचा दस्त होता है और दस्त में फटा-फटा दूध दही के जमे हुए अंश के समान निकलता है। कभी-कभी हरे-पीले दस्त आने लगते हैं वमन होने लगती है। यों कहना चाहिए कि दांत निकलते समय बच्चों को प्रायः सभी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। विशेष करके ज्वर, अतीसार, खाँसी, वमन, सिर में दर्द, आँख उठना, पोथकी (पलकों का रोग) और विसर्प, भूख न लगना, जुकाम, दुर्बलता, सिर दर्द आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। दाँत निकलने के रोग में बच्चे अकसर मर जाते हैं। यदि दाँत निकलने के रोग उत्पन्न हो जायँ तो बड़ी सावधानी से उनकी रक्षा और चिकित्सा करनी चाहिए। दाँत निकलते समय जो रोग हों उनका इलाज इसी पुस्तक में लिखी विधि से करना चाहिए अथवा किसी अच्छे चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

जव दाँत Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh निकलने वाले होते हैं तव प्राय: निम्नलिखित लक्षण होते हैं :— चेहरा लाल रहता है, मसूड़े लाल रहते हैं, उनमें दाँत झलकते हैं, ज्वर रहता है, मुख से लार गिरती है, मसूड़े दुखते हैं और अँगुली डाल कर देखने से गरम लगते हैं, वच्चा सोते समय चौंक जाता है, सिर और शरीर गरम रहता है, प्यास लगती है, किसी-किसी को दस्त अधिक आते हैं, आँखें लाल हो जाती हैं या उठ जाती हैं, मुख पक जाता है, गुदा भी पक जाती है, वच्चा आँख वन्द किये रहता है क्योंकि उसके सिर और कनपटी में दर्द रहता है। माँ का दूध वच्चा ठीक से नहीं पीता, किसी-किसी वच्चे को कब्ज भी रहने लगता है।

दाँत निकलते समय वच्चों को प्यास अधिक लगती है इसलिए पानी अधिक पिलाना चाहिए और भोजन कुछ कम कर देना चाहिए। सम्भव है ज्वर और दस्त में वच्चे को उपवास भी कराना पड़े। अकसर कैलशियम की कमी के कारण ही वच्चों को दाँत निकलते समय दस्त और खाँसी आदि रोग हो जाते हैं। इसीलिए कैलशियम मिश्रित औषधियाँ अधिक लाभ करती हैं और इनके प्रयोग से हाजमा भी दुरुस्त हो जाता है।

चिकित्सा

(१) दाँत के मसूड़ों को संस्कृत में दन्तपाली कहते हैं। चूना और शहद मिलाकर दन्तपाली पर लेप करने से विना तकलीफ के दाँत निकल आते हैं।

(२) आमले का रस और शहद का लेप दन्तपाली पर करने से दाँत विना तकलीफ के निकल आते हैं।

(३) सिरस के वीज को रात को पानी में भिगो देना चाहिए जव फूल-कर मुलायम हो जाय तव उसे छेद कर माला वना लेना चाहिए। इस माला को पहनाने से दाँत विना कष्ट के निकलते हैं।

(४) रोहू मछली के दाँत की माला वनाकर पहनाने से विना कष्ट के दाँत निकल आते हैं। उसी प्रकार सीप की माला पहनाने से भी लाभ होता है।

किसी-किसी वालक के मसूड़े वड़े कड़े होते हैं उनको छेदकर दाँत वाहर नहीं निकल पाते। ऐसी दशा में सर्जन की सहायता से मसूड़ा जरा-सा खोलवा देने की आवश्यकता पड़ती है। गाँवों में वहुत सी स्त्रियाँ सरपत के पत्ते से मसूड़ा चीर देती हैं और कष्ट मिट जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

स्वच्छ चूने का पानी मिलाते रहने से अथवा उसी पानी में चीनी का शरवत पका लेने से और वही शरवत उचित मात्रा में चटाने से कैलशियम की कमी पूरी हो जाती है और दाँत निकलते समय खाँसी, अतीसार आदि रोग नहीं होते।

डाक्टर लोग सीरप हाइपो फासफेट आफ लाइम चटाने की राय देते हैं। यह लाल शरवत है और अच्छा लाभ करता है।

इस पुस्तक में उन सव रोगों का इलाज वताया गया है जिनका ऊपर वर्णन किया गया है। उन्हीं औषधियों और पथ्य का पालन करना लाभदायक होता है।

वच्चों का दाँत सुगमता से निकलने के लिए विलायती लाकेट विकते हैं। उनमें विजली का असर रहता है। उन्हें पानी से भीगने से वचाना चाहिए। बच्चे को नहलाते समय लाकेट निकाल देना चाहिए और नहला कर वदन पोंछ कर फिर पहना देना चाहिए।

वच्चों को गन्दे ताबीज और गंडे नहीं पहनाना चाहिए क्योंकि बच्चे उनको अपने मुँह में डालते हैं और उनकी गन्दगी मुँह में जाकर विकार पैदा करती है।

लाकेट बनाने की विधि

ताँबे के तार एवं जस्ते के तार वरावर-वरावर लेकर एक में रस्सी की तरह बट दें। फिर सीप का चूर्ण ले लें और उसका आधा तूतिया लेकर मिला लें और तूतिया के वरावर ही सिरस के वीज भी मिला दें। इनको तारों के वीच में रखकर मखमल में सी दें और दोनों ओर रेशमी फीते लगा दें। इसे वच्चों के गले में वाँधने से लाभ होता है, दाँत सरलता से निकलते हैं। ऊपर की दवाएं इस अन्दाज से लेना चाहिए जिसमें तार में आ जायँ।

दन्तोद्भेद गदान्तक रस

पीपरि, पिपरा मूल, चव्य, चीता, सोंठ, अजमोदा जवाइन, हरिद्रा, मुलहठी, देवदारु, दारु हल्दी, विडंग, इलायची, नागकेसर, नागर मोथा, कचूर, काकड़ासिंगी, विड़लवण, अभ्रक भस्म, शंख भस्म, लौह भस्म, स्वर्ण माक्षिक, भस्म इन सव को समभाग लेकर जल से खूव घोंट कर १-१ रत्ती की गोली

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वना ले। इसके सेवन करने से दाँत निकलते समय के सभी रोग जैसे ज्वर, अतीसार आदि आराम होते हैं। दाँत निकलते समय दस्त वन्द करने के लिए अफीम मिश्रित औषधि न देनी चाहिए।

दूध डालना

वच्चे दूध पीने के वाद कभी-कभी दूध डाल देते हैं परन्तु जव वे वार-वार दूध फेंक देते हैं तव यह दूध डाल देने या दूध वमन कर देने का रोग समझा जाता है। पहले तो वालक फटा-फटा दूध डालता है, उसमें खट्टी-खट्टी वू आती है, कभी-कभी उसमें कफ भी मिला रहता है। कुछ दिनों वाद पानी की तरह पतली-पतली वमन होने लगती है। पेट फूल जाता है और उसमें से आवाज आती है। वच्चे का रंग पीला पड़ जाता है, कभी-कभी पतला दस्त आने लगता है और कभी-कभी कब्ज के साथ दस्त होता है। वच्चा कमजोर हो जाता है। जो कुछ खाता-पीता है सव निकल जाता है। शरीर छूने में गरम नहीं मालूम होता, ठंडा ही रहता है और वच्चे का स्वभाव चिड़-चिड़ा तथा जिद्दी हो जाता है। यह रोग भी अकसर दाँत निकलते समय होता है। इसमें वमन नाशक उपाय करना चाहिए।

यकृत—लिवर

भोजन की गलतियों के कारण वच्चों का लिवर या यकृत खराव हो जाता है। कभी-कभी उसका आकार वढ़ जाता है, कभी उसमें किंचित सूजन आ जाती है। कभी-कभी वह उचित रूप से अपना कार्य नहीं कर पाता। जव छोटे वच्चों को गाढ़ा दूध दिया जाता है जिसमें घी अधिक होता है अथवा दूध में चीनी मिलाकर दिया जाता है अथवा मैदा, चावल, चीनी, गुड़, आदि अधिक मात्रा में खिलाया जाता है तव लिवर या यकृत पर अधिक जोर पड़ता है और उन पदार्थों के पचाने में यकृत को अधिक काम करना पड़ता है जिसके कारण वह बढ़ जाता है और उसमें विकार आ जाता है।

ज्वर की दशा में अथवा ज्वर उतर जाने के वाद कमजोरी की दशा में जव अपथ्य भोजन वच्चों को दिया जाता है तव भी यकृत में विकार आता है। वच्चों का यकृत रोग वड़ा खतरनाक समझा जाता है क्योंकि अधिकांश रोगी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इस रोग से आराम नहीं होते। ५ वर्ष तक की अवस्था में जो यकृत विकार होता है उसे ही इनफैन्टाइल लिवर कहते हैं। यकृत हमारे शरीर का बहुत ही आवश्यक अंग है। यह पसलियों के नीचे पेट के किंचित ऊपर दाहिनी ओर होता है। २ वर्ष की अवस्था तक स्वस्थावस्था में भी यह हाथ से टटोलने से मालूम हो सकता है क्योंकि इस अवस्था तक यह किंचित बढ़ा हुआ रहता है। अवस्था-वृद्धि के साथ यह ऊपर उठ जाता है और हाथ से टटोलने पर यह मालूम नहीं होता। जब यह बढ़ जाता है और इसमें रोग हो जाता है, तब हाथ से टटोलने से मालूम होता है।

यकृत के बढ़ने या विकार-ग्रस्त होने का खास लक्षण यह है कि थोड़ा-थोड़ा ज्वर रहने लगता है, हाजमा बिगड़ जाता है, पेट बढ़ जाता है, बच्चा दुबला हो जाता है, दस्त साफ नहीं आता, खाँसी भी आने लगती है, कभी-कभी ऐसा होता है कि पतला पाखाना आने लगता है। बच्चे के शरीर में रक्त नहीं बनता, बच्चा कमजोर होता जाता है। यदि रोग अधिक बढ़ जाय तो शरीर पीला पड़ जाता है क्योंकि शरीर में रक्त की कमी हो जाती है। तीन वर्ष की अवस्था तक यदि यकृत में विकार आ जावे तो बहुत ही खतरनाक होता है। यह रोग १०-१२ वर्ष की अवस्था तक भी खतरनाक ही होता है क्योंकि लोग गलती से रोटी, चावल आदि खिलाते ही रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उसके पचाने में यकृत पर अधिक जोर पड़ता है और दशा प्रति-दिन बिगड़ती जाती है। हालत यहाँ तक बिगड़ जाती है कि चेहरे पर और हाथ-पाँव में सूजन आ जाती है। इस रोग में स्टार्च और चीनी, गुड़, मैदा आदि बहुत ही हानिकर होते हैं।

यकृत पेट में दाहिनी ओर और प्लीहा बाईं ओर होता है। जिन कारणों से यकृत में रोग होता है उन्हीं कारणों से प्लीहा में भी रोग हो जाता है। प्लीहा में रोग होने पर वह बढ़ जाता है, और प्रायः वे ही लक्षण प्रगट होते हैं जो यकृत-रोग में होते हैं। दोनों की चिकित्सा-विधि भी समान ही है।

चिकित्सा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

इस रोग में स्टार्च, चीनी, गुड़ आदि एक दम बन्द कर देना चाहिए और सन्तरे का रस, टमाटर का रस अथवा पालक का रस देना चाहिए। यदि

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बालक कुछ खाता-पीता हो तो मौसमी फल खिलाइए या परवल, लौकी, नेनुआ आदि की तरकारियाँ उबालकर खिलाने की व्यवस्था कीजिए।

यदि बालक केवल दूध पीता हो तो उसे मक्खन निकाला हुआ दूध देना अच्छा होगा क्योंकि मक्खन सहित दूध देने से यकृत पर जोर पड़ेगा और लाभ कम होगा। जो लोग व्यवस्था कर सकें ताजा मठा, गाय के दूध का बना हुआ जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो, दे सकते हैं। यकृत रोग के सम्बन्ध में हमने अपनी पुस्तक अपूर्व चिकित्सा विधान में काफी विस्तार से लिखा है उसे देखना चाहिए। इस रोग में विटामिन ए की आवश्यकता बहुत रहती है, इसलिए ऐसे फल और तरकारियाँ देने की व्यवस्था करनी चाहिए जिनमें विटामिन ए होता है। परन्तु हमारी राय में मक्खन नहीं देना चाहिए।

डाक्टर लोग लीवर इक्सट्रैक्ट—यकृत का सत्व—देना पसन्द करते हैं। कभी-कभी इससे बहुत अच्छा लाभ भी होता है।

लोहासव और कुमार्यासव इस रोग की अमोघ औषधि हैं। लौह भस्म से भी अच्छा लाभ होता है। लौह मिश्रित औषधियों से लाभ होता है। यदि ज्वर हो तो ज्वर की भी चिकित्सा करने की आवश्यकता रहती है।

ऐसी औषधियाँ जो हाजमें को दुरुस्त करें, भोजन को पचने में मदद दें लाभ करती हैं।

(१) मूली का रस बासी मुँह पिलाने से लाभ होता है।

(२) मदार के पीले पत्ते और सेंधा नमक हाँडी में बन्द कर के फूंक दें और चूर्ण को छान कर २-३ रत्ती की मात्रा में शहद से चटाने से भी लाभ हो जाता है।

यकृदरि लौह

लौह भस्म २० ग्राम, ताम्र भस्म १० ग्राम, मृग चर्म भस्म ४० ग्राम, अभ्रक भस्म २० ग्राम, बिजौरा नीबू की जड़ का चूर्ण ४० ग्राम। पत्थर के खरल में डालकर बिजौरा नीबू के रस को भावना देकर खूब घुटाई करनी चाहिए। इसे २ रत्ती की गोली बनाकर भी रख सकते हैं और सुखा कर चूर्ण रूप में भी रख सकते हैं। बड़ों की मात्रा २ रत्ती बच्चों को अवस्थानुसार २-४ चावल।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यकृदरि लौह सेवन विधि

यकृदरि लौह २ रत्ती, सीतोपलादि चूर्ण ६ रत्ती, लक्ष्मी विलास रस नारदीय १ रत्ती, शंख भस्म ५ रत्ती एकत्र मिला कर ३-४ माशे शहद के साथ चाटने से ज्वर एवं शोथ युक्त यकृत रोग में लाभ होता है। ऐसी मात्रा प्रातः सायं दो बार खानी चाहिए।

गुणकारी पिप्पली चूर्ण

१०० ग्राम पीपरि का चूर्ण लेकर उसमें १०० ग्राम सेंहुड़ का दूध डाल दें। और पत्थर के खरल में खूब घोटें और धूप में सुखाकर फिर घोंट ले जिसमें खूब महीन चूर्ण हो जाये। फिर शुद्ध साफ शीशी में रखलें।

इसकी मात्रा २ रत्ती की है अनुपान शहद। सवेरे शाम दोनों समय चूर्ण देना चाहिए। चूर्ण चाट कर गाय का दूध पीना अच्छा होता है। इससे प्लीहा और यकृत रोग में लाभ होता है।

यदि इसकी १ रत्ती मात्रा रोज बढ़ाई जाय और २१ रत्ती तक लाकर फिर रोज १ रत्ती घटा कर ४० दिन का प्रयोग किया जाय तो अच्छा लाभ होता है। किन्तु वर्धमान प्रयोग बच्चों को न कराना चाहिए। यदि इस के प्रयोग से पतले दस्त आने लगें तो बिना २१ रत्ती पर पहुँचे हुए ही वहीं से घटाना आरम्भ कर देना चाहिए।

पिप्पली को शुद्ध करने का विधान

१०० ग्राम पीपरि लेकर धोकर साफ करले और उसके डंठल निकाल दे फिर स्वच्छ कपड़े में बाँध कर दूध में लटका कर पकावे दूध चौगुना होना चाहिए। फिर धोकर साफ करके सुखाकर चूर्ण कर के औषधि रूप में प्रयोग करे। यह शुद्ध पिप्पली है।

यह याद रखना चाहिए कि जब तक पथ्य न पालन किया जाये किसी भी औषधि से लाभ नहीं होता।

साधारण स्वास्थ्य उन्नत बनाने के लिए धूप-स्नान, वायु-स्नान स्पांजिग और गहरी साँस का अभ्यास करना आवश्यक है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

(३) नवायस लौह की उचित मात्रा देने से अवश्य लाभ होता है।

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(४)गोमूत्र पिलाइए, गोमूत्र से सेंकिए भी।

दाँत किटकिटाना

बहुत से बच्चे रात को सोते समय दाँत किटकिटाया करते हैं। जब पेट में कीड़ियाँ रहती हैं तभी अक्सर बच्चे दाँत किटकिटाते हैं।

चिकित्सा

पेट साफ करना चाहिए। पथ्य भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए। यदि बच्चा अन्न खाता हो तो मिर्च मसाला आदि बन्द करना चाहिए। कुछ दिन फलाहार कराना अच्छा है। इसके बाद काकड़ा सिंगी और सागौन का काढ़ा बनाकर उसी काढ़े में चौथाई दूध डाल कर पकाना चाहिए जब केवल दूध शेष बच रहे तब उसी की मालिश पाँव के तलवों में रोज करने से कुछ दिनों में दाँत चबाना बन्द हो जाता है। क्रिमि चिकित्सा भी करें।

नाभिपाक

यदि बच्चों की नाल काटते समय थोड़ी भी असावधानी हो जाती है अथवा नाल खिच जाती है अथवा जिस औजार से नाल काटी जाती है यदि वह स्वच्छ और कीटाणु-रहित न हो तो बच्चों की नाभि पक जाती है, उसमें से मवाद आने लगता है। जिन माता-पिता को गरमी का रोग होता है उनके बच्चों का रक्त जन्म से ही विकृत होता है। ऐसे विकृत रक्त वाले बच्चों की नाभि अक्सर पक जाती है।

चिकित्सा

लोध, प्रियंगु, हल्दी और मुलहठी समान भाग लेकर चौगुना पानी डाल कर काढ़ा बनावे जब चौथाई काढ़ा बच रहे तब छान कर काढ़े का चौथाई तिल का तेल डालकर तेल पका ले। इसी तेल को नाभि पर लगावे और घाव में टपकावे तथा इन्हीं औषधियों का चूर्ण नाभि पर बुरक दे। इससे नाभि-पाक में लाभ होता है।

डाक्टर लोग सिलवर नाइट्रेट टच करते हैं। इससे भी लाभ होता है। सिलवर नाइट्रेट बहुत तेज औषधि है किसी जानकार चिकित्सक की देख-रेख में इसका प्रयोग करना चाहिए क्योंकि यह घाव को जला देता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बरगद की छाल, पीपल वृक्ष की छाल, पाकड़ की छाल और गूलर की छाल का चूर्ण बनाकर नाभिपाक पर छिड़कने से वह कई दिनों में आराम हो जाता है। नाभि पर बहुत हलकी भाप देने से घाव जल्द सूखता है।

गुदा पाक

जब बच्चों को ऐसा भोजन दिया जाता है जिससे पित्त अत्यधिक बढ़ जाय अथवा दूध पीनेवाले बच्चों की माताएँ जब स्वयं ऐसा भोजन करती हैं जिससे उनके दूध में विकार आ जाय और उस दूध से बच्चे का पित्त बढ़ जाय तब अकसर बच्चों की गुदा पक जाती है और लाल हो जाती है।

गन्दगी के कारण या मीठा अधिक खाने से रक्त में गरमी के कारण गुदा के चारों ओर या आस-पास छोटी पीली फुंसी निकल आती है। इससे बच्चे को ज्वर भी आ सकता है। फुन्सियाँ पक कर उनसे मवाद भी आने लगता है।

चिकित्सा

भीतरी गर्मी के कारण ऐसी फुड़िया निकला करती है। अतः गरमी शांत करने का प्रयत्न प्रथम करना चाहिए। गुलाब जल में सफेद चन्दन घिस कर पिलाना चाहिए। पीते समय उसमें जरा सा मिश्री भी मिलाई जा सकती है।

गुलाब जल में रसवत घिस कर फुड़िया पर लेप करना चाहिए।

रसौत और मुलहठी का चूर्ण करके सूखा चूर्ण बुरकने से भी लाभ होता है। गुदा की सफाई की जानी चाहिए। अहिपूतना की चिकित्सा जैसी बताई गई है वही विधान इसकी चिकित्सा का भी है।

चन्दन का तेल लगाने से इसमें लाभ होता है।

गुदा पकने पर पित्त नाशक क्रिया करनी चाहिए। केवल शुद्ध दूध बच्चे को पीने को दिया जाय और मौसमी फलों का रस दिया जाय। यदि आवश्यकता हो तो एनिमा देकर पेट साफ कर दिया जाय। यदि बच्चा बड़ा हो तो उसे ६-६ घंटे पर दूध देने की व्यवस्था की जाय।

(१) रसांजन खिलाने से तथा रसांजन का ही लेप करने से गुदापाक आराम हो जाता है।

(२) शङ्ख, मुलहठी और रसोत का लेप करने से गुदापाक आराम हो जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(३) बकरी का दूध और मुलहठी के काढ़े से गुदा धोने से भी लाभ होता है।

(४) कड़वे तेल का लेप करके हाथ से हलके-हलके सेंकने से लाल गुदा आराम हो जाती है।

तुण्डी

बहुत से बच्चों की नाभि वायु से भर जाती है, और फूलकर ऊपर उठ आती है तथा उसमें दर्द होता है इस रोग को तुण्डी रोग कहते हैं।

इस रोग को डाक्टर लोग हार्निया आँत उतरने का एक भेद मानते हैं और एम्बिलकल हार्निया कहते हैं।

आँत उतरने के रोग को हार्निया कहते हैं। जब अण्ड कोष में आँत उतरती है तब वह शुद्ध अन्त्र वृद्धि है। नाभि की ओर जब यह बढ़ती है तभी उसमें शोथ होता है।

कुछ बच्चों का यह रोग बड़े होने पर समाप्त हो जाता है और कुछ लोगों का नहीं भी समाप्त होता।

यह रोग यदि आराम न हो तो फिर इससे आगे चलकर परेशानी बहुत होती है।

चिकित्सा

मिट्टी या ईंट आग में लाल करके उसे दूध में बुझा दे और उसी गरम ईंट से उठी हुई नाभि का स्वेदन करे। इससे नाभि का शोथ शान्त हो जाता है। माता को वायु कारक आहार-विहार बन्द कर देने की आवश्यकता पड़ती है। क्योंकि माता के भोजन द्वारा तैयार दूध पीने से ही बच्चे में वायु का विकार होता है।

मुख-स्राव और मुख पाक

बच्चे जब छः मास के हो जाते हैं तब उनके मुख में पाचक रस बनने लगता है। अनेक बच्चों को इसी अवस्था में लार बहने लगती है। इसी को मुख-स्राव कहते हैं। जब बच्चों का मुख पक जाता है अथवा मुँह में दाने पड़ जाते हैं या निनावाँ हो जाता तब भी मुँह से लार बहने लगती है। लार

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बढ़ने से बच्चा वहुत कमजोर हो जाता है। स्त्रियाँ अकसर कहती हैं कि गर्भावस्था में जब माता को इच्छित पदार्थ खाने-पीने को नहीं मिलते तव लार वहने लगती है। लार वहने से पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है और वच्चा कमजोर हो जाता है।

चिकित्सा

(१) सारिवा, मुलहठी, पठानी लोध और तिल इनका काढ़ा वनाकर उसी काढ़े से मुँह प्रतिदिन धोना चाहिए और मुँह में यही लगाना भी चाहिए। इससे लार वहनी बन्द हो जाती है।

(२) यदि मुँह पकने या निनावाँ के कारण लार वहती हो तो मुख-पाक की चिकित्सा करनी चाहिए।

(३) छोटी हर्रें घिसकर मुख में लेप करने से लार वहना वन्द होता है और मुँह के घाव भी आराम होते हैं।

(४) पीपल की छाल और पीपल की पत्ती पीस कर उसमें शहद मिलाकर लेप करने से मुख-पाक आराम होता है।

(५) गेरू, सफेद कत्था, छोटी इलाइची, कपूर और शीतल चीनी का चूर्ण मुँह में वुरकने से मुख-पाक आराम होता है।

क्षीणता—सूखा रोग (मराज़मस)

छोटे बच्चे अकसर सूखने लगते हैं और उनका वजन कम होने लगता है। यह स्वयं कोई रोग नहीं वल्कि कई रोगों में लक्षण के समान होता है। क्षय रोग, कैंनसर, दीर्घकालीन ज्वर, कब्ज, हृदय रोग और पैतृक सिफलिस या गरमी आदि कारणों से दुर्बलता वढ़ती है और सूखा रोग हो जाता है। अधिक अवस्था के वच्चों में यह लक्षण आँतों के क्षय के कारण हो सकता है। अतीसार के कारण तथा भोजन ठीक-ठीक न पचने के कारण भी वच्चों को दुवलेपन का रोग हो जाता है। रोग के कारण उनका पोषण नहीं होता और वे भोजन ठीक-ठीक पचा नहीं पाते इस अवस्था में भी वे क्षीण होने लगते हैं। इसी अवस्था को डाक्टर लोग मराज़मस कहते हैं। क्षीणता को वेस्टिंग डिजीज़ भी कहते हैं। यकृत रोग के कारण भी वच्चों का वजन घटता है। यदि वच्चे का लगे तो किसी चतुर चिकित्सक को दिखाकर रोग का निदान कराना

Acv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अच्छा होता है। जिसमें ठीक-ठीक रोग का निर्णय हो सके। छोटे बच्चों को अकसर यह रोग खिलाने-पिलाने की गड़बड़ी के कारण हो जाता है और जो बच्चे बार-बार खिलाए जाते हैं उन्हें अकसर यह रोग हो जाता है। जिन बच्चों को भर पेट भोजन या दूध नहीं मिलता उनको भी यह रोग हो जाता है। अकसर माताएँ छोटे बच्चों को जभी वह रोता है तभी उसे चुप करने के लिए दूध दे दिया करती हैं या उसे कुछ खिला-पिला देती हैं यह आदत भी बच्चों को क्षीण कर देती है। उसी प्रकार भैंस का दूध देने से भी बच्चे क्षीण होने लगते हैं क्योंकि उसकी प्रोटीन और वसा वे नहीं पचा पाते। वैसे ही समूचा गाय का दूध पीनेवाले छोटे बच्चे भी रोगी हो जाते हैं। कभी-कभी अत्यधिक पानी मिला दूध पीने के कारण अपूर्ण भोजन मिलने से भी बच्चे क्षीण होने लगते हैं। उसी प्रकार अधिक मात्रा में चीनी, गुड़, स्टार्च आदि खिलाने से भी बच्चा क्षीण हो जाता है। गरमी के दिनों में अतीसार हो जाने और अधिक दिनों तक उसके रह जाने से भी यह रोग हो जाता है। माता जब गुड़ चीनी, स्टार्च आदि अधिक मात्रा में खाती है तो उसका दूध बिगड़ जाता है और रोग उत्पन्न करने लगता है। तालुकंटक और छोटी अवस्था के रिकेट में भी बच्चे क्षीण हो जाते हैं। मांसपेशियाँ सूख जाती हैं। जब बच्चा सूखने लगता है तब रक्त की कमी से उसका शरीर पीला पड़ जाता है, शरीर दुर्बल हो जाता है, हाथ-पाँव बिलकुल पतले हो जाते हैं, पेट निकल आता है, बच्चा भूख-भूख चिल्लाता है और खाते रहने पर भी सन्तुष्ट नहीं होता। चूतड़ सूख जाता है, गाल पिचक जाते हैं और हड्डियाँ निकल आती हैं।

चिकित्सा

अच्छे चिकित्सक के परामर्श से चिकित्सा करनी चाहिए और जिस कारण से रोग हुआ हो उसका इलाज होना चाहिए। यदि बच्चा माता का दूध पीता हो तो उसे वह मिलते रहना चाहिए। यदि बच्चा ऊपरी दूध पर रहता हो तो उसे उचित नियमानुसार देना चाहिए जैसे कि हमने अपनी पुस्तक "हमारे बच्चे" में बच्चों को दूध देनेवाले अध्याय में बताया है। बच्चे को टमाटर का रस या सन्तरे का रस पर्याप्त मात्रा में देना चाहिए। बच्चे का आहार धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए और बकरी का दूध देने की व्यवस्था करनी चाहिए। यदि

Mr. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
बकरी का दूध न मिले तो गाय का दूध उचित पानी मिलाकर अथवा मक्खन निकालकर देना चाहिए। क्षीण होते हुए बच्चों की पाचन शक्ति मक्खन देने या वसा देने से और क्षीण होती है इसीलिए इस रोग में काडलिवर आयल लाभ के बदले हानि पहुँचाता है। बच्चे को सरदी से बचाना चाहिए और उसे काफी मात्रा में धूप मिलने की व्यवस्था करनी चाहिए। बच्चे को उचित मालिश की व्यवस्था कीजिए और आयुर्वेद की विधि से तैयार किये लाक्षादि तैल की मालिश कराइए। इस रोग में औषधि की उतनी आवश्यकता नहीं रहती जितनी सावधानी पूर्वक भोजन-सुधार की। यदि दस्त अधिक आते हों तो दस्त बन्द करने की व्यवस्था करनी चाहिए।

भृङ्गराज को पीस कर निकाला रस एक-एक चम्मच की मात्रा में दिन में २-३ बार देने से दस्त बन्द हो जाते हैं, हाजमा दुरुस्त हो जाता है और बच्चे स्वस्थ होने लगते हैं।

कैलशियम पहुँचाने से इसमें भी लाभ होता है। हाइपोफासफेट आफ लाइम का शरबत लाभ करता है। डाक्टर लोग कहते हैं कि इक्सट्रैक्ट आफ माल्ट एक चम्मच की मात्रा में दिन तीन बार देने से अच्छा लाभ होता है।

यदि क्षय के कारण यह रोग होता है तो जहर मोहरा खताई की भस्म आधी रत्ती की मात्रा में खिलाने से तथा यही भस्म तेल में मिलाकर मालिश करने से लाभ होता है।

ताल में होनेवाले घोंघा का मांस रस खिलाने से भी लाभ होता है।

सूखा रोग से पीड़ित बच्चे को मुर्गी के अण्डे की जर्दी पर बैठाने से बहुत लाभ होता है। अण्डा तोड़ कर किसी तसले या कम्बल पर उसकी जर्दी उँडेल देनी चाहिए। उसी पर बच्चे को बैठाना चाहिए। थोड़ी देर में बच्चा गुदा-मार्ग से उसे सोख लेगा। प्रतिदिन एक अण्डे की जर्दी पर बैठाना चाहिए। जब सूखा रोग का असर समाप्त हो जायगा तो जर्दी गुदामार्ग से अन्दर नहीं जायगी।

एक अनुभूत प्रयोग

सोंठ १० ग्राम, असगंध ६० ग्राम, कालीमिर्च १० ग्राम, मुन्नका ३० ग्राम, काकड़ासिंगी १० ग्राम, मुलहठी ५० ग्राम, हल्दी १० ग्राम, बड़ी हड़ का

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

छिलका १० ग्राम, अतीस ३० ग्राम, निशोथ सफ़ेद १० ग्राम, धाय का फूल ६० ग्राम, चीता १० ग्राम, ताजी गुर्च ३० ग्राम, बच मीठा १० ग्राम, पीपरि ३० ग्राम, दारु हल्दी १० ग्राम, नागरमोथा २० ग्राम, बहेड़ा का छिलका १० ग्राम, नीम की कोमल पत्ती २५ ग्राम, आँवले का छिलका १० ग्राम, पोदीना १० ग्राम, सब को जवकुट करके ३ किलो जल में भिगो दें। बर्तन मिट्टी का लेना चाहिए। फिर इसे कंडी की आँच पर धीरे-धीरे काढा बना कर छान लें और इसमें इतना ही चूने का पानी मिला कर १ किलो मिश्री डाल कर शरवत वाली चाशनी बना लें।

यह शर्बत बच्चों को पुष्ट करनेवाला है। इससे खाँसी दस्त आदि के रोग भी दूर होते हैं। दुबले बच्चे भी पुष्ट और बलवान बनते हैं। इसकी मात्रा १५ बूंद से २५-३० बूंद तक दूध में मिला कर या पानी में मिलाकर दी जाती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय ६

आयुर्वेदी मत से बच्चों के रोग

आयुर्वेद का मत वच्चों के रोग के सम्बन्ध में यह है कि जो रोग बड़े लोगों को होते हैं वे सब के सब बच्चों को होते हैं। किन्तु कुछ खास रोग हैं जो केवल बच्चों को ही होते हैं। बच्चे तीन प्रकार के होते हैं-- केवल दूध पीनेवाले, दूध पीनेवाले और अन्न खानेवाले तथा केवल अन्न ही खानेवाले अर्थात् ८-१० वर्ष के बच्चे।

विकृत दूध पीनेवाले बच्चे अकसर रोगी हो जाते हैं। उसी प्रकार विकृत अन्न खाने से भी बच्चे रोगी हो जाते हैं। माता के विकृत-आहार-विहार का भी असर बच्चों के रोगी होने में पड़ता है।

बालकों में होनेवाले खास रोग ये हैं—

(१) तालु कंटक, (२) महापद्मक, (३) पारिगर्भिक, (४) तुण्डी, (५) दन्तोद्भेदक रोग, (६) गुदापाक, (७) कुकूणक, (८) अज-गल्ली और (९) अहिपूतना। इनमें से तुण्डी, गुदापाक और दन्तोद्भेदक रोगों का वर्णन हमने ८ वें अध्याय में किया है। शेष रोग इस अध्याय में दिये जायँगे। कुछ प्राचीन पुस्तकों में अहितुण्डिका, अनामक और पश्चाद्रुज नामक रोगों का वर्णन है। इनके लक्षण हमें प्राचीन ग्रन्थों में नहीं मिले और न इनका नामान्तर ही मालूम हुआ। इसलिए लक्षण नहीं लिखे गये। पश्चाद्रुज का लक्षण इस पुस्तक में दिया गया है। बच्चों को छोटी अवस्था में कुछ विशेष प्रकार के ग्रह भी सताया करते हैं। आधुनिक पाश्चात्य ढङ्ग के चिकित्सक सम्भव है उस पर विश्वास न करें परन्तु उन लक्षणों के रोग होते हैं। उन ग्रहों का वर्णन और चिकित्सा भी इस पुस्तक में लिखी गई है।

दूध विकृति

माता का विकृत दूध पीने से बच्चे रोगी हो जाते हैं। छोटे बच्चों को रोग

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तभी होता है जब उनका भोजन या उनको मिलनेवाला दूध विकृत या विकार युक्त होता है। माता के दूध में तभी विकार आता है जब माता के आहार-विहार में गड़बड़ी होती है। आयुर्वेद के मत से दूध के चार प्रकार के विकार होते हैं—(१) वात से विकृत, (२) पित्त से विकृत, (३) कफ से विकृत और (४) तीनों दोषों के कारण या सन्निपात के कारण विकृत।

वात विकृत दूध

वात विकृत दूध पीने से बच्चों को वात सम्बन्धी रोग होते हैं। बच्चे की आवाज धीमी पड़ जाती है, शरीर दुर्बल और कृश हो जाता है तथा वायु—अपान वायु—मल और मूत्र के निकलने में रुकावट हो जाती है, मल सूख जाता है तथा कब्ज हो जाता है और पेशाव भी कम उतरता है।

पित्त विकृत दूध

पित्त से विकृत हुआ दूध पीने से बालक शोथ, कामला और पित्त-रोगवाला होता है। उसे पतले दस्त आते हैं उसका सारा शरीर गरम रहता है और उसे प्यास बहुत लगती है।

कफ विकृत दूध

कफ के कारण बिगड़ा हुआ दूध पीने से बच्चे को कफ के रोग उत्पन्न होते हैं उसे लार बहती है, नींद बहुत आती है, मुँह और आँखों पर सूजन आ जाती है, वमन होती है और बच्चा ऐसा रहता है मानो उसके हाथ-पाँव जकड़ से गये हैं।

द्वन्दज और सन्निपात विकृत दूध

तीनों दोषों के कारण विकृत हुआ दूध पीने से बालक में सभी दोषों के लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

दो दोषों से विकृत हुआ दूध पीने से बालक में दो दोषों के लक्षण प्रकट होते हैं। जैसे वात कफ विकृत होने पर वात और कफ के, वात पित्त में वायु और पित्त के और कफ और पित्त में कफ और पित्त के लक्षण दिखाई पड़ेंगे।

आयुर्वेद के मत से दूध की परीक्षा नीचे हम दे रहे हैं। वात से विकृत दूध की पहचान यह है कि उसमें कसैला रस रहता है और वह पानी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तैरता है ।

पित्त से विकृत दूध कड़वा, अम्ल और नमकीन रस वाला होता है और उसमें पीली धारियाँ होती हैं।

कफ से विकृत दूध गाढ़ा होता है और पानी में डूब जाता है और अत्यन्त चिकना होता है। दो दोषों से दूषित दूध में दो दोषों के लक्षण दिखाई पड़ते हैं और तीन दोषों से विकृत दूध में तीनों दोषों के लक्षण मिलते हैं।

जो दूध शुद्ध होता है तथा विकार रहित होता है वह पानी में डालने पर जल में मिलकर एकाकार हो जाता है, मधुर होता है, किंचित पीला या स्वच्छ होता है और उसमें कोई विवर्णता नहीं होती है।

चिकित्सा

वात विकृत दुग्ध का दोष दूर करने के लिए ३-४ दिनों तक दशमूल का काढ़ा पिलाना चाहिए और वात नाशक औषधियों से पकाया हुआ घी पिलाना चाहिए और हलका जुलाब देकर पेट साफ कर देना चाहिए।

पित्त से विकृत दुग्ध में गुडूच, परवल के पत्ते, नीम की अन्तर छाल और लाल चन्दन का विधि से काढ़ा बनाकर थोड़ी देशी चीनी मिलाकर बच्चे और माता दोनों को पिलाना चाहिए।

कफ से विकृत दूध में घी में मुलहठी और सेंधा नमक मिलाकर पिलाना चाहिए और बच्चे को हलके ढंग से वमन कराकर सब कफ-विकार निकाल देना चाहिए। थोड़े गरम जल में नमक मिलाकर पिलाने से बच्चों को वमन हो जाती है।

दो दोषों से दूषित दूध में दो दोषों की औषधियाँ और त्रिदोषज में तीनों दोषों की औषधियाँ मिलाकर देनी चाहिए।

दूध शुद्ध करने के लिए पाठा, मुर्रा, चिरायता, दारु हल्दी, सोंठ, इन्द्र जौ, नागरमोथा और कुटकी का काढ़ा बनाकर माता को पिलाना चाहिए।

तालुकंटक

तालु में स्थित कुपित कफ तालुकंटक नामक रोग उत्पन्न करता है। इस रोग में शिर में तालु प्रदेश नीचा हो जाता है, तालू में गड्ढा पड़ जाता है। तालुकंटक शब्द का शब्दार्थ होता है तालु का कंटकाकार—काँटों की तरह—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हो जाना।

तालुपात

कुपित कफ के कारण ही तालुपात नामक रोग होता है। वस्तुतः यह तालु कंटक का ही बढ़ा हुआ रूप है। इस तालुपात रोग में तालु गिर पड़ता है। तालुपात का यही शब्दार्थ भी है। बच्चा दूध नहीं पीता, यदि पीना चाहे तो बड़ी कठिनाई से थोड़ा-बहुत पी पाता है। दस्त पतले होते हैं, प्यास लगती है, आँख, कंठ और मुँह में पीड़ा होती है, वमन हो जाती है और बच्चा अपनी गर्दन नीची किये रहता है या किसी के सहारे रखना चाहता है क्योंकि गर्दन सँभाल नहीं पाता। (बच्चा दुबला, चिड़-चिड़ा और सुस्त रहता है) इसे आप विटामिन के अभाव के कारण उत्पन्न रोग भी कह सकते हैं और यह बच्चों का क्षय भी है। फक्क रोग और मराजमस भी देखिए।

इस रोग में कफ के कारण मन्दाग्नि भी हो जाती है। वस्तुतः जब यह रोग हो जाता है तब देहातों में तो बच्चों का जीना ही मुश्किल हो जाता है। इस रोग में कैलशियम की कमी भी हो जाती है। बहुत से चिकित्सक तालु-कंटक और तालुपात में भेद नहीं करते और दोनों को तालु कंटक ही कहते हैं। इसमें बच्चा सूख जाता है।

चिकित्सा

छोटी हर्रें, वच और कूट बराबर-बराबर लेकर बारीक चूर्ण कर डाले और उचित मात्रा में लेकर शहद मिलाकर माता के दूध के साथ बच्चे को पिलाना चाहिए इससे तालुकंटक रोग से छुटकारा मिल जाता है। यही औषधि तालुपात में भी काम करती है।

भृङ्गराज पीसकर जरा सा गुड़ मिलाकर तालु के ऊपर लेप करने से भी तालुकंटक रोग आराम हो जाता है।

महापद्म विसर्प

यों तो विसर्प बच्चों और बड़ों सब को होता है। परन्तु बच्चों को वस्ति और शिर में उत्पन्न हुआ विसर्प प्राणघातक होता है। यह त्रिदोष से उत्पन्न होता है और कनपटी के पास शङ्ख देश से उत्पन्न होकर नीचे हृदय तक उत-

Arya Vidya Chaturvedi Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रता है और हृदय देश में उत्पन्न होकर गुदा पर्यन्त जाता है। लाल कमल के रंग का या किंचित कालापन लिए हुए लाल रंग का होता है इसी कारण इसे महापद्म नाम दिया गया है। शङ्ख से हृदय तक आनेवाला शीर्षज महापद्म और हृदय से गुदा या वस्ति को आनेवाला वस्तिज महापद्म कहलाता है। ऐसा भी हो सकता है कि शिर से उत्पन्न होकर यह रोग हृदय तक आवे और फिर हृदय देश से वस्ति की ओर आ जाय। विसर्प एक फैलनेवाला रोग है इसमें रक्त में विकार आता है। रक्त में विकार होने से ही किसी रंग की सूजन सहित या अल्प सूजन के साथ जिसमें वेदना जलन आदि विशेष रूप से रहते हैं दोष सरक कर बढ़ता है इसी को विसर्प कहते हैं। इसे अंगरेजी में इरासिपिल्स कहते हैं।

चिकित्सा

इस रोग में एनिमा रोज दीजिए और बच्चे को फल खाने को दीजिए अथवा मौसमी फलों का रस दीजिए और दूध दीजिए। यदि अन्न खानेवाला बच्चा हो तो उसका भी अन्न बन्द कर दीजिए और केवल मौसमी फल दीजिए और नीचे लिखे नुसखों में से कोई लेप कीजिए।

(१) नागर मोथा, लाल कमल, नील कमल, खस, सारिवा, मुलहठी, सफेद चन्दन, सरसों और मजीठ सब को समान भाग लेकर पीसकर विसर्प पर लेप करने से विसर्प रोग आराम होता है।

(२) मुलहठी, जामुन की छाल, बड़, वेत, पीपल, पाकड़, पदमकाठ, खस, सफेद चन्दन और मजीठ इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीसकर लेप करने से विस्फोट, पीड़ा, व्रण की जलन और विसर्प सब आराम होते हैं।

(३) परवल के पत्ते, हरड़, बहेड़ा, नीम की छाल और हल्दी समान भाग लेकर दो तोला लेकर चौगुना जल में डाल कर मिट्टी के पात्र में कंडी की आँच पर पकावे जब चौथाई जल शेष रहे तब उतार कर छानकर पिलावे। इससे विसर्प, क्षत, विस्फोट और ज्वर आराम होते हैं।

पारिगर्भिक

जब माता गर्भवती हो जाती है तब भी बच्चे को दूध पिलाती रहती है तो उस विकृत दूध के पीने से बच्चे को खाँसी, अग्निमान्द्य, वमन, तन्द्रा,

Prof. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कृशता, अरुचि, भ्रम (चक्कर आना) और कोष्ठबद्धता या कब्ज रोग हो जाते हैं इन सारे लक्षण समूहों को पारिगर्भिक रोग कहते हैं। पारिगर्भिक का दूसरा नाम है परिभव रोग। इस रोग को लोक-भाषा में अहिण्डी कहते हैं। गर्भकाल में दूध वायु से विकृत हो जाता है। उस वायु-विकृत दूध को पीने से यह पारिगर्भिक रोग हो जाता है।

चिकित्सा

पारिगर्भिक रोग में फलों का रस, उत्तम एवं शुद्ध दूध आदि की व्यवस्था करनी चाहिए तथा ऐसी औषधि देनी चाहिए जिससे अग्नि दीप्त हो। इसके लिए हिंग्वष्टक चूर्ण, शङ्ख की भस्म का चूर्ण एक या आधी रत्ती की मात्रा में देना चाहिए। कौड़ी की भस्म आधी रत्ती की मात्रा में देने से लाभ होता है। लवण भास्कर चूर्ण या अग्नि कुमार रस की भी व्यवस्था की जा सकती है। माता का दूध नहीं देना चाहिए।

सौंफ के तेल में थोड़ी सी शक्कर मिलाकर बच्चे को रोज खिलाने से इस रोग में लाभ हो जाता है। १० बूंद तेल से लेकर १ माशे तक तेल की मात्रा रखी जा सकती है।

सौंफ का अर्क और चूने का पानी समान भाग मिलाकर दूध में पिलाने से इस रोग में लाभ होता है। इससे दूध पचने लगता है। ऐसे बच्चों को माता का दूध बन्द कर देना चाहिए।

सौंफ का अर्क, गुलाब का अर्क दोनों मिलाकर थोड़ी-थोड़ी देर पर देने से बच्चों की कै रुकती है और प्यास कम हो जाती है। बच्चों के लिए निर्दोष चीज है।

कुकूणक

दूध पीनेवाले बच्चों को दूध में दोष के कारण आँख की पलकों के भीतर रोग उत्पन्न होता है उसे कुकूणक कहते हैं। आँख की पलकों में सरसों के आकार के या इससे भी छोटे दाने से निकल आते हैं जिसे देशी भाषा में रोहे कहते हैं। इसके कारण आँखों में खुजली होती है और आँखों से आँसू या पानी बार-बार बहुत गिरता है। यह पानी किंचित चिकना होता है। बच्चा ललाट, आँख और नाक को अपने हाथ से बहुत घिसता या रगड़ता है। सूर्य का प्रकाश

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उसे सहन नहीं होता और वह अपनी पलकें खोलने में भी असमर्थ होता है क्योंकि आँखें गड़ती हैं और रोशनी से कष्ट होता है।

मीठी चीजें, जैसे चीनी, गुड़, मिठाई, मालपुआ, मोहन भोग, हलुआ, बरफी, रसगुल्ले आदि मछली, मांस, दूध, चावल, आलू, पत्ते वाले शाक, मक्खन, दही, सुरा, आसव, पीठी के पदार्थ, उड़द की दाल, वड़े, कचौड़ी आदि तिल, खटाई, काँजी और अन्य अभिष्यन्दी पदार्थ—नसों को वन्द करने वाले पदार्थ-बालक की माता यदि अधिक मात्रा में और प्रायः रोज ही खाती है तथा भोजन के बाद दिन को सो जाती है तो उसके दोष कुपित होकर अपने स्थान से हट जाते हैं। दोषों से मार्गों के—रस-दूध आदि वहानेवाले मार्गों के—रुक जाने से माता का दूध विकृत हो जाता है। उस विकृत दूध के पीने से बालक को कुकूणक रोग हो जाता है। अम्ल, नमकीन और मधुर रस वाले पदार्थ बालक और माता यदि दोनों ही सेवन करें तो भी बालक को कुकूणक नामक नेत्र-रोग हो सकता है। इस रोग में आँख सूज भी जाती है। ऐसा कश्यप संहिता में लिखा है।

चिकित्सा

इस रोग के इलाज के लिए यह आवश्यक है कि माता के दूध का विकार दूर किया जाय। इसके लिए माता को वमन कराना चाहिए। फिर पाचन करावे या उपवास कराकर विकार जला देना चाहिए तथा एनिमा द्वारा या जुलाव द्वारा शेष दोष निकाल देना चाहिए और दूध को गारकर निकाल देना चाहिए और उचित तथा पथ्य भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए। रोग उत्पन्न करनेवाले भोजन और अपथ्य रोक देना चाहिए। माता का दिन में सोना रोक देना चाहिए। माता को स्वच्छ और साफ वस्त्र पहनने का आदेश देना चाहिए और गंदगी एक दम रोक देनी चाहिए।

फिर बालक की आँख खोलकर हलका सेंक करना चाहिए और उचित औषधि की व्यवस्था करनी चाहिए।

(१) त्रिफला (हरड़-वहेड़ा और आँवला), पठानी लोध, पुनर्नवा, अदरक, बड़ी कटेरी तथा छोटी कटेरी इनको पीसकर सुखोष्ण गरम करके आँखों पर लेप करने से कफ का नाश हो जाता है और कुकूणक में लाभ होता है।

Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri / CC-0. Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(२) सोंठ, पीपरि, मिर्च, भृङ्गराज, मैनसिल और करंज के बीज को खूब अच्छी तरह बारीक पीस कर सुरमे की तरह आँख में लगाने से पलकों की खुजली मिट जाती है।

अजगल्लिका के लक्षण

बालक के शरीर में चिकनी, शरीर के रङ्गवाली, गुथी सी, पीड़ा रहित मूंग के आकार की फुन्सियाँ होती हैं। इसी को अजगल्लिका कहते हैं।

चिकित्सा

यह एक प्रकार का व्रण ही है। इसे किसी अच्छे चिकित्सक से दिखाना चाहिए। प्राकृतिक चिकित्सा यदि अधिक दिनों तक की जाय तो सम्भव है लाभ हो जाय। एनिमा देकर पेट साफ कर देना चाहिए। फिर उचित रूप से फलाहार कराकर रक्त शुद्ध करने की चेष्टा करनी उचित है।

इसमें आरम्भ में जोंक लगवा कर रक्त निकलवा देने से अजगल्लिका आराम हो जाती है। यदि यह पिड़िका कठिन हो तो क्षार कर्म करने की आवश्यकता पड़ सकती है। यदि पक जाय तो चिरवा कर घाव भरने के लिए उचित उपाय करने चाहिए।

अहिपूतना

पाखाना और पेशाब से गुदा के लिसे रहने से एवं उसे साफ तौर से न धोने से तथा उस स्थान के पसीना पानी आदि को न पोंछने से गुदा में अहिपूतना नामक रोग होता है। इस रोग में रक्त और कफ के कोप से गुदा में खुजली होती है और खुजलाने से तत्काल फफोले या फोड़े हो जाते हैं और उनसे स्राव होने लगता है, पानी या मवाद बहने लगता है। सब फफोले एक में मिल जाते हैं और बड़ा सा फोड़ा बन जाता है। यह फोड़ा बड़ा कठिन और कष्ट साध्य होता है इसी को अहिपूतना कहते हैं। गुदा को सेंकने से भी यह रोग हो जाता है। वस्तुतः रक्त में विकार होने के कारण गुदा की सफाई करते रहने पर भी यह रोग हो जाता है।

चिकित्सा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

शंख, सफेद सुरमा और मुलहठी को पानी में पीस कर लेप करने से अहि-

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पूतना नामक रोग नष्ट होता। बच्चे को पथ्य से रखिए और उचित स्वच्छता की भी व्यवस्था कीजिए।

(१) इसमें सफाई की विशेष आवश्यकता रहती है। २-४ कंकड़ी परमेंगनेट आफ पोटाश एक गिलास जल में डाल दें। जब पानी लाल रंग का हो जाय तब उसी जल से गुदा को धोकर सुखा कर बोरिक एसिड को छिड़क दिया करें। सवेरे शाम दोनों समय यह उपाय करें।

(२) कारबोलिक साबुन से गुदा धोकर साफ करके सुखा लें और शंख, सफेद सुरमा और मुलहठी का सम भाग चूर्ण उस पर बुरक दें।

(३) त्रिफले के पानी से गुदा धोवें और त्रिफला चूर्ण बुरक दें।

व्रण पश्चातक

इस रोग में बच्चे की गुदा में लाल रंग का व्रण उत्पन्न होता है उसमें जलन होती है और ज्वर तथा खाँसी भी रहती है। यह पित्त के कारण होता है। व्रण का स्वरूप लाल रंग का और जोंक के पेट के समान होता है। इसमें मल पीला और पतला होता है। कभी-कभी कब्ज भी रहने लगता है। इसी को व्रण पश्चातक भी कहते हैं।

इसमें चतुराई से जोंक लगाकर दूषित रक्त निकाल देना चाहिए। बाद को पीपल वृक्ष की छाल, गूलर की छाल, पाकड़ की छाल और बरगद की छाल चारों को समान भाग लेकर काढ़ा बनाकर उसी काढ़े से घाव धोना चाहिए। इससे घाव भर जाता है और सूख जाता है। इसी काढ़े में कपड़ा भिगोकर घाव को तर रखने से जलन आदि शीघ्र दूर हो जाते हैं।

गुदभ्रंश—काँच निकलना

जब छोटे बच्चों को अतिसार आदि हो जाता है और वे कमजोर हो जाते हैं अथवा कब्ज रहने के कारण जब काँख-काँख कर पखाना करते हैं तब कमजोरी के कारण गुदा बाहर निकल आती है। इसी को काँच निकलना कहते हैं। यह रूक्षता बढ़ने से और कमजोर बच्चों को कभी-कभी बिना अतिसार के भी निकल आती है।

काँच निकलने के अनेक कारण हैं जैसे बहुत पुराना कब्ज, शारीरिक कमजोरी, पुरानी पेचिश आदि। कब्ज के कारण जब मल जल्दी नहीं निक-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लता और उसके निकलने के लिए जोर लगाना पड़ता है और यही क्रिया बार-बार करनी पड़ती है तब गुदा-चक्र ढीला हो जाता है और काँच निकलने लगती है। आरम्भ में तो पाखाने के समय जोर लगाने से उसी समय काँच निकलती है परन्तु रोग पुराना पड़ने पर यों ही बिना जोर लगाये ही निकल आती है और हालत ऐसी हो जाती है कि खाँसने, जोर से हँसने, जोर लगने वाला कोई काम करने से काँच निकल आती है। हालत यहाँ तक बिगड़ जाती है कि देर तक खड़े रहने से भी काँच निकल आती है। इसके निकलने का क्रम भी विभिन्न लोगों में विभिन्न प्रकार का होता है। किसी को थोड़ी ही निकलती है और किसी-किसी को ३-४ इंच या इसी के लगभग निकल आती है। और इसे हाथ से अन्दर करना पड़ता है।

चिकित्सा

रोगी को लंगोट बाँधना चाहिए। किसी भी संकोचक औषधि का लेप लगाया जाय। माजू फल और फिटकरी ६-६ माशा लेकर पाव-सवा पाव पानी में घोल कर उसी से गुदा प्रक्षालन कराये और छोटी हर्रे का चूर्ण काँच पर छिड़क कर काँच ऊपर उठा कर लंगोट कस दे। दौड़-धूप के काम बन्द कर दे और आराम करे। आवश्यकता पड़े तो लिटा कर मल त्याग कराया जाय जिसमें काँच न निकले।

गुदा को सेंककर तथा गाय का घी लगाकर भीतर प्रवेश कर देना चाहिए और ध्यान इस बात का रखना चाहिए कि बच्चा पखाना करते वक्त काँखे नहीं। प्राचीन काल में गुदा प्रवेश करके एक प्रकार की चमड़े की पट्टी जिसमें छेद होता था बाँध देते थे इससे गुदा बाहर नहीं निकलती थी। थोड़ा-थोड़ा यों भी गुदा सेंक देना चाहिए और ऐसा भोजन दिया जाय जिससे बच्चे का बल बढ़े और रूक्षता कम हो जाय।

(१) कमलिनी की कोमल पत्ती पीस कर चीनी मिला कर खाने से काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(२) चूहे का मांस घी में पकाकर उसी घी को गुदा में लेप करने से काँच निकलने में लाभ होता है।

(३) कसैले रस वाली चीजों के लेप से गुदा बाहर नहीं निकलती। इसके

CC-0. Vaidya Chauhan Collection, Haridwar

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लिए हरड़ और फिटकरी का प्रयोग किया जा सकता है।

चोरक

यह चोर की तरह चुपके-चुपके आता है और प्रायः बच्चों की जान ले लेता है इसी कारण इसको चोरक कहते हैं। यह नया रोग नहीं है। प्राचीन काल में भी यह बच्चों को होता था। रस रत्नाकर में इस रोग का उल्लेख इस प्रकार मिलता है :—

हृत्वैकदातिसरणं वमन तथैव।
आध्मानं घूर्णन रुजं शिशोविधाय
यः श्वास मात्र परिरक्षति जीव योगा,
रोगो वधूभिरुदितः सहि चोर नाम :

बालक एकाएक रोग ग्रस्त होता है उसकी आँखें बन्द हो जाती हैं, दस्त होने लगते हैं और वमन भी होने लगती है। पेट में वायु भर जाती है और फूल जाता है और घुर-घुर शब्द करने लगता है, बच्चा मूर्च्छित हो जाता है और पीड़ा से दुखी रहता है। जीने के कोई लक्षण नहीं दिखाई देते केवल साँस मात्र चलती है। इस रोग को स्त्रियाँ चोरक कहती हैं। इस रोग से प्रायः बच्चे मर ही जाते हैं।

यह एक प्रकार का वात से उत्पन्न रोग है और वात-नाड़ियों से सम्बन्धित हैं। गन्दे वस्त्र पहनाना, गन्दगी में रखना, माता का भारी भोजन करना जिससे माता का दूध दूषित और भारी होता है। ऐसे दूध के पीने से इस प्रकार के रोग होने का डर रहता है। बच्चे जब तक माँ के दूध पर रहते हैं तब तक माता को मैथुन से बचना चाहिए। मैथुन करने के बाद तुरन्त गरम-गरम दूध बच्चे को पिलाने से बच्चे रोगी हो जाते हैं उन्हें चोरक रोग भी होता है और अन्य रोग भी हो जाते हैं। गर्भवती स्त्री यदि अपना दूध पिलाती है तो पारिगर्भिक नामक रोग बच्चे को होता है।

यह रोग बच्चे को प्रायः एक बार ही होता है किन्तु एक बार में ही यह प्राण ले लेता है।

मुर्गी के अण्डे की जरदी या पीला भाग बच्चे के सिर और हाथ पैर पर मलने की व्यवस्था करनी चाहिए। इससे बच्चा शीघ्र होश में आ जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जब तक बच्चा होश में न आये खाने की कोई दवा कैसे खिलाई जायगी।

कस्तूरी और गोरोचन एक साथ घिस कर बच्चे के शरीर पर मलने से लाभ होता है।

मिर्च का धुआँ या चन्दन की लकड़ी का धुवाँ सुँघाने से बच्चे होश में आ जाते हैं।

होश में आने पर भी यदि बच्चे को दस्त आते हों तो कर्पूर रस वटी उचित मात्रा में देनी चाहिए। वमन होती हो तो वमन का इलाज करे।

घर को साफ रखें। बच्चे के वस्त्र साफ रखें। अष्ट मंगल धूप जलायें, अगर वत्ती जलायें। घर का वातावरण बदल दें।

वृहत वात चिन्तामणि रस उचित मात्रा में देना चाहिए। अथवा वृहत कस्तूरी भैरव रस को उचित मात्रा में देने से लाभ होता है।

अच्छे चिकित्सक से परामर्श लें पुस्तक के भरोसे इलाज में न लगें।

आँख उठना

दूध या आहार के दोष से अथवा दाँत निकलने के समय दोषों के कुपित होने से आँख में विकार हो जाता है इस रोग में आँख की भीतरी पलकों और श्वेत भाग में प्रदाह होता है। इसमें आँखें लाल हो जाती है, पानी या कीचड़ बहता है, आँखों में दर्द होता है, कभी-कभी, आँखों की पलकें सूज जाती हैं और बच्चा आँखें बन्द कर लेता है। यदि ३-४ दिन आँखें बन्द रहती हैं तो अकसर आँखों में फूली पड़ जाती है। यह फूली घाव का दाग है।

चिकित्सा

(१) आँख उठने में बरगद का दूध आँख में आँजने से लाभ होता है।

(२) भरभंडा का दूध आँख में आँजने से लाभ होता है।

(३) कपूर १ माशे और पठानी लोध का चूर्ण एक माशे दोनों को पोटली में बाँध कर थोड़े गुलाब-जल में एक घंटे भिगो रखो फिर उसी को बच्चों की आँख में टपकाने से लाभ होता है।

(४) केसर, फिटकरी और थोड़ी सी अफीम गाढ़ा-गाढ़ा पीस कर गरम करके आँख की पलकों पर और चारों ओर लेप करने से लाभ होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

आँख उठने पर उपवास कराना चाहिए और फलाहार कराना चाहिए,

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चीनी, नमक, मैदा, रोटी आदि बन्द करना चाहिए और थोड़े गरम पानी में बोरिक एसिड डालकर उसी से आँख सेंकना चाहिए। कभी-कभी इसी सेंक से आँख आराम हो जाती है।

प्रोटारगल लोशन डाक्टर लोग आँख में डालते हैं।

पोथकी

यह बच्चों की पलकों में होने वाली एक प्रकार की पिड़िका है, यह दाँत निकलते समय अकसर निकल आती है इसमें आँख से पानी बहता है, खुजली होती है, लाल सरसों के आकार की छोटी पिड़िका निकलती है जिसमें दर्द भी होता है।

इसकी चिकित्सा के सम्बन्ध में यह याद रखना चाहिए कि सम्भव है इसमें शस्त्र चिकित्सा की आवश्यकता पड़े। सदैव किसी चतुर नेत्र-चिकित्सक से शस्त्र चिकित्सा करानी चाहिए। पथ्य पालने से भी लाभ हो सकता है। फलाहार और एनिमा के प्रयोग आदि द्वारा शरीर शुद्ध करने से लाभ होता है। आँख को किंचित सेंकने की भी आवश्यकता पड़ सकती है।

मूत्राघात

छोटी इलाइची, सोंठ, पीपरि इन सब को समान भाग लेवे और सेंधा नमक एक औषधि का आधा लेवे और कूट पीस कर चूर्ण बना ले। इस चूर्ण को शहद और मिश्री मिलाकर चटाने से बच्चों की पेशाब की जलन और पेशाब न होने के रोग मिट जाते हैं।

बालकों का रात को रोना और डरना

(१) यदि बालक रात को बहुत रोता हो तो उसे पीपरि और त्रिफला का चूर्ण समान भाग लेकर ३-४ रत्ती की मात्रा में १ भाग शहद और दो भाग घी मिलाकर चटाने से बच्चों का रात का रोना और डरना आराम होता है।

(२) बेल के पत्ते, उड़द, इन्द्रजौं, सिरस के पत्ते, छछूंदर की लेंड़ी और हलदी इन सब को एकत्र कर आग पर धुनी देने से बच्चों का रात को रोना और डरना आराम हो जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तालुपाक

असली यवक्षार लेकर शहद में मिलाकर पकी हुई तालुपर लेप करना चाहिए। इस औषधि से लाभ होता है।

ग्रह-जुष्ट

सुश्रुत आयुर्वेद का बहुत प्राचीन ग्रंथ है। इसका कौमार भृत्य अध्याय बच्चों के ग्रहों के विषय में बहुत प्रामाणिक माना जाता है। कुमार कार्तिकेय की रक्षा के लिए भगवान शङ्कर और पार्वती ने ग्रहों की रचना की थी। भगवान कार्तिकेय के युवा हो जाने पर शिव जी ने इन ग्रहों की जीविका के लिए आज्ञा दी कि वे उन बच्चों को सताया करें जिनको बहुत डराया जाता है, जो गन्दे रहते हैं, जिनके घर में यज्ञ नहीं होते, जहाँ पापाचार होते हैं आदि। ऐसा वर्णन कौमार भृत्य में मिलता है। आधुनिक विज्ञान के युग में इन ग्रहों पर लोग कहाँ तक विश्वास करेंगे यह मैं नहीं जानता। परन्तु ग्रहों के लक्षणवाले रोग बच्चों को होते हैं और उनमें बलि, यज्ञ, दान, अनेक प्रकार के स्नान, धूप आदि से लाभ हो जाता है।

बच्चों के ग्रह नव माने जाते हैं। स्कन्द ग्रह, स्कन्दापस्मार ग्रह, शकुनी ग्रह, रेवती ग्रह, पूतना ग्रह, गंध पूतना ग्रह, शीत पूतना ग्रह, मुख मण्डनिका ग्रह और नैगमेय ग्रह।

स्कन्द ग्रह के लक्षण

आँख का गोला सूज जाता है, रक्त की सी गंध आती है, मुख टेढ़ा हो जाता है, बच्चा स्तन नहीं पीता, एक आँख और उसकी पलकें बहुत फड़कती हैं, आँखें खुलती नहीं हैं, बच्चा उद्विग्न रहता है, बच्चा कम रोता है, मल गाढ़ा होता है और दोनों हाथ की मुट्ठियाँ बन्द रखता है। बच्चे के अङ्ग भी फड़कते हैं। बच्चे की दृष्टि ऊपर हो जाती है। बच्चा डरा रहता है और दाँत चबाता है।

स्कन्दापस्मार के लक्षण

बच्चा बेहोश हो जाता है और मुँह से फेन निकलता है, होश में आने पर बहुत अधिक रोता है, पीप और रक्त के समान उसमें से गन्ध आती है,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हाथ-पाँव नचाता है, जँभाई ज्यादा आती है, रो कर मल-मूत्र त्यागता है यह स्कन्दापस्मार ग्रह से पीड़ित बच्चे के लक्षण हैं।

शकुनी ग्रह के लक्षण

बालक का अङ्ग शिथिल हो जाय, भय से चकित रहे, शरीर से पक्षी की सी गंध आवे, जलन पैदा करनेवाले और पकनेवाले फोड़े फुंसियाँ शरीर में हो जायँ, बहनेवाले फोड़ों से बच्चा पीड़ित हो जाय ये लक्षण शकुनी ग्रह से पीड़ित बच्चे के होते हैं।

रेवती ग्रह के लक्षण

बालक का मुँह लाल रङ्ग का हो जाय, शरीर का रङ्ग अत्यन्त सफेद हो जाय, मल हरे रङ्ग का हो, ज्वर हो, मुख पक जाय, वेदना बहुत हो, बच्चा कान-नाक अधिक रगड़े, शरीर व्रण और फफ़ोलों से पीड़ित हो जाय, पतला पाखाना हो, कीचड़ का सा गन्धवाला रक्त-स्राव शरीर से हो। ये लक्षण रेवती ग्रह के हैं।

पूतना ग्रह के लक्षण

ज्वर और अतीसार हो जाते हैं, प्यास लगती है, बच्चा तिरछा देखता है, आँखें कुछ टेढ़ी हो जाती हैं, बच्चा रोता है, नींद नष्ट हो जाती है और बच्चा बेचैन रहता है। काग की सी गन्ध आवे, वमन हो, रोमांच हो और शरीर शिथिल हो। ये लक्षण पूतना ग्रह के हैं ये सब लक्षण वात-नाड़ीसे सम्बन्ध रखने वाले हैं।

गन्ध पूतना के लक्षण

हिचकी, वमन, खाँसी, ज्वर और अतीसार हो जाते हैं। प्यास बहुत लगती है, बच्चे के शरीर से चर्बी की सी गंध आती है। सोते समय नीचा मुँह करके सोता है, वर्ण बिगड़ जाता है, खट्टी-खट्टी गंध आती है और बच्चा दूध नहीं पीता। ये सब लक्षण गंध पूतना ग्रह के होते हैं। सुश्रुत ने इसे अंध पूतना लिखा है।

शीत पूतना के लक्षण

बच्चा काँपता है, खाँसता है और क्षीण हो जाता है। उसे नेत्र रोग हो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जाता है और बच्चे से दुर्गन्ध आती है। तथा वमन और अतीसार हो जाते हैं। सोते समय पेट की आँतें गुड़गुड़ाती हैं, शरीर से कच्चे रक्त की सी गन्ध आती है। यह शीत पूतना के लक्षण हैं।

मुखमण्डनिका के लक्षण

बच्चे का मुख और रङ्ग प्रसन्न दीखता है, हाथ-पाँव मलिन लगते हैं, शिराएँ फूल जाती हैं और चारों ओर फैली दिखाई देती हैं। बच्चे के शरीर से मूत्र की सी गन्ध आती है, बच्चा भोजन बहुत करता है। यह मुख मण्डनिका ग्रह के लक्षण हैं।

नैगमेय ग्रह के लक्षण

वमन होती है, मुख और कंठ सूखता है, मूर्च्छा आती है, शरीर से दुर्गन्ध आती है, बच्चा ऊपर देखता है, दाँत चबाता है, ज्वर बराबर बना रहता है बालक के मुख से झाग आती है। बीच में से बच्चा नय जाता है, चरबी की सी गन्ध आती है। बेहोशी भी हो जाती है, यह नैगमेय ग्रह का लक्षण है।

ग्रहों के असाध्य लक्षण

आँख शिथिल हो जाय, बच्चा दूध न पीवे, बार-बार बेहोश हो जाय, शरीर अकड़ जाय और ग्रहों के सम्पूर्ण लक्षण प्रगट हों तो ऐसे ग्रह-पीड़ित रोगी को असाध्य समझना चाहिए। इनसे विपरीत लक्षण वाले साध्य होते हैं। ग्रह जुष्ट की चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिए। स्कन्द ग्रह सबसे दुश्चिकित्स्य है। इस ग्रह से बच्चे शीघ्र ही मर जाते हैं।

वृद्ध वाग्भट्ट में १२ ग्रहों के नाम लिखे हैं—स्कन्द, विशाख, मेष, विश्वग्रह पितृ संज्ञक ये ५ पुरुष शरीर धारी हैं। शकुनी, पूतना, शीत पूतना, दृष्टि पूतना, मुख-मण्डनिका, रेवती और शुष्क रेवती ये सात स्त्री शरीर धारी हैं। सूश्रुत ने केवल ९ ही ग्रह माने हैं। मेष और पितृ संज्ञक का समावेश नैगमेय में होता है। विशाखा का स्कन्दापस्मार में। विश्वग्रह का स्कन्द में अन्तर भाव होता है। दृष्टि पूतना का अन्तर भाव पूतना में और शुष्क रेवती का रेवती में अन्तर भाव होता है। इस प्रकार नव ग्रह अन्य सभी आचार्यों ने माना है।

ग्रह चिकित्सा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

इस रोग की विशेष चिकित्सा न लिखकर हम यहाँ सामान्य चिकित्सा ही

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लिखेंगे। ग्रहों की सामान्य चिकित्सा का अर्थ यह है कि यह चिकित्सा प्रायः सभी ग्रहों में की जा सकती है।

माष पर्णी. गोरख मुण्डी और नेत्रवाला का काढ़ा बनाकर उसी काढ़े से बच्चे को स्नान करावे। सप्तपर्ण, कूठ, हल्दी और चन्दन का लेप करे। जहाँ बच्चा सोता हो वहाँ नीचे लिखी औषधियों का धूप दे। जैसे—साँप की केंचुल, लहसुन, मुर्रा, सरसों, नीम की पत्तियाँ, बिल्ली की विष्टा, रोयें, मेढ़ा सिंगी और वच इनमें जितनी औषधियाँ मिलें उनको एकत्र करके मधु में मिलाकर अग्नि में धूप दें।

अष्ट मङ्गल घृत का प्रयोग करने से बच्चे पुष्ट, बुद्धिमान और मेधावी होते हैं तथा उन्हें कोई ग्रह कभी नहीं सताता इसके बनाने की विधि नीचे दी जा रही है—

अष्टमंगल घृत

वच, कूट, ब्राह्मी, पीली सरसों, सारिवा, सेंधा नमक, पीपरि इनको समान भाग लेकर खूब बारीक पानी से पीस कर पीसी हुई लुगदी का चौगुना गाय का घी मिलाकर उसमें घी से चौगुना पानी डाल दे और धीमी आँच पर पकावे। जब पानी जल जाय और घी तैयार हो जाय तब छान ले। इस घी में से ४ आने भर या बच्चे की अवस्थानुसार उचित मात्रा में थोड़े गरम दूध में मिलाकर पिला दे। इस घी की मालिश भी की जा सकती है।

सुश्रुत ने लिखा है कि सामान्यतया बच्चे को स्वच्छ रखना चाहिए। शरीर में घी की मालिश करनी चाहिए। औषधियों से धूप देना चाहिए और परिषेक करना चाहिए।

आयुर्वेद शास्त्र में प्रत्येक ग्रह के लिए विषिष्ट परिषेक, लेप, धूप, बलि, मंत्र इत्यादि का विवेचन किया गया है उन सब का वर्णन विस्तार-भय के कारण यहाँ नहीं किया जा रहा रहा है। दूसरे यह विषय सामान्य माता-पिता के लिए अरुचिकर सा भी होगा।

कौआ लटकना

सरदी लग जाने से अथवा अधिक दिनों तक खाँसी आते रहने से बालकों

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

का कौआ लटक जाता है। उसमें किंचित सूजन भी आ जाती है ऐसी खाँसी तब तक आराम नहीं होती जब तक कौआ अपने स्थान को न प्राप्त कर ले।

चिकित्सा

(१) डाक्टरी दवा खाने में थ्रोट पेंट नामक एक औषधि मिलती है। उसे फुरेरी से कौए पर लगाने से लाभ होता है। मिल्क विद आयोडीन का इन-जेकशन लगाने से लाभ होता है।

(२) फिटकरी का लावा और चूल्हे की जली लाल मिट्टी को बूढ़ी चतुर महिलाएँ चतुराई से कौए पर लगा कर उठा देती हैं। इस प्रकार २-४ दिन करने से कौआ अपने स्थान पर आ जाता है।

(३) दाल चीनी का तेल गले में बाहर लगाने से कौआ उठ जाता है।

(४) जो समझदार बच्चे हों उनको अदरक के गरम पानी से कुल्ले कराने और गला सेंकने से लाभ होता है।

तृष्णा

कभी-कभी ज्वर में और कभी-कभी यों भी प्यास अधिक लगती है। जब ज्वर तेज होता है तभी अकसर गला सूखता है और प्यास लगती है। बच्चा यदि बड़ा होगा तो पानी माँगेगा यदि ज्वर की बेहोशी होगी तो मुँह खोलेगा और संकेत करेगा यदि बच्चा छोटा होगा और बोलना न जानता होगा तो मुँह खोलेगा और जीभ से ओठ चाटेगा। इन लक्षणों से प्यास का अनुमान करके थोड़ा-थोड़ा गरम करके ठंडा किया हुआ जल देते रहना चाहिए।

चिकित्सा

(१) यदि प्यास बहुत तेज हो तो पीपल की खोट्टी ला कर जला कर अंगार बनाले और १ ग्लास जल में ३-४ अंगार डाल कर बुझा ले फिर इस पानी को छान कर १-१ चम्मच बार-बार चटाने से प्यास शान्त हो जाती है और वमन होती हो तो वह भी शान्त हो जाती है।

(२) सोने को तपा कर उसे पानी में बुझा ले और वही पानी १-१ चम्मच देता रहे इससे प्यास शान्त हो जाती है।

(३) आमला, कमल के फूल, कूट, धान का लावा और बरोह इनको सम भाग लेकर शहद में मिला कर गोली बना ले। यह गोली मुखमें रखने से प्यास

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शान्त होती है और मुख सूखना रुकता है, अनुभूत योग है।

चट्टे

कान के आस-पास सफाई न करने से उसी के पास घाव सा हो जाता है और फैलने लगता है उसमें खुजली भी होती है। उससे जो मवाद निकलती है उसमें यह असर होता है कि जिस स्थान पर लग जाती है वही स्थान है पक जाता है। ऐसे ही चट्टे किसी-किसी बच्चे के सिर में भी निकलते हैं। उसमें भी खुजली होती है और घाव फैलता जाता है। सिर की ऐसी फुन्सी को अरुंसी कहते हैं।

चिकित्सा

घाव को खूब साफ कीजिए और सुखा कर उस पर त्रिफलादि तैल लगाइए। कासीसादि मलहम लगाने से भी लाभ होता है

कपूर ६ माशे, सफेदा २ तोला दोनों को खूब मिला लें और १०० बार धोये घी में फेंट कर मलहम बना लें। यह मलहम लगाने से घाव आराम होते हैं।

कत्था १ तोला, मुरदा संग १ तोला, जली सुपारी का कोयला १ तोला। सब को कूट-पीस कर मिला लें। यह चूर्ण वैसे ही बुरकने से भी लाभ होता है। इसे नारियल के तेल में फेंट कर भी लगा सकते हैं।

कबीला १ तोला, मुरदा संग १ तोला, सफेद राल १ तोला, कत्था १ तोला। कूट पीस कर सब को मिला कर घाव पर बुरकने से लाभ होता है।

त्रिफलादि तैल

हड़, बहेड़ा, आँवला, नीम की छाल, चिरायता, हल्दी, दारु हल्दी और लाल चन्दन इन आठों औषधियों को १-१ तोला लेकर सिल पर महीन पीस डाले। उबटन की तरह। इसी को कल्क कहते हैं। जितना यह कल्क हो उसका चौगुना तिल का तेल डाल दे। और तेल का चौगुना पानी डाल कर धीमी आँच पर तेल पकावे। जब सब पानी जल जाय और तेल तैयार हो जाय तब उतार कर छान कर शीशी में रख ले। सिर की फुंसियों और चट्टे आदि पर लगाने से जल्द लाभ होता है।

कान की खूँट

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida
कान में स्थित ग्रन्थियाँ एक प्रकार का चिकना पदार्थ बनाती रहती हैं

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जिससे कि कान की दीवालें और परदे तर रहें। यह चिकनाई सूख कर या कान में गर्द गुबार जाने से खूंट बन जाती है। कान की ठीक से सफाई न करने से भी खूंट बनती है।

कान में तिल का तेल या सरसों का तेल डालते रहने से खूंट मुलायम हो जाती है और खूंट निकालने वाली सलाई से आसानी से निकल जाती है। यदि खूंट अधिक सख्त हो गई हो तो कान में भाप देने से मुलायम हो जाती है।

कान को पिचकारी से नहीं साफ करना चाहिए यदि जोर से पिचकारी लग जाय तो बच्चों के कान का कोमल परदा फट जाने का डर रहता है। यदि पिचकारी लगा कर खूंट साफ करना या कान धोना अत्यन्त आवश्यक हो तो आहिस्ते से दवा कर पानी जाने देना चाहिए।

बबूने का तेल कान में डालने से भी लाभ होता है।

बबूने की पत्ती २ तोला और मूली की पत्ती का रस आध सेर, तिल का तेल एक पाव। सब को एक साथ पका कर तेल मात्र रहने पर तेल छान ले। इस तेल की २-४ बूंद कान में डालने से कान बहने का रोग आराम होता है।

कर्णशूल

अनेक कारणों से कान में पीड़ा हो सकती है। कान में पानी चले जाने से कान में दर्द हो सकता है, कान में फुड़िया-फुन्सी निकलने से, अधिक गर्म चीजों के प्रयोग से अथवा धूप में अधिक घूमने-फिरने से या कफ बढ़ाने वाले आहार-विहार के सेवन करने से कान में दर्द या शूल होने लगता है। कान में यदि खूंट पड़ गई हो या कोई कीड़ा मकोड़ा पड़ गया हो तो भी दर्द होता है।

चिकित्सा

कारण का पता लगा कर कारण दूर करना चाहिए। यदि कान में कोई कीड़ा मकोड़ा पड़ा हो तो उसे निकालिए। यदि पानी कान में पड़ गया हो तो उसे रुई की वत्ती या कपड़े की वत्ती से सुखाइए। फुड़िया फुंसी हो तो उसका इलाज कीजिए।

(१) जरा सा अफीम घोल कर गरम करके कान में डालने से कान की पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२) शहद जरा सा गरम करके कान में डालने से कान का दर्द कम हो जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(३) कड़वा तेल, अदरक का रस और शहद तीनों एक में मिला कर जरा गरम करके कान में डालने से दर्द आराम होता है।

(४) खाने वाली तम्बाकू विना चूना के ही जरा सा पानी में भिगो दे और उसे गरम करके कान में टपकाने से और कुछ देर उसे कान में रोके रहने से कान के दर्द में आराम मिलता है।

(५) सुदर्शन की पत्ती का रस जरा सा गरम करके कान में डालने से कान का दर्द आराम होता है।

(६) मदार के पीले पत्ते में जरा सा घी लगाकर आग पर सेंके और पत्ती से गरम-गरम रस निचोड़ ले। यह गरम-गरम रस कान में डालने से कान का दर्द बन्द होता है।

(७) मोतिया का इत्र कान में २-४ बूंद डालना चाहिए कान की जड़ और गाल कान समेत सेंकना चाहिए। कान में रुई लगा लेनी चाहिए जिससे ठंडी हवा न जाय।

कान के ऊपर रुई की पहल रखकर बाँध देनी चाहिए जिसमें शीत और हवा से वचत होती रहे।

कान बहना

ठंडक लगने से, खुले में सिर उघाड़ कर सोने से, कान में ठंडी हवा लग जाने से, अजीर्ण से, कान को जोर से खींच लेने से या जोर से थप्पड़ मार देने से इन कारणों से कान वहने लगता है।

चिकित्सा

कान को अच्छी तरह साफ रखना आवश्यक है। हाइड्रोजन पर आक्साइड नामक दवा कान में डालने से गाज की तरह फेन निकलता है और मवाद साफ हो जाता है।

२ तोला नीम की पत्ती का काढ़ा बनाकर उससे कान धोने से भी कान साफ हो जाता है। नीम की पत्ती का काढ़ा बनाते समय वर्तन का मुख ढका रखा जाय और उस वर्तन की भाप कान के अन्दर पहुँचाई जाय तो मवाद जल्द सूखता है और कान साफ भी हो जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(१) गाय का घी १५ ग्राम, रस कपूर ५ ग्राम, वोरिक एसिड ५ ग्राम, सेंदुर ५ ग्राम, सब को वारिक पीस कर एक में मिलाकर शीशी में भर कर रख ले। कान धोकर साफ करके ३-४ बूंद कान में डालने से कान बहना बंद होता है। कान वहने का बहुत पुराना रोग भी इससे आराम होते देखा गया है। जाड़े के दिनों में यदि घी जम जाय और कान में टपकाने लायक न हो तो उसे जरा सा गरम करके कान में डालना चाहिए।

जब कान से मवाद आना वन्द हो जाय तो रोगन बाबूना कान में डालना चाहिए। इसके प्रयोग से कान के परदे सुदृढ़ हो जाते हैं।

वोरोग्लीसरीन की ३-४ बूंद कान में टपकाने से कान वहने का रोग आराम होता है। और खूंट भी मुलायम पड़ जाती है।

कौड़ी की भस्म शहद में मिला कर कान में डालने से कान बहना वन्द होता है।

कान में गो मूत्र डालने से कान का वहना आराम होता है।

हमारा सार्वभौम तेल कान में डालने से कान वहने का रोग आराम होता है।

पथ्यापथ्य

ठडक से वचना चाहिए। सिर को ढक कर रखे। खटाई बिलकुल नहीं खाना चाहिए। ठंडे जल से स्नान भी बन्द कर देना चाहिए।

कान में फुड़िया फुंसी

कान में फुंसी होने से कान में दर्द होता है; कान छूने में भी दर्द करता है। सूरज की ओर कान करके देखने से फुंसी साफ दिखाई दे जाती है। टार्च की रोशनी पहुँचाने से कान के अन्दर की फुंसी दिखाई पड़ जाती है।

ऐसे कान के दर्द में कोई दवा जल्दी काम नहीं करती। जब फुड़िया फूट कर बह जाती है तभी आराम मिलता है।

(१) प्याज का रस गरम करके कान में डालने से फुड़िया जल्दी फूट जाती है। इसे कई बार डाल देना चाहिए।

(२) तुलसी की पत्ती का रस गरम करके कान में डालने से भी कान की फुड़िया फूट जाती है और कान का दर्द भी आराम हो जाता है।

Acc. Vinit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

फुड़िया फूट जाने पर कान में शहद डालना चाहिए। नीम के पानी की भाप देनी चाहिए।

कान के बाहर घाव

यदि कान के बहने से पीप बाहर लगने के कारण बाहर घाव हो जाय, फुन्सियाँ हो जायँ या चकत्ते से पड़ने लगें तो उस मवाद और घाव को गरम पानी में बोरिक एसिड डाल कर उसी पानी से धोयें। यदि कहीं बोरिक एसिड न मिले तो फिटकरी के पानी से धोयें। अच्छी तरह घाव साफ करके रुई से सुखा दें फिर नारियल के तेल में फिटकरी का लावा मिला कर घाव पर लगावें जल्द सूखेगा।

उस घाव पर केवल बोरिक एसिड बुरक देने से भी घाव सूख जायगा।

सुपारी जलाकर कोयला बनाकर पीस कर घी में या वेसलीन में मिलाकर घाव पर लगाने से घाव सूख जायगा।

खाज

खाज दो प्रकार की होती है। एक में केवल सूखी खाज होती है। धूप में देह में चुनचुनी होने लगती है।

दूसरे प्रकार की खुजली वह होती है जिसमें दाने निकलते हैं और इसमें मवाद पड़ जाता है। एक ऐसी भी खाज होती है जिसमें फफोले निकलते हैं दोनों प्रकार की खुजली गीली या तर खुजली कहलाती है।

खुजली के लिए शुद्ध गंधक बढ़िया औषधि है। छोटे बच्चे को भी आधी रत्ती की मात्रा में खिलाना चाहिए। बड़ों को २ रत्ती की मात्रा में खिलाया जा सकता है। यदि बच्चा बहुत छोटा हो और उसे गंधक खिलाना उचित न हो तो दूध पिलाने वाली माता को २ रत्ती की मात्रा में गंधक खिलाना चाहिए। गंधक में सम भाग मिश्री या चीनी मिला लेना चाहिए और घी में मिला कर चटा देना चाहिए।

नीम वाले साबुन से सब कपड़े साफ कर देने चाहिए और नीम के अच्छे साबुन से स्नान भी करना चाहिए।

कासीसादि घृत लगाने से भी खुजली नष्ट हो जाती है।

Arya Vidhi Bhandar Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अँधौरी

अँधौरी गरमी के दिनों में अकसर निकल आती है, अधिक गरमी के कारण या गरम चीजों के खाने से यह निकलती है। गरमी में मोटा कपड़ा पहनने से या गरम जगह में रहने से यह निकल आती है। कुछ अँधौरी लाल रंग की होती है कुछ सफेद रंग की। इनमें खुजली बहुत होती है। खुजला देने से पनछा सा बहता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि खुजला देने से ये बड़ी हो जाती हैं। पुरानी हो जाने पर ये गुच्छे की गुच्छा निकलती हैं और पहली के सूख जाने पर उसी स्थान पर नई निकल आती हैं।

चिकित्सा

(१) ईख का सिरका १ तोला १० तोले जल में डाल कर बरफ से ठंडा करके कपड़े से लगाने से अँधौरी आराम होती है।

(२) धनिया, खस और लाल चन्दन समान भाग लेकर महीन चूर्ण बनाले, इस चूर्ण को गुलाब जल में या सौंफ के अर्क में मिला कर अँधौरी पर लेप करने से लाभ होता है।

(३) मुलतानी मिट्टी पीस कर जल से फेंट कर लेप करने से अँधौरी में लाभ होता है।

(४) एक चाय का चम्मच भर के खाने वाला सोडा लेकर २॥ सेर जल से मिला दे। इसी जल से स्नान कराने से अँधौरी में आराम मिलता है।

(५) महा लाक्षादि तैल या चन्दनादि तैल की मालिश करने से अँधौरी में लाभ होता है।

सफेदा (जस्ते का फूल) पतले कपड़े में बाँध कर रखिए। अँधौरी पर वही पोटली ही धीरे-धीरे फटक दिया करें जिसमें सफेदा पाउडर की तरह लग जाय। इस उपाय से दाने नहीं निकलते और निकले हुए दाने आराम हो जाएँ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अध्याय १०

बच्चों के चन्द रोगों की औषधियाँ

१—पेट में दर्द हो तो फिटकिरी, सुहागा, एलुआ और हल्दी इनको गोमूत्र में पीसकर गरम-गरम लेप पेडू पर करना चाहिए।

२—बालकों को दस्त कराने की आवश्यकता हो तो थोड़े से गुलाब के फूल पीसकर उसमें थोड़ी चीनी मिलाकर थोड़े पानी में घोलकर पिला देना चाहिए।

३—यदि बालक तुतलाता हो तो छोटी ब्राह्मी के पत्ते रोज खिलाना चाहिए। इससे जीभ नर्म और पतली हो जाती है और तुतलाने का रोग मिट जाता है।

४—रतौंधी में प्याज का रस आँख में आँजना चाहिए। प्याज का रस और गुड़ खिलाने से बच्चे जल्दी बढते हैं।

५—बालक के पेट में यदि मिट्टी हो तो खूब पके केले में शहद मिलाकर खिलाने से निकल जाती है।

६—अगर बालक को लू लग गई हो या आग की लपक लग गई हो तो १ प्याज कच्ची और एक प्याज आग में भुनी हुई खूब बारीक पीसकर छान ले और उसमें १ माशे जीरा और अन्दाज की मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिए। प्याज की एक गाँठ बच्चे के पास रखने से उसे लू नहीं लगती।

७—बालक के कान में कोई कीड़ा पड़ गया हो तो कान में सरसों का तेल डालना चाहिए।

८—यदि बच्चे के सिर में जूँ पड़ गये हों तो निबकौड़ी पीसकर सिर में लगाना चाहिए या नीम का तेल लगाना चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

९—घी में नमक मिलाकर नाभि पर रोज दो-तीन बार लगाने से ओठ फटना बन्द हो जाता है।

१०—नागरमोथा, बड़ी हरड़, नीम के सींके, परवल की पत्ती और मुलहठी प्रत्येक औषधि चार-चार रत्ती लेकर एक छटांक पानी में काढ़ा बनाकर उसमें माँ का दूध और मिश्री मिलाकर जरा कुन-कुन पिलावे इससे सब प्रकार का ज्वर उतर जाता है।

११—मुर्रा, हल्दी, सरसों पीली, हींग, मजीठ, नागरमोथा, मँगरैल इन सबको बकरी के दूध में पीसकर उवटन लगाने से बच्चों का ज्वर छूट जाता है।

१२—गूगुल, वच, कूट, जटामासी, धूप, नीम की पत्ती, हाथी का चमड़ा और भेड़ का चमड़ा (यदि मिल सके तो) सबका धूप देने से घर की हवा स्वच्छ हो जाती है और बच्चों का ज्वर उतर जाता है। यदि हाथी और भेड़ का चमड़ा न मिल सके तो शेष औषधियों का ही प्रयोग करना चाहिए।

१३—नागरमोथा, छोटी पीपरि, अतीस और काकड़ासिंगी इन सबको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर डाले इसमें मिश्री और माँ का दूध मिलाकर बच्चे को दिन में चार बार दें। इससे ज्वर, अतीसार, खाँसी, श्वास, वमन आदि सब रोग दूर होते हैं।

१४—मजीठ, धाय के फूल, लोध और अनन्तमूल इनका काढ़ा बनाकर ठंडा करके उसमें शहद मिलाकर पिलाने से बच्चों का सब तरह का अतीसार दूर होता है।

१५—बायबिडंग, अजमोदा और छोटी पीपरि के भीतर के बीज इन सबको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर डाले। इस औषधि को उचित मात्रा में गरम जल के साथ बच्चे को पिलावे। इससे आँव के दस्त दूर होते हैं।

१६—धान का लावा, मुलहठी का चूर्ण, मिश्री और शहद मिलाकर चावल के धोवन के साथ देने से मरोड़ के दस्त और खून गिरना बन्द होता है।

१७—पुष्कर मूल, अतीस, काकड़ासिंगी, पीपर और जवासा का चूर्ण करके शहद के साथ चटाने से बच्चों की खाँसी दूर होती है।

१८—मुनक्का, अडूसे की पत्ती, हर्रा और पीपरि का चूर्ण बनाकर शहद के साथ चटाने से बच्चों की श्वास-खाँसी दूर होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१९—कुटकी का चूर्ण शहद के साथ चटाने से बच्चों की हिचकी और वमन दूर हो जाते हैं।

२०—रेंडी के बीज और चूहे की मेंगनी नीबू के रस में पीसकर बच्चे की नाभि या गुदा पर लेप करने से दस्त हो जाते हैं।

२१—गेहूँ और जव के चूर्ण को अलग-अलग भून ले। फिर उसमें विदारी कंद का चूर्ण मिलाकर सबके बराबर मिश्री मिलादे। इस चूर्ण को घी के साथ खिलाने से बच्चों की दुर्बलता दूर होती है।

२२—घर का धुँआ, हल्दी, कूट, राई और इन्द्रजव को समान भाग लेकर मठे में पीसकर लेप कर देना चाहिए, इससे बच्चों के सिहुआँ और खुजली आदि रोग दूर हो जाते हैं। यह याद रखना चाहिए कि इस औषधि में कूट और राई ये दो चीजें गरम और लगने वाली हैं। इस कारण कोमल अंगों पर इनका लेप न करना चाहिए। यदि इन्हीं औषधियों से तेल पका लिया जाय तो विशेष अच्छा है। यह तेल इतना गर्म नहीं होता और न तो अधिक लगता ही है।

२३—काली तिल और दूध एक में पीसकर कई बार लेप करने से आग से जलने की जलन दूर हो जाती है और फफोले भी नहीं उठते।

२४—चूने का पानी और अलसी का तेल एक में फेंटकर मवाद देनेवाली खुजली पर लेप करने से आराम हो जाती है। इसी मलहम से आग से जला घाव भी आराम होता है।

२५—चिरचिरे (लटजीरा) की जड़ पीसकर उसमें शहद मिलाकर लेप करने से कुत्ते का जहर उतर जाता है।

२६—फोड़े-फुन्सी पर नीम की छाल पीसकर लगाने से लाभ होता है।

२७—सफेद कत्था बारीक पीसकर उसका आधा कपूर उसमें मिला दीजिए। इसमें घी मिलाकर घाव पर लगाने से घाव जल्द भरता है।

२८—यदि कान बहता हो तो कान में तिल का तेल डालकर उसमें समुद्रफेन का चूर्ण डालना चाहिए और रूई से या भाप से कान धोना चाहिए। कान में दर्द हो तो शहद गरम करके डालना चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अमृतवर्षा चिकित्सा

राष्ट्रीय स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को हल करने के लिए और अपने देश-वासियों की औसत जिन्दगी बढ़ाने तथा उन्हें पूर्ण स्वस्थ बनाने के सदुद्देश्य से प्रेरित होकर हमारी रसायन-शाला ने पहला कदम उठाया जो सब के लिए अनुकरणीय है। चिकित्सा-शास्त्र के पूर्ण पण्डित और अनुभवी तथा विद्वान वैद्य पं० महेन्द्र नाथ पाण्डेय, साहित्य महोपाध्याय (आयुर्वेद) द्वारा स्वास्थ्य सम्बन्धी भारत विख्यात पुस्तकें लिखवाकर और उनको प्रकाशित कराकर यह रसायन-शाला गत ४० वर्षों से देश-वासियों की सेवा में संलग्न है। अपने यहां से स्वास्थ्य सम्बन्धी दो दर्जन से ऊपर पुस्तकें प्रकाशित करने वाली संस्था केवल हमारी रसायन-शाला ही है।

साहित्य महोपाध्याय (आयुर्वेद) कविराज महेन्द्र नाथ पाण्डेय से परामर्श लेकर अपने को स्वस्थ और नीरोग बनावें।

महेन्द्रनाथ पाण्डेय द्वारा लिखित पुस्तकें

अपूर्व चिकित्सा विधान	७ ५०	पाचन प्रणाली के रोग	२.७५
ग्रन्थि और ग्रन्थिप्रणाली के रोग	१ २५	हमारा भोजन	
जीवन तत्व	१ ५०	फलाहार चिकित्सा	२.५०
दूध चिकित्सा		स्वास्थ्य के लिए शाक तरकारियाँ	२ ००
आँख का अचूक इलाज	५.००	जुकाम	२.००
तपेदिक		बच्चों के रोग और उनका इलाज	५.००
कब्ज और मलावरोध	१.८०	भोजन ही अमृत है	
शहद के गुण और उपयोग	०.७५	मठा	१.००
हमारे बच्चे	२.००	मधुमेह निदान और उपचार	२.००
रोगी सुश्रूषा सरकार से पुरस्कृत	४.००	धातु रोग और उनका इलाज	२.५०
ज्वर चिकित्सा	३.५०	नीरोग कैसे रहेंगे ?	

महिलाओं के रोग, निदान और उपचार ४.५०

मँगाने का पता :—

महेन्द्र रसायनशाला

२१ नया ममफोर्डगंज, इलाहाबाद-२

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida